

* काव्यशास्त्रीय आचार्यों का परिचय *

1. प्रारम्भिक रूपकार
भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त
2. परवर्ती रूपकार
हर्षवर्धन, भट्टनारायण, भवभूति
3. विकास काल के महाकाव्यकार
कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ
4. अपवर्ष काल के महाकाव्यकार
श्रीहर्ष
5. ऐतिहासिक काव्यकार
विह्वल
6. गद्यकार
बाणभट्ट, दण्डी
7. आधुनिक काव्यकार
अम्बिकादत्त व्यास, क्षमाशिव, वर्णेकर, राघव
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्रकार
अरस्तु, प्रोजे, लोज्जाइनस

* भास *

समय - 300 - 200 ई.पू.

* भास की कुल 13 रचनाएँ हैं। जिनको चार भागों में विभाजित किया गया है।

1. ઉદયનકથામૂલક - પ્રતિભાયોગ-ધારાણ, સ્વપ્નવાસવદત્ત
2. રામાયણમૂલક - પ્રતિમાનાટક, અભિષેકનાટક
3. મહાભારતમૂલક - ઝરુભંગ, દૂતવાક્ય, પંચરાત્ર, દ્વંતઘટોત્કચ, કુર્ણભાર, મધ્યમલ્યાયોગ તથા બાલચરિત ।
4. લોકકથામૂલક - અવિમારક તથા ચારુદત્ત

ક્ર.	રૂપક નામ	અંક	રૂપક કોટિ
1.	પ્રતિભાયોગ-ધારાણ	4	નાટક
2.	સ્વપ્નવાસવદત્ત	6	નાટક
3.	ઝરુભંગ	1	અંક
4.	કુર્ણભાર	1	અંક
5.	દ્વંતઘટોત્કચ	1	અંક
6.	મધ્યમલ્યાયોગ	1	લ્યાયોગ
7.	પંચરાત્ર	3	સમવકાર
8.	ચારુદત્ત	4	પ્રકરણ
9.	બાલચરિત	5	નાટક
10.	અવિમારક	6	નાટક / પ્રકરણ
11.	અભિષેકનાટક	6	નાટક
12.	પ્રતિમાનાટક	7	નાટક

उपाधि - कविताकामिनी हास, भासो हासः, अग्निमित्र
(वल्गु मित्र)

रीति - वेदभी

* अश्वघोष *

समय - प्रथम शताब्दी

रचनाएँ चार - महाकाव्य - बुद्धचरित (18 सर्ग), सोन्दरन्द (18 सर्ग)

रूपक - शारिपुत्रप्रकरण (9 अंक), राष्ट्रपालनाटक

उपाधि - आर्यभट्ट, बौद्धभिक्षु, महाकवि

रीति - वेदभी

* कालिदास *

समय - ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी

रचनाएँ सात हैं -

महाकाव्य

(i) रघुवंशम् (19 सर्ग)

(ii) कुमारसंभवम् (17 सर्ग)

खण्डकाव्य

(i) ऋतुसंहारम् (6 सर्ग)

(ii) मेघदूतम् (पूर्वमेघ, उत्तरमेघ)

रूपक

(i) अभिलानशाकुन्तलम् - नाटक - 7 अंक

(ii) विक्रमोर्वशीयम् - नाटक (अपसर) - 5 अंक

(iii) मालविकाग्निमित्रम् - ऐति. नाटक - 5 अंक

उपाधि - दीपशिखा, कविकुलगुरु, उपमा सम्राट, रघुनारायण

रीति - वेदभी, गौड़ी

प्रिय अलंकार - उपमा

* शूद्रक *

समय - 200-300 ईस्वी.
रचना - मृच्छकटिक - प्रकरण - 10 अंक
निवास स्थान - दक्षिण भारत
शैली - वेदभी

* विशाखादत्त *

समय - 600 ईस्वी
पिता - महाराज पृथु
पितामह - वटेश्वरदत्त
रचना - मुद्राराक्षस - नाटक - 7 अंक
विशेषता - इस नाटक में नायिका तथा विदूषक का अभाव है। एवं राक्षस की गहजुनीति एवं कोटिल्य की शाठ्यनीति का वर्णन है।
शैली - वेदभी

* भारवि *

समय - 550 ई० - 620 ईस्वी
उपाधि/अन्यनाम - आतपत्र, दामोदर
निवास - अचलपुर (धारीनगरी) दक्षिण भारत
कृति - "विराटार्जुनीयम्" महाकाव्य - 18 सर्ग
शैली - अलंकृत काव्यशैली के जन्मदाता
अलंकार - अर्थालंकार
रस - वीर, शृंगार
छन्द - पंशरथ, उपजाति

* माघ *

- समय - 650 - 700 ईस्वी
कृति - "शिशुपालवध" - महाकाव्य - 20 सर्ग
स्रोत - महाभारत (सभापर्व) के अतिरिक्त "भागवत पुराण" के दशम स्कन्ध में भी समान कथा है।
निवास - भिन्नमाल (राजस्थान)
उपाधि - दण्डाभाष्य
रस - वीर
गुण - माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

* श्रीहर्ष *

- समय - 1150 - 1200 ईस्वी
स्थान - फर्नोज
कृति - भेषधीयचरितम् - महाकाव्य - 22 सर्ग
प्रिय छन्द - उपजाति
अलंकार - उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास
रीति - वेदभी, गोड़ी

* विष्णु *

- समय - 1085 ईस्वी
निवास - कश्मीर
उपाधि - विद्यापति
कृतियाँ -
[विक्रमाङ्कदेवचरितम् - ऐतिहासिक महाकाव्य - 18 सर्ग
[कर्णसुन्दरी - नाटिका -
[चौरपञ्चाशिका - गीतिकाव्य - 50 पद्य (विस्तार)

* भवभूति *

समय - 680 - 750 ईस्वी
 निवास - पद्मापुर (विदर्भ - प्रदेश - महाराष्ट्र)
 उपाधि - श्रीकण्ठ, पद्मावयप्रमाणज्ञ, श्रीकण्ठपद-
 लाब्धनः, उम्बिक, उद्यम्बर, पक्ष्यवाक्, शिखरिणी,
 कवि, परिणतप्रज्ञ
 कृतियाँ -
 { मालतीमाधवम् - प्रकरण - 10 अंक
 महावीरचरितम् - नाटक - 7 अंक
 उत्तररामचरितम् - नाटक - 7 अंक
 प्रिय रस - करुण
 रीति - वैदर्भी, जोड़ी
 प्रिय छन्द - शिखरिणी, अनुष्टुप्

* भट्टनारायण *

समय - 7 वीं शताब्दी
 निवास - कुन्नोज (कान्यकुब्ज)
 उपाधि - मृगराजलक्ष्मा, कविभृगेन्द्र, मृगराज उम्बि
 कृति - वेणीसंहार - नाटक - 6 अंक
 प्रिय अलंकार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
 रीति - वैदर्भी

* हर्षवर्धन *

समय - 606 - 648 ईस्वी
 पिता - प्रभाकरवर्धन - (बाण → हूण - हरिण - केसरी)
 निवास - शानिश्कर (हरियाणा)

उपाधि - राजा, कविन्द्र
 कृतियाँ -
 - प्रियदर्शिका - नाटिका - 4 अंक
 - रत्नावली - नाटिका - 4 अंक
 - नागानन्द - नाटक - 5 अंक

* "दण्डी" *

समय - 675 - 725 ईस्वी
 निवास - दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
 उपाधि - "दण्डिनः पदलालित्यम्"
 कृतियाँ -
 - काव्यादर्श - काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ - 3 परिच्छेद
 - दशकुमारचरित - कथा एवं आख्यायिका
 ग्रन्थ के तीन भाग (i) पूर्वपीठिका (पाँच उच्छ्वास)
 (ii) दशकुमारचरित (आठ उच्छ्वास)
 (iii) उपसंहार
 - अर्वाक्षसुन्दरीकथा - कथा - दश. पूर्वपीठिका
 शैली - वेदभी

* वाणभट्ट *

समय - 630 - 640 ईस्वी
 निवास - प्रीति कूट
 उपाधि - पंचाननः, कविकानन, केसरी, गहासम्राट्,
 पश्यवाणीचक्रवर्ती, कविताकामिनीचोतुक्, तुरङ्गबाण,
 महानय - भुजङ्ग, कविनमिह चक्रवर्ती
 कृतियाँ -
 - हर्षचरित - आख्यायिका - आठ उच्छ्वास
 - कादम्बरी - कथा - पूर्वभाग, उत्तरभाग
 - चण्डीशतक - गीतिकाव्य -

अलंकार - विरोधाभास , श्लेष
रीति - पाञ्चाली

* आम्बिकादत्तव्यास *

समय - 1858 - 1900 ईस्वी
निवास - जयपुर (राजस्थान)
उपाधि - दार्ष्टिकशास्त्र , शतावधान , भारतरत्न,
सुकुवि , अभिनवबाण
कृति - शिवराजविजय - उपन्यास / आख्यायिका
• तीन विराम एवं प्रत्येक में चार-चार
निःश्वास
रीति - वेदभी एवं गोड़ी

काव्यशास्त्रियों का परिचय

1. आचार्य भरत -

- समय - ३०० ई. पू.
ग्रन्थ - नाट्यशास्त्र (न हि रसादिते कश्चिदर्थः प्रवर्तते)
ग्रन्थ विभाजन - अध्यायेषु , ३६ अध्याय , ६००० श्लोक
टीका - अभिनवभारती
प्रवर्तक - रस सम्प्रदाय
अलंकार - ५ अलंकार (उपमा , रूपक , दीपक , यमक)
रस - ८ रस

2. आचार्य भामह -

- समय - ६५० ई. लगभग
ग्रन्थ - काव्यालंकार (शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्)
ग्रन्थ विभाजन - परिच्छेदेषु , ६ परिच्छेद
प्रवर्तक - अलंकार सम्प्रदाय
अलंकार - ३४

3. वामन -

- समय - ८ वीं या ९ वीं शताब्दी
ग्रन्थ - काव्यालंकारसूत्र (काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्)
ग्रन्थ विभाजन - ५ अधिकरण एवं १२ अध्याय
रीति - वैदर्भी , पाञ्चाली , गौड़ी
गुण - २० गुण
प्रवर्तक - रीति सम्प्रदाय (रीतिरात्मा काव्यस्य)

5. आचार्य कुन्तक -

समय - 10 वीं शताब्दी

ग्रन्थ - वक्रोक्तिजीवितम्

काव्य लक्षण -

शब्दार्थो सहितो वक्रकवित्यापारशालिनि ।

वन्धो व्यावस्थितो काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी ॥

ग्रन्थ विभाजन - उन्मेष , 4 उन्मेष

प्रवर्तक - वक्रोक्ति सम्प्रदाय

अंकार - 20 अंकार

4. आनन्दवर्धन -

समय - 9वीं शताब्दी

ग्रन्थ - ध्वन्यालोक (काव्यस्यात्मा - ध्वनिः)

काव्य लक्षण -

सहस्यहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्

ग्रन्थ विभाजन - उद्योत , 4 उद्योत

टीका - लोचन + अभिनवगुप्त

भाग - करिका , धृति , उदाहरण

6. क्षेमेन्द्र -

समय - 11 वीं शताब्दी

ग्रन्थ - औचित्यविचारचर्चा

काव्यलक्षण -

काव्यं विशिष्टशब्दार्थसाहित्यसदलङ्कृतिः ।

प्रवर्तक - औचित्य सम्प्रदाय

पिता - प्रकाशेन्द्र

अन्य ग्रन्थ - भारतमञ्जरी, बृहत्कथामञ्जरी,

शिष्य - कविकुठाभरण
अभिनवगुप्त

1. राजशेखर -

समय - 10 वीं शताब्दी

वंश - यायावरीयः

स्थान - विदर्भवासी

ग्रन्थ - बालरामायण - (रामायण पर)

बालभारत - (महाभारत पर)

कर्पूरमञ्जरी - (प्राकृतभाषिक ग्रन्थ)

काव्यमीमांसा - (18 अध्याय)

'गुणवदलङ्कृतं च वाक्यमेव काव्यम् ॥'

8. धनञ्जय -

समय - 10 वीं शताब्दी

ग्रन्थ - दशरूपक (नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित)

↳ 300 कारिका, 4 प्रकाश

पिता - विष्णु

टीका - अवलोक - (धनिक)

3. गोहराज -

समय - 11 वीं शताब्दी

ग्रन्थ - सरस्वतीकृष्णभरण (5 परिच्छेद)

शृङ्गारप्रकाश (36 प्रकाश)

अलंकार - 24 अलंकार

लक्षण → निर्दिष्ट गुणवत्काव्यलङ्कारैरलङ्कृतम् ।

रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिञ्च विन्दति ॥

10. मम्मट -

समय - 11वीं शताब्दी ई.

ग्रन्थ - काव्यप्रकाश

ग्रन्थ विभाजन - 10 उल्लास , 142 कारिकाएँ

काव्यलक्षण -

तद्दोषो शब्दार्थो सगुणावनलङ्घनी पुनः क्वापि ।

अलंकार - 67 (6 शब्द + 61 अर्थ)

रस - 9 (शान्त)

11. विश्वनाथ -

समय - 14 वीं शताब्दी

ग्रन्थ - साहित्यदर्पण

ग्रन्थ विभाजन - परिच्छेद . 10 परिच्छेद , 760 कारिकाएँ

काव्यलक्षण -

वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।

अन्य ग्रन्थ - प्रभावतीपरिणय , कुवलययाश्वचरित , राघव-
विलास ।

[2] पाश्चात्य-काव्यशास्त्र :- अरस्तू, लाघाइनस, कौयै

[1] अरस्तू

- जन्म → 384 ईसापूर्व
- मृत्यु → 322 ईसापूर्व
- सुनानी दार्शनिक थे।
- वे प्लेटो के शिष्य तथा सिक्रदस के गुरु थे।
- जन्म → स्टेगेरिया नामक ग्राम में हुआ था।

[सिद्धान्त → अनुकरण का सिद्धान्त]

→ अरस्तू का राजनीतिक पद सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ → 'पोलिटिक्स'

संस्था → द लाघाइनस

पिता → नेकीमेंस

पुत्र → नेकीमेंस

पत्नी → (1) पिथियास (2) हिलिस

→ रुचेंस में अकादमी की स्थापना।

ग्रन्थ → 44

रचना →

प्रसिद्ध ग्रन्थ → पैरिपोइसटिक्स

English → On Poetics

→ पौलिटिक्स

→ निकीमर्चे रथिक्स

→ यूदेमिथन रथिक्स

→ रेटोरीक

→ ट्रिस्टी ऑफ रनिमल्स

→ पार्दर्श " "

→ मूवमेंट " "

→ प्रीग्रेशन " "

→ जनरेशन " "

→ सेंस रंड सेंसिबिलिया

→ ऑनमेमोरी

→ ऑन स्लीप

→ ऑन ड्रीम्स

→ पौरटिक्स

→ मेटाफिबिक्स

→ प्रोब्लैम्स

→ ऑन दिविनैशन इन स्लीप

→ ऑन लैनथ रंड शोर्ट नैस ऑफ लाइफ

→ ऑन यूथ, स्पील्ड रेंज, लाइफ रंड डेथ रंड सेंसिबिलिशन

→ फिबिक्स

→ ऑन दि हेवमैस

→ ऑन जेनरेशन रंड कउप्शन

→ मेटेरोलीजी

→ ऑन दी यूनिवर्स

→ ऑन दी सोल

काव्य के तीन रूप →
→ प्रतीयमान रूप
→ संभाव्य रूप
→ उपादर्श रूप

[२.] → लॉन्ग इन्स →

प्लन्स → लगभग प्रथम शताब्दी से तृतीय शताब्दी के मध्य
यूनानी भाषा का नाम → लींगिनुस तथा
अंग्रेजी → लॉन्ग इन्स

प्रमुख रचना → पेरिक्लस

अंग्रेजी अनुवाद → "ऑन द सबलाइम"

ऑन द सबलाइम की ही उदात्त की संज्ञा दी गई।

[३.] → क्रोय →

पूरा नाम → बेनेदेत्तो क्रोय

→ अभिव्यञ्जनावाद के प्रवर्तक

→ आत्मवादी दार्शनिक विचारक

प्रमुख रचना → एस्थेटिक्स

→ दार्शनिक ढंग से प्रभावित होकर अभिव्यञ्जनावाद सिद्धान्त का प्रतिपादन।

रघुवंशमहाकाव्यम्

समय — प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व
रघुवंशम् के रचनाकार — कालिदास
विधा —

कुल सर्ग

— महाकाव्य (अधुनयी)

— 19

प्रथम सर्ग में श्लोक — 95 एवं (ग्रंथ में 1569)
उपजीव्य —

— रामायण

अंगीरस

— शृंगार

छन्द

— अनुष्टुप् अन्तिम श्लोक "प्रहर्षिणी" में है।

प्रमुख पात्र —

- * 31 सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन है
- द्वितीय — राजा (नायक)
- सुदक्षिणा — नायिका एवं मगध देश की राजकुमारी
- रघु — द्वितीय के पुत्र
- अज — रघु के पुत्र
- दशरथ — अज के पुत्र
- वसिष्ठ — कुलगुरु
- नन्दिनी — कामधेनु की पुत्री
- अन्तिम राजा — अग्निवर्णी
- * रघु ने "विश्वजित्" नामक यज्ञ किया था।
- * कुम्भोदर शिवसेवक का नाम था।
- प्रसिद्ध टीका — साजीवनी (मल्लिनाथ)

मंगलाचरण —

वागर्थाविवसंप्रवृत्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
अगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥
मंगलाचरण विधा — नमस्कारात्मक

* अलंकार - उपमा

* पितरौ - स्कन्धे वृद्ध

* वागर्थाविव - केवलसमास

* पार्वतीपरमेश्वरौ - कर्मधारय

प्रमुख सूक्त्यः -

1. त्वं सूर्यप्रभवो वंशः त्वं चाप्य विष्णुमतिः ।

"तिलीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ॥"

↳ अलंकार - निदर्शना

2. मन्दः क्वयिषाः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्याताम् ।

प्रंशुलभ्ये फले लोभादुद्वहुरिव वामनः ॥

अलंकार - उपमा

3. अथवा कृतवाग्द्वारे वंशोऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः ।

मणौ वज्रसमुत्कीर्णे स्मृतस्येवास्ति मे गतिः ॥ उपमा

द्वितीयादि के विशिष्ट गुणों का वर्णन -

4. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयेषिणाम् ।

वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥

5. तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः ।

हेमनः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा ॥

अतिशयोक्ति

6. आकारसदृशाप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः ।

आगमेः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः ॥

7. प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।

सहस्रगुणमुत्सृष्टुमादत्ते हि रसं रवि ॥

8. तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारिङ्गितस्य च ।

कलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव ॥

9. ज्ञाने मोहनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः ।

गुणा गुणानुबन्धित्वान्नस्य सप्रसवा इव ॥

- वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम् ।

- व्यूढोरस्त्रौ वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः ।

10. प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणादरक्षादपि ।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्मेहेतवः ॥

वसिष्ठ की प्रशंसा -

11. उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु यस्य मे ।
"देवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम् ॥" (द्वितीय)
12. हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु ।
वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविक्षोषिणाम् ॥ (द्वितीय)
- पुत्र वियोग -
13. पयः पूर्वेः स्वनिःश्वसेः क्लोष्णमुपभुज्यते । (द्वितीय)
14. लोकान्तरस्सुखं पुण्यं तपोदानसमुद्भवम् ।
संततिः शुद्धवैश्या हि परमेष्ठ च शर्मणे ॥ (द्वितीय)
15. अरुन्तुदमिवात्मानमनिर्वाणस्य दन्तिनः । (द्वितीय)
16. तस्मान्मुच्ये यथा तात ! संविधातुं तथार्हसि ।
इक्ष्वाकूणां कुरपिठ्ये त्वदधीना हि सिद्ध्यः ॥ (द्वितीय)
- वसिष्ठ का द्वितीय से कथन -

17. स शापो न त्वया राजन्न च सारथिना श्रुतः ।
नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्धमदिग्गजे ॥
18. प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिस्मः ।
19. आराध्यः सपत्नीरुः प्रीताकामदुधा हि सा ।
20. हविषे दीर्घसत्रस्य सा चेदानीं प्रचेतसः ।
भुजंगपिहितद्वारं पातालमधितिष्ठति ॥

— सांप्रदायिक विद्या

श्रीधर
भारवि
गंगेश
वीरदत्त गोरी
दण्ड

* किरातार्जुनीयम् *

समय - 6 (छठी) शताब्दी)
रचयिता - भारवि (दामोदर, आतपत्र, अर्थगौरव)
विधा - महाकाव्य (बृहत्तरयी)
कुल सर्ग - 18

प्रथम सर्ग में श्लोक - 46 एवं (ग्रन्थ में 1040)
अंगीरस - वीर
छन्द - वंशस्थ, सर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में छन्द परिवर्तित है - 45वें में - पुष्पिताग्रा
उपजीव्य - एवं 46वें में - मालिनी
महाभारत (वनपर्व)

प्रमुख पात्र -

नायक - अर्जुन
नायिका - द्रौपदी
नायक प्रकृति - धीरोदात्त
प्रतिनायक - किरातवेषधारी 'शिव'
युधिष्ठिर का गुप्तचर - वनेचर (ब्रह्मचारी के वेष में)
प्रसिद्ध तीठा - (घण्टापथ) मल्लिनाथ

मल्लिनाथ की प्रसिद्ध उक्ति -

"नारिकेल फल सम्मितं वचो" भारवेः सपदि तद्विभज्यते।
स्वादयन् रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथोप्सितम्।
- घण्टापथ

प्रमुख सूक्तियाँ

मंगलाचरण - (वस्तुनिर्देशात्मक)

श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम् ।
स वर्णिभिर्ज्ञी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥

“प्रियः” शब्द राजलक्ष्मी के लिए प्रयुक्त हुआ है।
अंतर - व्यानुप्रास

१. कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे ।
३. न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः ।
४. ‘द्विषां विद्याया विधातुमिच्छते ।’
- “सोष्ठवोदार्यविशेषशालिनी” - वनेचर का विशेषण

वनेचर की उक्तियाँ -

५. क्रियासु सुक्तेर्नृपचारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभोऽनुजीविनः ।
६. हितं मनोहारि चं दुर्लभं वचः ।
७. योऽधिपं हितान्न यः संश्रुते स किंप्रभुः ।
८. सदानुकूलेषु हि सुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ।
९. दुरोदरच्छद्मजितां समीहे नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः ।
- सुयोधन - दुर्योधन के प्रयुक्त हुआ है ।
१०. वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ।
११. वस्यमानस्य वसूनि मेदिनी ॥
१२. अहो दुरत्ता बलवद्विरोधिता ।
१३. प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ।

द्वौपदी की उक्तियाँ -

१४. प्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न प्रायिनः ।
१५. कथं न मनुज्वलयत्युद्गीरितः
शमीतसं शुष्कमिवाग्निरुच्छिद्यः ॥

16. अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वक्ष्याः स्वयमेव देहिनः ।
अमर्षशून्येन जनस्य अन्तुना
न जातहर्दिन न विद्विषादरः ॥
17. विचित्ररूपाः अलु चित्तवृत्तयः ।
18. पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ॥
19. प्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः
शमेन सिद्धिदं मुनयो न भूभृतः ।
20. निराश्रया हन्त एता मनस्विता ॥
21. अरिषु हि विजयार्थिनः पक्षितीक्षा
विदधाति सोपाधि सन्धिदूषणानि ॥

* शिशुपालवधम् *

उपाधि - महाकाव्य
रचयिता - माघ
विधा - महाकाव्य

रचयिता - माघ (माघे सन्नि त्रयो गुणाः)

विधा - महाकाव्य

अध्याय - 3 भाग कुल सर्ग - 20

प्रथम सर्ग में श्लोक संख्या - 75 खं (ग्रंथ में 1650)

अंगीरस - वीर

छन्द - वंशस्थ (74 वें में पुष्पिताग्रा तथा 75 वें में शार्दूलविक्रीडितम्)

उपजीव्य - महाभारत (सभापर्व)

प्रथम सर्ग का नाम - कृष्णनारदसम्भाषणम्
समय - 675 ई. (7 वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)

प्रमुख पात्र →

नायक - कृष्ण

नायिका - रुक्मिणी, सत्यभामा

* "नारद" जी का द्वारकापुरी में आकर श्रीकृष्ण भगवान् से शिशुपाल-वध करने के लिए वन्द के संदेश को कहना ।

प्रसिद्ध टीका - सर्वाङ्ग (मन्विनाथ)

मंगलाचरण -

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं
अगज्जगन्निवासः वसुदेवसद्मानि ।
वसन्ददर्शवतरत्नमम्बरात्
हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः ॥

* अलंकार - वृत्त्यनुप्रास छन्द - वंशस्थ

* "श्रियः पतिः" अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी ।

* "हिरण्यगर्भाङ्गभुवं" - "ब्रह्मा पुत्र नारद"

मंगलाचरण विधा - वस्तुनिर्देशात्मक

प्रमुख सूक्तियाँ



> नारद की विशेषताएँ जब वे पृथ्वी पर उतर रहे थे -

1. गतं तिरश्चीनमनूस्सारथीः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वननं हविर्भुजः।

श्रीकृष्ण द्वारा नारद के गुणों का वर्णन -

2. नवानधोऽधो बृहतः पयोधरान् समूढ - कर्पूर - पराग - पाण्डुरम्
क्षणं क्षणोक्षित - गजेन्द्र - कृत्तिना स्फुरोपमं भूतिसितेन शम्भुम्

3. दधानमम्भोरुह - कैसरद्युतीर्जटाः शरच्चन्द्रमरीचिरोचिषम्।

4. पिशाङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविं वसानमैणाभिनमञ्जनद्युति।
सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम् ॥
शितिवास - बलभद्र (बलराम)

5. पदं महैन्द्रालयचारु चक्रिणः।

6. गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।

7. ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्षि

8. रथाङ्गपाणिः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलित विरेजि।
चलत्पलाशान्तरगीचरास्तरौस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः ॥
तुषारमूर्ते - चन्द्रः

9. शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि शोष्यताम्।

10. श्रेयसि केन तृष्यते।

नारद द्वारा श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन -

11. त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः किमस्ति कार्यं गुरु
योगिनामपि।

12. उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनेरभीक्ष्णमक्षुण्णतयाऽतिदुर्गमम्।
उपेयुषो मोक्षपथं मनस्विनस्त्वमग्रभूमिर्निरपायसंश्रया ॥

13. मनुष्यजन्माऽपि सुराऽसुरान् गुणेर्भवान्भवच्छेदकरैः
करोत्यथः ।

14. ^{विना} ^{धर्म} मृते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः
विष्णु कान्तसिंहावतार वहिरव्यकश्यपवध -

15. स मुधकान्तास्तनसङ्गभङ्गुरैरुरोविहारं प्रतिचस्क्रे नञ्चैः ।

रावणस्य स्वर्गलुण्ठनमाह -

17. पुरीमवस्कन्द लुनीहि ^{इन्द्र की उधारा} नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः ।
रावणभयात्पलायान्तर्हितस्येन्द्रस्य उल्लूकसादृश्यमाह -

18. प्रविश्य हेमाद्रिगुहागृहान्तरं निनाय विभ्यदिवसानि कौशिकः ।
कौशिक - उल्लूक, वन्द, हेमाद्रि - सुमेरु पर्वत
रावणस्य कुबेरविजयं दर्शयति

19. विभिन्नशङ्खः कलुषीभावन्मुहुर्मदेन दन्तीव ^{कुबेर का} मनुष्यधर्मणः ।
रावणस्य वरुणविजयं -

20. ^{उल्लूक} रणेऽपि तस्य प्रहिताः ^{धरणी} प्रचेतसा ^{वगाद्वे} सरोषहुङ्गरपराङ्मुखीकृताः ।
^{द्व्यगाराजराज} प्रहर्तुरेवीरगाराजराजजवी ^{जवेन} कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे ॥
^{नागपाश} रावणस्य यमविजयं -

21. हृतेऽपि भारे महत्स्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशान्तं शिरः ।
रावणस्य कालविजयं -

22. तपेन वर्षाः शरदा हिमागमौ वसन्तलक्ष्म्या शिशिरः समस्त

23. सदाभिर्मनिकधना हि मानिनः । (रावण के लिए)
रावणस्य रामावतारे कृतं वधः -

24. स्मरत्यदौ दाशरथिर्भवन् भवानमुं वनान्ताद् वनितापहरिणम्
पयोधिमाबद्धचलज्जलाविलं विलङ्घ्य लघुं निरुषा हनिष्यति ॥

शिशुपाल स्वरूप वर्णन -

२५. स बाल आसीद् वपुसा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभसिलेचन
युवा कुराकान्तमहीभृदुर्जैरसंशयं सम्प्रति तेजसा रविः॥
२६. सतीव योषितप्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्निरेष्वपि।

अन्य प्रसिद्धा कारिका -

२७. क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।

सांख्यशास्त्र का रहस्य स्वरूप श्रीकृष्ण -

अवासितारं निगृहीतमानसेर्गृहीतमह्यात्मदृशा कथञ्चन।

बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविद्व

पुराविद्वः - कपिल मुनि, सनत्कुमारादि

प्रकृतेः - प्रधानतः

बहिर्विकारं - महादिप्रकृतिविकारीभिनम-

* नैषधीयचरितम् *

पिता - श्रीहरि
माता - रामदेवी

रचयिता - श्रीहर्ष (नैषधं विद्वद्वैषधम्, नैषधे पदनाम्निमे)
विधा - महाकाव्य

कुल सर्ग - 22

प्रथम सर्ग में श्लोक संख्या - 145 (ग्रन्थ में 2830)
अंगीरस - शृंगार

छन्द - वंशस्थ (144वें में वसन्ततिलक तथा
145वें में शार्ङ्गलविक्रीडितम्)

उपजीव्य - महाभारत
समय - 11 वीं शताब्दी (वनपर्व - नक्षोपाख्यान)

प्रमुख पात्र →

नायक - राजा नल → कौटिली - धीरोद्दत
नायिका - दमयन्ती

प्रतिनायक - मुख्य कलि, अन्य इन्द्र, यम, अग्नि
निसृष्टार्थ द्वत - हंस

प्रसिद्ध टीका - जीवातु (माल्लिनाथ)
प्रथम सर्ग का विषय - नल का वनविहार

मंगलाचरण -

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः

तथाद्वियन्ते न बुधाः सुधामपि ।
नलः सितच्छत्रित कीर्तिमण्डलः

स शशिरासीन्महसां महीज्ज्वलः ॥

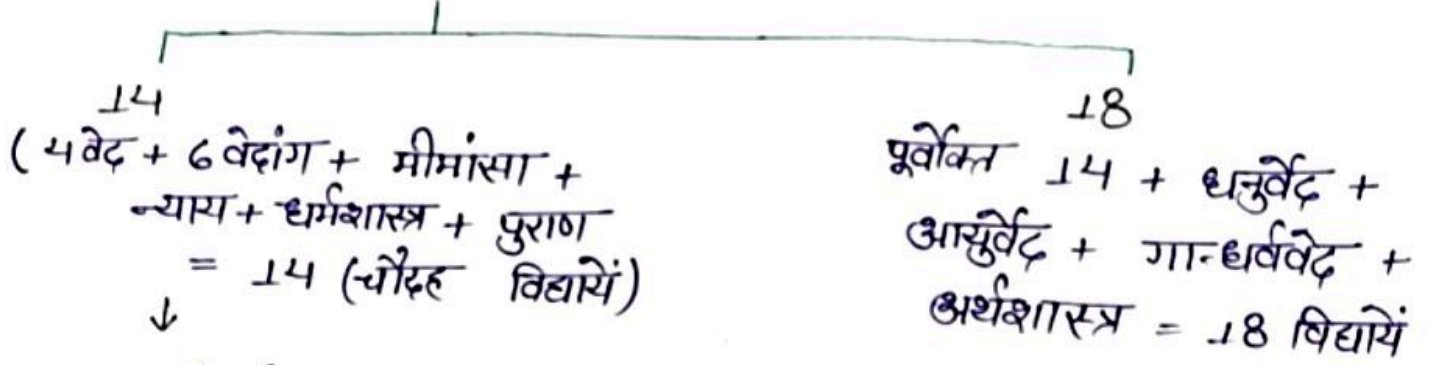
मंगलाचरण विधा - वस्तुनिर्देशात्मक

छन्द - वंशस्थ
अलंकार - संसृष्टि (व्यतिरेक, श्लेष, रूपक)

प्रमुख सूक्तियाँ →

राजा नल के गुण एवं उनकी आत्मकथा का वर्णन -

1. रसैः कथा यस्य सुधावधीरणी
2. ज्वलत्प्रतापावलि कीर्तिमण्डलः ।
3. चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं
न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वरयम् ।
4. अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी
विद्यारं



5. प्रदक्षिणीकृत्य जयाय सृष्ट्या रराज नीराजम्या स राजधः।
6. दिगङ्गनाङ्गाभरणं रणाङ्गणे
यक्षाः पटं तद्भटचातुरीतुरी ॥
7. मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः
प्रणीय दारिद्र्यहरिद्रतां नृपः ॥
8. अजस्रमभ्यासमुपेयुसा क्षमं
सुदैव देवः कविना बुधेन च ॥
9. सखा रतीशस्य क्लृप्त्यथा वनं
वपुस्तथालिङ्गदथास्य यौवनम् ।
10. अधारि पद्मेषु तद्विघ्निना धृणा
क्व तच्छयच्छाय लगेऽपि पल्लवे ॥
11. महीभूतस्तस्य च मन्मथश्रिया
निजस्य चित्तस्य च तं प्रीच्छया ।
द्विधानृपे तत्र जगत्प्रयीभुवां
नतभूवां मन्मथ विभ्रमोऽभवत् ॥

12. यथोह्यमानः खलु भोग भोजिना
 प्रसह्य वैरोचनिजस्य पत्ननम् ।
 विदर्भजाया ^{हामदेव/प्रद्युम्न} मदनस्तथा मनो -
 उनलावसुद्धं वयसेव वैशितः॥
13. मृषामृधं सादिथले क्षुतूहलान्
 नलस्य नासीरगते विनेनतुः।
14. दिने दिने त्वं तनुरेधिरेऽधिकं
 पुनर्पुनर्मूर्च्छं च तापमृच्छं च ।
 इतीव पान्थाब्धायतः पिकाद्विजान्
 सखेदमेक्षिष्ट सखोर्हिरेक्षणात् ॥ 90 ॥
15. वियोगभाजोऽपि नृपस्य पश्यता ।

हंस की कथा, वियोग एवं आत्मक्षलाद्या

16. धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान्मम हेमजन्मनः।
 तवार्णवस्यैवतुषारशीकरैर्भवेदमीभिः रुमलोदयः स्त्रियान् ॥ 130 ॥
17. प्रियास्तु बालास्तु रतक्षमास्तु च
 द्विपत्रितं पल्लवितं च विश्रतम् ।
18. विगर्हितं धर्मधनेर्निबर्हणं विशिष्य विश्वासज्जुषां
 द्विषामपि ॥ 118 ॥

हंस द्वारा भाग्य की उल्लाहना देना

19. मदेकपुत्रा अननी जरातुरा
 नवप्रसूतिर्वरतातपस्विनी ।
 गतिस्तयोरेष अनस्तमर्दयन्
 नहो ! विद्ये ! त्वां करुणा सुषाद्धि न ॥ ॥ 135 ॥
20. न आत्मरूपच्छेद जातरूपता
 द्विजस्य दृष्टियमितिस्तुवन्मुहुः ॥ 129 ॥

हंस द्वारा माता को वचन -

मुहूर्तं मातं भव निन्दया हया

सखाः सखायः सखदश्रवो मम ।
निवृत्तिमेष्यन्ति परं दुरुत्तरः

त्वयैव मातः सुतक्षीरसागरः ॥१३६॥

हंस द्वारा पत्नी को वचन -

मदर्थसन्देशमृणालमन्थरः

प्रियः छियद्दूरं वति त्वयोद्दिने ।
विलोक्यन्त्या रुद्धोऽथपक्षिणः

प्रिये ! स कीदृग्भवित्वा तव क्षणः ॥

ब्रह्मा को लक्षित करते हंस की उक्ति -

॥१३७॥

कथं विधातर्मयि पाणिपङ्कजात्

तवप्रियाशैत्यं मृदुत्वशिल्पिनः ।

वियोक्ष्यसे वल्लभयेति निर्गता

लिपिर्जलाटन्तपनिष्ठुराक्षरा ॥

प्रमुख सूक्तियाँ

1. या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
1/1
2. प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः। 1/1

3. आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः॥ 1/2 (सूत्रधार)
4. सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभि- वननताः॥ 1/3 (सूत्रधार)
5. अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि। 1/4
6. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरुपतति स्यन्दे बद्धदृष्टिः॥ 1/7 (दुष्यन्त)
7. जन्मयस्य पुरोर्वशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि। 1//11 (वैखानस)
8. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। 1/14 (दुष्यन्त)
9. इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेतुमृषिर्व्यवस्यति॥
1/16 (दुष्यन्त)
10. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्। 1/17 (दुष्यन्त)
11. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं। 1/17 (दुष्यन्त)
12. अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। 1/18
(दुष्यन्त)
13. कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावोराजर्षिः। (अनसूया)
14. कामं प्रिया सुलभा मनस्तु तद्भावदर्शनाशवासि। 2/1
(दुष्यन्त)
15. कामी स्वतां पश्यति। 2/2 (दुष्यन्त)
16. अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं। 2/10 (दुष्यन्त)
17. लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुरापः
कथमीप्सितोभवेत्? 3/11 (दुष्यन्त)
18. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। (प्रियवंदा)
19. विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्ति न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं
कृतमिव॥ 4/1 (दुर्वासा)
20. यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया। 4/6
(काश्यप)

21. सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्। 4/9 (काश्यप)
- र) 22. शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। 4/18
रध (काश्यप)
23. अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
4/22 (काश्यप)
- त) 24. पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः। 4/6
(कण्व)
25. कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव। 4/1 (दुर्वासा)
26. रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्। 5/2 (दुष्यन्त)
- त) 27. अविश्रामोऽयं लोकतन्त्राधिकारः। कंचुकी (पंचम अंक)
- ॥ 28. औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा। 5/6 (दुष्यन्त)
29. जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव। 3/10 (शार्ङ्गरव)
30. किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्। 5/13 (दुष्यन्त)
31. प्रियाऽप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः। 5/17 (शार्ङ्गरव)
32. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु। 3/22 (दुष्यन्त)
33. अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। 5/24 (शार्ङ्गरव)
34. वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षिष्यति द्विजम्। 6/28 (दुष्यन्त)
35. पतन्ति चक्षूषि न दारुणाः शराः। 6/29 (मातलि)
36. स्वायंभुवान्मरीचेर्यः प्रबभूव प्रजापतिः।
सुरासुरगुरुः सोऽत्र सपत्नीकस्तपस्यति॥ 7/9 (मातलि)
37. श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते। 7/13 (दुष्यन्त)
38. पुत्रस्य ते रणशिरस्ययमग्रयायी। 7/26 (मारीच)
39. आखण्डलसमो भर्ता जयन्तप्रतिमः सुतः। 7/28 (मारीच)
40. पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रतिरथः। 7/33 (मारीच)
41. प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां
महीयताम्। 7/34 (दुष्यन्त)
41. सर्वं कान्तमात्मीयं पश्यति (दुष्यन्त)

अभिज्ञ
प्रथमो
या सु
ये द्वे
स्वम्।
यामा
प्रत्य
सूत्र
आ
बल
सु
प्र
न
विस्

- 'उदयनवेन्दुसवर्णा...' यह 'स्वप्नवासवदत्तम्' का है—मंगलाचरण (1/1)
- मंगलाचरण में बलराम की तुलना की गयी है—वसन्त ऋतु से
- मंगलाचरण में वृत्त है—आर्या
- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह कथन है—यौगन्धरायण का (1/4)
- 'प्रद्वेषो बहुमानो वा सङ्कल्पादुपजायते' यह कथन है—यौगन्धरायण का (1/7)
- 'दुःखं न्यायस्य रक्षणम्' यह कथन है—कञ्चुकी का (1/10)
- 'दृष्टा विपत्तिरथ यैः' यह कथन है—यौगन्धरायण का (1/11)
- 'न्युत्क्राम्य गच्छति विधिः यह कथन है'—यौगन्धरायण का (1/11)
- 'विश्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता' यह कथन है—ब्रह्मचारी का (1/12)
- 'धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता' यह कथन है—ब्रह्मचारी का (1/13)
- 'भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा' यह कथन है—ब्रह्मचारी का (1/13)
- 'दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः' यह कथन है—उदयन का
- 'दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः' यह कथन है—उदयन का (4/6)
- 'इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा' यह कथन है—उदयन का (4/8)

- 'गुणानां वा विशालानां' यह कथन है—उदयन का (4/9)
- 'लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द' यह कथन है—उदयन का (5/2)
- 'न क्लिष्टं हि शिरोपधानममलम्' यह कथन है—उदयन का (5/4)
- 'चरित्रमपि रक्षन्त्या दृष्टं दीर्घालकं मुखम्' यह कथन है—उदयन का (5/10)
- 'स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता' यह कथन है—उदयन का (6/1)
- 'प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते' यह कथन है—कञ्चुकी (6/7)
- 'कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले' यह कथन है—कञ्चुकी का (6/10)
- 'परम्परागता लोके दृश्यते रूपतुल्यता' यह कथन है—उदयन का (1/14)
- 'भारतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवाञ्छुचिः' यह कथन है—यौगन्धरायण का (6/16)
- 'इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्' यह है—भरतवाक्य (6/19)
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के भरतवाक्य में छन्द है—अनुष्टुप्
- 'काम्पिल्याधिपः' था—ब्रह्मदत्त
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अंक में कुल श्लोक हैं—16
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अंक में कुल श्लोक हैं—7
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पंचम अंक में कुल श्लोक हैं—13
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अंक में कुल श्लोक हैं—19
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के किस अंक में श्लोक नहीं हैं?—दूसरे एवं तीसरे अंक में

वैष्णोसंहारम्

1. रचनाकार - भट्टनारायण
2. भट्टनारायण का समय - 8वीं शताब्दी उत्तरार्ध
3. भट्टनारायण का परिचय - कन्नौज निवासी, शाण्डिल्य गोत्रीय, कान्यकुब्ज ब्रह्मण
4. वैष्णोसंहारम् की विधा - नाटक
5. वैष्णोसंहारम् के नायक - भीम
6. वैष्णोसंहारम् की नायिका - द्रौपदी
7. वैष्णोसंहारम् का मुख्य रस - वीर रस
8. वैष्णोसंहारम् के नायक की प्रकृति - धीरोद्धत
9. वैष्णोसंहारम् में अंक संख्या - 6
10. वैष्णोसंहारम् का प्रतिनायक - दुर्योधन
11. वैष्णोसंहारम् का उपजीव्य - महाभारत
12. दुर्योधन का मित्र - अंगराज कर्ण
13. अर्जुन के सारथि - श्रीकृष्ण
14. धृतराष्ट्र का सारथि - संजय
15. कर्ण का सेवक - सुन्दरक
16. युधिष्ठिर का कञ्चुकी - जयन्धर
17. दुर्योधन का कञ्चुकी - विनयन्धर
18. दुर्योधन का राक्षसमित्र - चार्वाक
19. द्रोणाचार्य का सारथि - अश्वमेज
20. पाण्डवों का राक्षसमित्र - रुचिरप्रिय
21. द्रौपदी की सखी - लुप्तिमतेका
22. दुर्योधन की पत्नी - भानुमती
23. भानुमती की सखी - सुवदना
24. दुर्योधन की माता - गान्धारी
25. जयद्रथ की पत्नी - दुःशला
26. रुचिरप्रिय की पत्नी - राक्षसी वसागन्धा

27. वेणीसंहारम् का मङ्गलाचरण - द्वादशपदा नान्दी
28. वेणीसंहारम् के मङ्गलाचरण के प्रथम श्लोक के आराध्य देवता - श्रीहरि
29. " " के द्वितीय श्लोक के आराध्य - श्रीकृष्ण
30. " " के तृतीय श्लोक के आराध्य - भगवान् शिव
31. धृतराष्ट्र का अर्थ - धृतराष्ट्र के पुत्र अयवा हंस
32. पाण्डवों द्वारा दुर्योधन से माँगे पाँच गाँव - 1. इन्द्रप्रस्थ
2. वृकप्रस्थ
3. जयन्त
4. वार्गावर्त
5. स्नेहद्वया कोई एक गाँव
33. द्रौपदी के विभिन्न नाम - पाञ्चाली, पाञ्चालदुहिता, याज्ञसेनी, कृष्णा, मुक्तवेणी
34. अक्षौहिणी सेना का परिमाण - 21870 रथ
21870 इाथी
65610 घोड़े
109350 पैदल सिपाही
35. वेणीसंहारम् का भरतवाक्य -

अकृपणमरुकम्भान्तं जीव्याज्जनः पुरुषायुधं
भवतु भगवन्भक्तिर्द्वैतं विना पुरुषोत्तमे।
दयितभुवनो विद्वद्बन्धुर्गुणेषु विशेषवि-
त्सततसुकृती भूयाद् भूपः प्रसाधितमण्डलः॥

प्रमुख श्लोक

- पाण्डवों द्वारा दुर्योधन से माँगे पाँच गाँव—
इन्द्रप्रस्थं वृकप्रस्थं जयन्तं वारणावतम् ।
प्रयच्छ चतुरो ब्राम्हण कञ्चिदेकं तु पञ्चमम् ॥
- मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्
दुःशासनस्य रुद्धिरं न पिबाम्युरस्तः ।
सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरु
सन्धिं करोति भवतां नृपतिः पणेन ॥
- चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डादाभिघातसञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य ।
स्त्यानावनद्धधनशोणितरोणपाणि- रुत्तंस्यिष्यतिकचांस्तव देवि भीमः ॥
- ग्रहाणां चरितं स्वप्नोऽनिमित्तान्युपयाचितम् ।
फलान्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राप्ता न बिभ्यति ॥
- दग्धं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्का
वाता वाता दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्त भिन्नाः ।
दन्नं मेघैर्न गगनतलं पुष्करावर्तकाद्यैः
पापं पापाः कथयत कथं शौर्यराशः पितुर्मे ॥
- कृतमनुमतं दृष्टं वा चैरिदं गुरुपातकं
मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः ।
नरकरिपुणासार्धं तेषां सभ्रीमकिरीटिना—
मयमहमसृङ्मेदोमांसैः करोमि दिशां बलिम् ॥
- सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम् ।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ॥

वेणीसंदारम के नाटकीय पात्र

1. भीम - नायक, पाण्डुपुत्र
2. युधिष्ठिर - ज्येष्ठ पाण्डव
3. अर्जुन - कुन्तीपुत्र, पाण्डव
4. नकुल, सहदेव - पाण्डव, माद्रीपुत्र
5. कृष्ण - अर्जुन के सारथि व सखा/विष्णु के अवतार
6. धृतराष्ट्र - कौरव राजकुमारों के पिता, पाण्डवों के ज्येष्ठ पिता
7. दुर्योधन - कौरवों में ज्येष्ठ, प्रतिनायक
8. कर्ण - दुर्योधन का मित्र, अंग राज
9. कृपाचार्य - दुर्योधन आदि के गुरु, अश्वत्थामा के मामा
10. अश्वत्थामा - द्रोणाचार्य का पुत्र
11. संजय - धृतराष्ट्र का सारथि
12. सुन्दरक - अंगराज कर्ण का सेवक
13. जयन्धर - युधिष्ठिर का कंचुकी
14. विनयन्धर - दुर्योधन का कंचुकी
15. चार्वाक - मुनिवेषधारी राक्षस, दुर्योधन का मित्र
16. अश्वसेन - द्रोणाचार्य का सारथि
17. रुधिरप्रिय - पाण्डवों का पक्षपाती राक्षस
18. सूत - दुर्योधन का सारथि
19. बुधक, पाञ्चालक - युधिष्ठिर के सन्देशवाहक
20. द्रौपदी - नायिका, पाण्डववधू
21. बुद्धिमति - द्रौपदी की सखी
22. चैटी - द्रौपदी की दासी
23. भानुमती - दुर्योधन की पत्नी
24. सुवदना - भानुमती की सखी
25. तरलिका - भानुमती की दासी
26. गान्धारी - दुर्योधन की माता
27. माता - जयद्रथ की माता
28. दुःशला - जयद्रथ की पत्नी, दुर्योधन की बहन
29. वसागन्धा - रुधिरप्रिय की पत्नी
30. विदम्बिका - कौरव पक्ष की दासी

प्रमुख सूक्तियाँ

प्रथम अङ्कः

1. स्त्रीणां हि साद्यर्थाद् भवन्ति चैतांसे भर्तृसदृशानि ।
मधुरापि हि मूर्च्छयते विषविटपिसमाश्रिता वल्ली ॥ (सद्यदेव)

द्वितीय अङ्कः

1. अकुरालदर्शनाः अपि स्वप्नाः देवतानां प्रशंसया कुशल-
परिणामा भवन्ति ॥ (चेटी)
2. गुप्या साक्षान्महानल्पः स्वमन्येन वा कृतः ।
करोति महतीं प्रीतिमपकारोऽपकारिणाम् ॥ (दुर्योधन)
3. स्वपञ्जनः किं न खलु प्लपति ॥ (चेटी)
4. पर्यायेण हि दृश्यन्ते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः ॥ (दुर्योधन)
5. स एव स्निग्धो जगो यः पृष्ठः परुषमपि हित भणति ॥ (चेटी)
6. गृहाणां चरितं स्वप्नोऽनिमित्तान्युपयाचितम् ।
फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति ॥ (दुर्योधन)
7. अहो मुग्धत्वमवलानाम् ॥ (दुर्योधन)

तृतीय अङ्कः

1. यदि समरमपास्य नास्ति मृत्यो-
र्मयमिति युक्तमितोऽन्यतः प्रयातुम् ।
अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः
किमिति मुग्धा मलिनं यशः कुरुध्वे ॥ (अश्वत्थामा)
2. यावदयं संसारस्तावत्प्रसिद्धैवेयं लोकयात्रा यत्पुत्रैः पितरो
लोकद्वयेऽप्यनुवर्तनीया ॥ (कृपाचार्य)
3. तेजस्वी रिपुदतबन्धुदुःखापादं बाहुभ्यां ब्रजति धृतायुधध्वलाभ्याम् ॥
(दुर्योधन)
4. प्रकृतिर्दुस्त्यजेति ॥ (दुर्योधन)
5. वक्तुं सुकरमिदं दुष्करमध्यवसितुम् ॥ (कर्ण)
6. देवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ॥ (कर्ण)

चतुर्थ अङ्क

1. पुण्यवन्तो हि दुःखभाजो भवन्ति ॥ (दुर्योधन)

पञ्चम अङ्क

1. न घटस्य कूपपाते रज्जुरपि तत्र प्रक्षेप्तव्या ॥ (सञ्जय)
2. उपक्रियमाणामावे किमुपकरणेन ॥ (दुर्योधन)
3. यावत्प्राणिति तावदुपदेष्टव्यभूमिर्विजिगीषुः प्रजावताम् ॥ (सञ्जय)
4. कालानुरूपं प्रतिविद्यातव्यम् ॥ (दुर्योधन)
5. आशा बलवती राजन् शल्यो जिष्यति पाण्डवान् ॥ (सञ्जय)
6. अनुल्लंघनीयः सदाचारः ॥ (भीम)
7. न युक्तमनभिवाद्य गुरुन् गन्तुम् ॥ (भीम)
8. विम्राव्य नाम कर्मणः वन्दनीया गुरवः ॥ (भीम)
9. यावत्क्षतं तावत् समरविजयिनो जिता हताश्च वीराः ॥ (धृतराष्ट्र)
10. न युक्तं पराक्रमवतां वाङ्मालेणापि विरागमुष्मादयितुम् ॥ (धृतराष्ट्र)
11. दृश्यमानाः किल नृपोर्नृपाः संदधते परान् ॥ (दुर्योधन)

षष्ठ अङ्क

1. को हि नाम भगवता संदिष्टं विकल्पयति ॥ (युधिष्ठिर)
2. अनुक्तद्वितकारिता हि प्रकाशयति मनोगताम् स्वामिभक्तिम् ॥ (जयन्धर)
3. यद्देवस्तिभुवननाथो भणति तत्कथमन्यथा भविष्यति ॥ (द्रौपदी)
4. न युक्तं बन्धुव्यसनं विस्तरेण वेदयितुम् ॥ (चार्वक राक्षस)
5. न युक्तं वीरस्य क्षत्रियस्य प्रतिज्ञातं शिथिलयितुम् ॥ (द्रौपदी)
6. कुतस्तस्य विजयादन्यदस्य भगवान् पुराणपुरुषो नारायणः स्वयं मंगलान्याशास्ते ॥ (युधिष्ठिर)

मुद्राराक्षसम्

1. मुद्राराक्षसम् के रचनाकार - विशाखदत्त
2. महाकवि विशाखदत्त का समय - (300-400) A.D.
3. ग्रन्थ की विधा - नाटक
4. अङ्क संख्या - सात
5. मुख्य रस - वीर रस
6. नायक - चाणक्य
7. चाणक्य का मूल नाम - विष्णुगुप्त
8. मुद्राराक्षसम् का उपजीव्य - विष्णुपुराण / श्रीमद्भागवत
9. नायिका - नायिका का अभाव
10. विदूषक - विदूषक का अभाव
11. मङ्गलाचरण का प्रकार - आशीर्वादात्मक / वस्तुनिर्देशात्मक
12. मङ्गलाचरण के स्तुत्य देवता - भगवान शिव तथा माता पार्वती
13. चाणक्य द्वारा वृषल कहकर किसे सम्बोधित किया जाता है - चन्द्रगुप्त
14. मुद्राराक्षसम् की मुद्रा किससे सम्बन्धित है - अमात्य राक्षस से
15. मुद्राराक्षसम् के अङ्कों के नाम -

प्रथम - मुद्राप्रप्ति

द्वितीय - भूषण विक्रय

तृतीय - कृतककलह

चतुर्थ - प्रलोभन

पञ्चम - कूटलेख

षष्ठ - कपटपाश

सप्तम - संग्रहण

* मङ्गलाचरण : -

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किन्तु नमैतदस्या,
नामैवास्यास्तदेतत् परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः ।
नारीं वृद्धाप्ति नैन्दुं कथयतु विजया न प्रमाणं यदीन्दु-
र्देव्या निह्नोतुभिच्छोरिति स्फुरसरितं शाठ्यमव्याद्विप्रोर्वः ॥

मुद्राराक्षसम् के नाटकीय पात्र

प्रथम अङ्क (मुद्रायाप्ति)

1. सूत्रधार - नाटकीय कथावस्तु का प्रस्तुतकर्ता
2. नटी - सूत्रधार की पत्नी
3. चाणक्य - कौटिल्य, विष्णुगुप्त/चन्द्रगुप्त का गुरु, सलाहकार, मन्त्री
4. शार्ङ्गारव - चाणक्य का शिष्य
5. निपुणक - चाणक्य का गुप्तचर, यमपट लेकर विचरण करने वाला
6. शोणोत्तरा - चन्द्रगुप्त की प्रतिद्वारी
7. सिद्धार्थक - चाणक्य का गुप्तचर,
शकटदास का कृत्रिम मित्र
वज्रलोभन नाम से चन्दनदास को फाँसी देने वाले जल्लादों
में से एक
8. चन्दनदास - मणिकार, राक्षस का अभिन्न मित्र

द्वितीय अङ्क (भूषण विक्रय)

1. आदिनुष्टिक - वास्तविक नाम विराटगुप्त
• सपेरे के वेश में राक्षस का गुप्तचर
• कृत्रिम नाम जीर्णविष
2. राक्षस - स्वर्गीय सम्राट नन्द का अमात्य, नाटक का प्रतिनायक
3. जाजलि - मलयकेतु का कञ्चुकी
4. पुरुष - प्रियंवदक/राक्षस का सेवक
5. शकटदास - राक्षस का निजी सचिव और मित्र
6. सिद्धार्थक - चाणक्य का गुप्तचर
शकटदास का कृत्रिम मित्र
वज्रलोभन नामक जल्लाद

तृतीय अङ्क (कृतककलह)

1. बैद्यनरि - चन्द्रगुप्त का कञ्चुकी
2. चन्द्रगुप्त - राजा, वृषल, चाणक्य का शिष्य, मौर्य साम्राज्य संस्थापक
3. शोणोत्तरा - चन्द्रगुप्त की प्रतिद्वारी
4. चाणक्य - विष्णुगुप्त, चन्द्रगुप्त का गुरु, मन्त्री
5. प्रथम वैतालिक - चन्द्रगुप्त का आत्मीय व्यक्ति
6. द्वितीय वैतालिक - राक्षस का गुप्तचर

चतुर्थ अङ्क - (प्रलोभन)

1. पुरुष - करभक, पथिक के वेश में राक्षस का गुप्तचर
2. दौवारिक - अमात्य राक्षस का द्वार रक्षक
3. राक्षस - स्वर्गीय सम्राट नन्द का अमात्य/प्रतिनायक
4. पुरुष - द्योषणा करने वाला, मलयकेतु का अनुचर
5. मलयकेतु - राजा पर्वतक का पुत्र
6. जाजलि - मलयकेतु का कञ्चुकी
7. भागुरायण - चाणक्य का प्रणिधि, मलयकेतु के पिता पर्वतक का कृत्रिम मित्र, मलयकेतु का सचिव
8. शकटदास - राक्षस का निजी सचिव एवं मित्र
9. पुरुष प्रियंवदक - राक्षस का सेवक
10. क्षपणक जीवसिद्धि - इन्दुशर्मा
चाणक्य का सहपाठी, मित्र, गुप्तचर
राक्षस का कपटमित्र
ज्योतिषी

पञ्चम अङ्कः (कूटलैख)

1. सिद्धार्थक - चाणक्य का गुप्तचर, शकटदास का कृत्रिम मित्र
2. क्षपणक - इन्दुशर्मा, चाणक्य का गुप्तचर, राक्षस का कपटमित्र, ज्योतिषी
3. भागुरायण - चाणक्य का गुप्तचर/मलयकेतु का सचिव
4. पुरुष - भासुरक, मलयकेतु का अधिकारी
5. मलयकेतु - पर्वत देश का राजा, पर्वतक का पुत्र
6. विजया - मलयकेतु की प्रतिद्वारी
7. राक्षस - स्वर्गीय सम्राट नन्द का अमात्य
8. प्रियंवदक - राक्षस का सेवक

षष्ठ अङ्कः (कपटपारा)

1. सिद्धार्थक - चाणक्य का गुप्तचर, शकटदास का कृत्रिम मित्र
2. समिद्धार्थक - सिद्धार्थक का मित्र, विल्वपत्र नामक जल्लाद
3. पुरुष - चाणक्य का गुप्तचर, राक्षस का पीछा करने वाला, मिथ्या फाँसी लगाने वाला विष्णुदास का मित्र
4. राक्षस - नन्दवंश का अमात्य

सप्तम अङ्कः (संग्रहण)

1. पहला चाण्डाल - वज्रलोमन (सिद्धार्थक)
2. दूसरा चाण्डाल - विल्वपत्र (समिद्धार्थक)
3. चन्दनदास - भणिकर, राक्षस का मित्र
4. कुटुम्बिनी - चन्दनदास की पत्नी
5. पुत्र - चन्दनदास का पुत्र
6. राक्षस - अमात्य
7. चाणक्य - चन्द्रगुप्त का गुरु
8. चन्द्रगुप्त - राजा
9. पुरुष - चाणक्य का अनुचर

प्रमुख सूक्तियाँ

प्रथम अङ्कः

1. अत्यादर शंकनीयः ॥ (चन्दनदास)
2. अनुभूयतां चिरं विचिन्तो राजप्रसादः ॥ (चाणक्य)
3. अनुचितः उपचारो हृदयस्य परिभवादपि दुःखमुत्पादयति ॥
(चन्दनदास)
4. कायस्थ इति लक्ष्मी माता ॥ (चाणक्य)
5. कीदृशस्तृणानामग्निना सट् विरोधः ॥ (चन्दनदास)
6. चीयते बालिशस्यापि सत्सेतपतिता कृषिः।
न शालेः स्तम्बकरिता वपुर्गुणमपेक्षते ॥ (सूत्रधार)
7. दिष्ट्या मितकार्येण मे विनाशो न पुरुष दोषेण ॥
8. प्रज्ञा-विक्रम-भक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये।
ते भृत्याः नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च ॥ (चाणक्य)
9. फलेन संवादेतमस्य विकत्यनमः ॥ (चन्दनदास)
10. नाट्टे सर्वः सर्वं जानाति ॥ (निपुणक)
11. न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमवज्ञातुम् ॥ (चाणक्य)
12. शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतिकारः ॥ (चाणक्य)
13. श्रोत्रियाक्षराणि प्रयत्नलिखितानि अपि नियतमस्फुटानि भवन्ति।
(चाणक्य)

द्वितीय अङ्कः

1. प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला।
पुरुषध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी ॥ (राक्षस)
2. पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः ॥ (शकटदास)
3. किं शेषस्य भव्यया न वपुषि क्षमां न क्षिपत्येष यत।
किंवा नास्ति परिभ्रमो दिनपतेरास्ते न यन्निश्चलः ॥
किन्त्वङ्गीकृतमुत्सृजन् कृपणवच्छलाद्यो जनो लज्जते।
निर्व्यूढं प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतादृधि गोलव्रतम् ॥ (विराधगुप्त)
4. नन्वयुक्ततरः सुहृदप्रोदः ॥
5. भव्यं रक्षति भवितव्यता ॥ (विराधगुप्त)
6. सौदासीत् कृतकृत्यव नियतं लब्ध्यान्तरा भेत्स्याते ॥ (राक्षस)
7. भगवति कमलालये भृशमगुणजासि ॥ (राक्षस)
8. अमन्त्रौषधि कुशलो व्यालगादी प्रमत्तो मत्तमतङ्गजारोद्दी
लब्ध्याधिकारो ॥
9. नितकाशी राजसेवक इत्येते तयोऽप्यवश्यं विनाशमनुभवन्ति ॥
(आदिनुण्डिक)
9. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहिता
विरमन्ति मध्याः।
विघ्नेः पुनः पुनरपि प्रतिदन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमगुणा न
परित्यजन्ति ॥ (विराधगुप्त)

तृतीय अङ्कः

1. राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महदप्रोतिस्थानम् ॥
2. परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः ॥
3. दुराराध्या हि राजलक्ष्मीरात्मवद्भिरपि राजभिः ।
4. श्रीर्लब्धप्रसरेव वैशवनिता दुःखोपचर्चा भृशम् ॥
5. सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने शक्नुते विदुः ॥
6. निरीडाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः ॥
7. न निष्प्रयोजनमधिकारवन्तः प्रभुभिरादृत्यन्ते ॥
8. दैवम् अविद्वांसः प्रमाणयन्ति ॥
9. विद्वांसोऽप्यविकत्यना भवन्ति ॥

चतुर्थ अङ्कः

1. अबीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय ॥
2. त्वाद्वाञ्छान्तरितानि सम्प्रति विभो तिष्ठन्ति साध्यानि नः ॥
3. प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ॥

पञ्चम अङ्कः

1. मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छति ॥
2. तदाज्ञां कुर्वाणो दितमदितमित्येतदधुना ।
विचारातिक्रान्ताः किमिति परतन्त्रो विभृशति ॥
3. अधिकारपदं नाम निर्दोषस्थापि पुरुषस्य महदाशंका स्थानम् ॥
4. गतिः सोऽद्यायाणां पतनमनुकूलं कलयति ॥
5. स्वार्थे कस्मिन् समीहा पुनरधिकतरे त्वामनार्य करोति ॥
6. अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः ॥
7. वयमिदानीमनार्याः संवृत्ताः ॥

षष्ठम अङ्कः

1. तत्किं निमित्तं कुक्कविकृतनाटकस्यैवान्वय-मुख्येऽन्यान्निर्वहणम् ॥
2. देवेनोपहतस्य बुद्धिरयवा सर्वा विपर्यस्यति ॥
3. अलक्षितनिपाताः पुरुषाणां समविषमदशापरिणतयो भवन्ति ॥
4. अभूमिः खल्वेषोऽविनयस्य ॥
5. एतन्नदपावृतमस्मच्छोकदीक्षां द्वारं देवेन ॥
6. कृतार्थोऽयं सोऽर्थस्तव सति वणिकत्वेऽपि वणिजः ॥
7. सोऽयमभ्यर्णः शोकवज्रपातो हृदयस्यः ॥

सप्तम अङ्कः

1. स्वपतोऽपि ममेव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्य-जागरूकाः ॥
2. सम्पन्नास्ते सर्वाशिषः ॥
3. सर्वथा स्थाने यशस्वी चाणक्यः ॥
4. कार्याणां गतयो विष्टेरापि न यान्त्याजाकरत्वं चिरात् ॥
5. किं भूयः प्रियमुपकरोमि ॥
6. किं कर्तव्यमतः परम् ॥

* भरतवाक्यः -

वाराहीमात्मयोनेस्तनुमवनविधावास्थितस्थानुरूपां
यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिम्भिये भूतधाली ।
भ्लेच्छैरुद्रविज्यमाना भुजयुगमधुना संमिता राजमूर्तेः
स श्रीमद्वन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः ॥

* उत्तररामचरितम् *

रचयिता - भवभूति

उपाधि - श्रीकण्ठ (अपरनाम), पदवाक्यप्रमाणज्ञ, उर्वर,
शिखरिणी कवि, परिणतप्रज्ञ

कुल अंक - 7

ग्रन्थ में कुल पद्य - 256

कवि का समय - 680-750 ईस्वी

विधा - नाटक

प्रधान रस - करुण

उपजीव्य - वाल्मीकि रामायण

प्रिय छन्द - अनुष्टुप, शिखरिणी

प्रमुख पात्र

नायक - राम (धीरोदात्त)

नायिका - सीता (स्वर्ष्या प्रौढा)

रामचन्द्रः - सूर्यवंशी राजा

लक्ष्मण - सुमित्रा पुत्र

शत्रुघ्न - सुमित्रा पुत्र

जनक - मिथिला के राजा

अष्टावक्र - कहीड़ के पुत्र

वाल्मीकि - कुश-लव के पालक, रामायण के रचयिता

सोधातकि - वाल्मीकि शिष्य

दण्डायन - वाल्मीकि शिष्य

वसिष्ठ - राम के कुलगुरु, अरुन्धति के पति
ऋष्यशृंग - विभाण्डक पुत्र, शान्ता के पति और
राम के जामाता (जीजा)

शान्ता - राम की बहन
पुष्कल - भरत पुत्र, अश्व का रक्षक
कुश - लव - राम के पुत्र
चन्द्रकेतु - लक्ष्मण पुत्र
सुमन्त्र - चन्द्रकेतु का सारथि
दुर्मन्थ - गुप्तचर (सीता के विषय में राम को
लोकापवाद की सूचना देता है)
शम्बूक - शूद्र तपस्वी
मुनिकुमार - लव-कुश के व्याश्रमसाथी सैनिक
कम्पुकी - राम का उत्तःपुरवासी ब्राह्मण सेवक
विदूषक - अभाव

स्त्री - पात्र

सीता - जनक की पुत्री, राम की पत्नी
वासन्ती - वनेदेवता, सीता की सखी
आत्रेयी - तपस्विनी ब्रह्मचारिणी
तमसा मुखा - नारी रूपधारिणी नदी
भागीरथी - गङ्गादेवी
कौशल्या - राम की माता
पृथिवी - सीता की माता
अरुन्धती - वसिष्ठ की पत्नी
विद्याधरी - विद्याधर की पत्नी
पत्नीहारी - राम के राजभवन का गुप्तचर

* अंकों में पात्रों का प्रयोग -

प्रथम अंक - (चित्रदर्शन)

- सूत्रधार - प्रधान नट और रंगमंच का अध्यक्ष
नट - सूत्रधार का साथी
राम - नायक, सूर्यवंशी राजा
सीता - नायिका, जनक-पुत्री और राम की पत्नी
कञ्चुकी - राम का उत्तरपुरवासी सेवक
अष्टावक्र - कछोड़ के पुत्र (तथा ऋषि वसिष्ठ के
सन्देशवाहक)
लक्ष्मण - सुमित्रा के पुत्र, राम के अनुज और
उर्मिला के पति
प्रतीहारी - राम के राजभवन का गुप्तचर
दुर्मुख - गुप्तचर (लोकापवाद की सूचना देगा)

द्वितीय अंक - (पञ्चवटी - प्रवेश)

- आत्रेयी - तापसी (तपस्विनी, ब्रह्मचारिणी)
वासन्ती - वन्देवता (सीता की प्रियसखी)
राम - नायक, राजा
दिव्यपुरुष -
शम्भू - शूद्र तपस्वी

तृतीय अंक - (छाया)

- तमसा - नारी रूपधारिणी नदी
मुरला - नारी रूपधारिणी नदी
सीता - नायिका, जनक-पुत्री, राम की पत्नी

राम - नायक, राजा
वासन्ती - वनदेवता, सीता की सखी

चतुर्थ अंक - (कौशल्याजनकयोग)

दाण्डायन - वाल्मीकि के शिष्य
सोधातकि - वाल्मीकि के शिष्य
जनक - मिथिलानरेश, राम के ससुर
अरुन्धती - वसिष्ठ की पत्नी
कञ्चुकी - अन्नपुर का सेवक
कौशल्या - राम की माता
लव - राम के पुत्र
वटुकगण - लव के आश्रमसाथी

पञ्चम - अंक - (कुमारविक्रम)

सुमन्त्र - चन्द्रकेतु के सारथि
चन्द्रकेतु - लक्ष्मण के पुत्र
लव - राम के पुत्र

षष्ठ - अंक - (कुमार प्रत्यभिज्ञान)

विद्याधर - देवयोनि विशेष
विद्याधरी - विद्याधर की पत्नी
लव - राम के पुत्र
चन्द्रकेतु - लक्ष्मण के पुत्र
राम - नायक, सूर्यवंशी राजा
कुश - राम के पुत्र

सप्तम अंक - (सम्मेलन) - गर्भनाटक (अंशवतार)

लक्ष्मण - सुमित्रा पुत्र
राम - नायक, राजा
सूत्रधार - प्रधान नट
पृथिवी - सीता की माता
भागीरथी - गङ्गादेवी
सीता - जनक पुत्री, राम की पत्नी
वाल्मीकि - कुश-लव के पालक, रामायण के रचयिता
असुन्धरी - वशिष्ठ की पत्नी

- * चित्रवीथी बनाने वाले चित्रकार का नाम "अर्जुन" है, जिसका वर्णन प्रथम अंक में आता है।
- * लव और कुश को 'जम्भकास्त' का ज्योतिष जन्म से ही सिद्ध था।
- * राम ने ताड़का का वध 'जम्भकास्त' से किया था।
- * यह विद्वत्क रहित नाटक है।

प्रमुख सूक्तयः -

"प्रथम अंक"

मंगलाचरण (नमस्कारात्मक)

"इदं कविभ्यः पूर्वैर्भ्यो नमोवाकं प्रशारमहे ।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कुलाम् ॥"

छन्द - पञ्चावक्त्र
अलंकार - विलेख

२. श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणहो भवभूतिर्नाम
अतुकर्णीपुत्रः ^{व्याकरण} _{मीमांसा} न्याय (—संग्रधार)

३. यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।
(—संग्रधार)

४. संकटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायेर्गहस्थता। (—राम)

५. सन्नापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति। (सीता)

६. एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः। (राम)

७. लोकिनां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
क्षुभीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति ॥ (राम)

८. उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरेः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः ॥ (राम)

९. नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि ॥
(—राम)

१०. ते हि नो दिवसा गताः। (—राम)

११. दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति। (—सीता)

१२. अपि ग्रावा रोदित्यापि दलति वज्रस्य हृदयम्।

१३. इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिनयनयोः ॥ (—लक्ष्मणः)

१४. अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु य-
द्विश्रामो हृदयस्य यत्र, जस्मा यस्मिन्नहर्गो रसः।
कालिनावरणात्ययात्परिणते यत्प्रेमसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्तम्।

16. सतां केनापि कर्मेण, लोकस्याराधनं प्रथमम् । (राम)

17. त्वया जगन्नि पुण्यानि त्वय्यपुण्या जनोक्तयः ।
नाथवत्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे ॥

द्वितीयांकः

1. सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति । (-वासन्ती)

2. प्रियप्राया वृत्तिर्विनयमधुरी वाचि नियमः
प्रकृता कल्याणी मतिरनवगीतः परिचयः ।

पुरो वा पश्चाद्वा तदिदमविपर्यासितरसं
रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते ॥

3. वितरित गुरुः प्राप्ते विद्यां तथैव तथा जडे । (-आत्रेयी)

4. मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रोन्धमिथुनादेकुमवधीः काममोहितम् ॥ (-आत्रेयी)

5. वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि ॥ (-वासन्ती)

6. शम्बूको नाम वृषलः पृथिव्यां तप्यते तपः । (-आत्रेयी)

7. न किञ्चिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपिहति । (-राम)

तृतीयांकः

1. अनिर्भित्तो गभीरत्वादनर्गूढघनव्यथः ।

पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य कस्मिन् रसः ॥ (-मुरला)

2. उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य । सञ्जीवनोपायस्तु मूलत एव
रामभद्रस्य सन्निहितः । (-तमसा)

3. ईदृशानां विपाकौऽपि जायते परमाद्भुतः ।

यन्नीपकारणीभावमायात्येवंविधो जनः ॥ (-मुरला)

4. कलशस्य मूर्तिरथवा क्षरीरिणीविरहव्यथैव वनमेति जानमी।
5. भगवति निष्कारणपरित्यागिनीऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन
कीदृशी मे हृदयावस्था । (— सीता)
6. निष्कारणपरित्यागशान्तिरित्यपि यदुमतो मम जन्मलाभः।
(— सीता)
7. आनन्दग्रन्थिरिदोऽयमपत्यमिति पठ्यते । (— तमसा)
8. ईदृशी जीवलोकस्य परिणामः संवृतः । (— सीता)
9. पूजार्थः सर्वस्यार्थपुत्रः विशेषतो मम प्रियसख्याः । (— सीता)
10. प्रीत्यीडे तटाकस्य , परीवाहः प्रतिक्रिया ।
शोकक्षोभे च हृदयं , प्रलापेरेव धार्यते ॥ (— तमसा)
11. एको रसः कलश एव निमित्तभेदात् ॥ (— तमसा)
12. अन्धतामिश्रा ह्यसूर्या नाम ते लोकास्तेभ्यः प्रतिविधीयते
य आत्मघातिन इत्येवमृषयो मन्यन्ते । (— जनक)
13. सन्तानवाहीन्यपि मानुषाणां , दुःखानि सम्बन्धविशेषजानि
दृष्टे जने प्रेयसि दुःसहानि , स्त्रोतःसहस्रैरिव संप्लवन्ते ॥
14. गुणाः पूजारथानं गुणिषु न च लिङ्गं न च व्ययः ॥
(— अरुन्धती)
15. पुरन्धीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति । (— अरुन्धती)
16. सुहृदिव प्रकटस्य सुखप्रदां , प्रथमभेकरसामनुकूलताम् ।
पुनरकाण्डविवर्तनदारुणः परिशिनष्टि विधिर्मनसो रुजम् ॥
(— कन्युनी)
17. आविर्भूतज्योतिषां ब्राह्मणानां , ये व्याहारास्तेषु मां संशयो भूत्वा
भद्रा ह्येषां वाचि लक्ष्मीर्निषक्ता , ते वाचं विष्णुतार्था वदन्ति ॥
(— अरुन्धती)

पञ्चम - अंक

1. तेजस्तेजसि शाम्यतु । (चन्द्रकेतु)
2. उपचारस्तारामैत्रकं चक्षुराग इति । (-सुमन्त्रः)
3. औहेतुः पक्षपातो यस्तस्य नास्ति प्रतिक्रिया ।
स हि स्नेहात्मकस्तनुरन्तर्भूतानि सील्यति ॥ (सुमन्त्रः)
4. वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाधते । (-कुमारो)
5. न रथिनः पादचारमभियुज्यतीति । (चन्द्रकेतु)
6. लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः । (सुमन्त्रः)
7. अप्रतिष्ठे कुलज्येष्ठे, का प्रतिष्ठा कुलस्य नः । (चन्द्रकेतु)
8. ऋषयो राक्षसीमाहुर्वाचमुन्मत्तदृप्तयोः ।
सा योनिः सर्ववैराणां, सा हि लोकास्य निष्कृतिः ॥ (-लवः)
9. कामं दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं कीर्तिं सूते दुर्हृदो निष्प्रजान्ति
शुद्धां शान्तां मत्सरं मङ्गलानां धेनुं धीराः स्मृतां वाचमाहुः ॥ (-लवः)
10. सिद्धं ह्येतद्वाचि वीर्यं द्विजानां बाह्वीवीर्त यत्तु तत्क्षत्रियाणां
(-लवः)

षष्ठ - अंक

1. न किञ्चिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति ।
तत्तरस्य किमपि ह्यत्वं, यो हि यस्य प्रियो जनः ॥
(-विद्याधरः)
2. सर्वमतिमात्रं दोषाय । (विद्याधर)
3. महार्घस्तीर्थानामिव हि महतां कोऽप्यतिशयः । (-लवः)
4. स्नेहश्च निमित्तसर्वपेक्षः इति विप्रतिषिद्धमेतत् ।
(-रामः)

5. व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोपि हेतुः
 न खलु बहिरुपाधीन्प्रीतयः संश्रयन्ते ।
 विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं
 इवति च हिमरश्माबुद्गते चन्द्रमन्तः ॥
 (- रामः)

6. न तेजस्तेजस्वीं प्रसृतमपरेषां विषहते,
 स तस्य स्वी भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः ।
 मयूरख्यैश्चान्नं तपति यदि देवो दिनकरः
 किमग्निर्गो ग्रावा निकृता इव तेजसि वपति
 (- रामः)

7. प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति । (- कुश)

8. हृदयं त्वेव जानाति प्रीतिशोभं परस्परम् । (- कुश)

9. चिरं ध्यात्वा निहित इव निर्माय पुरतः,
 प्रवासे चाश्वासं न खलु न करोति शिथिलः ।
 जगज्जीर्णारण्यं भवति च कलत्रेहुपरते
 कुक्कुलानां राशौ तदनुहृदयं पच्यत इव ॥
 (- राम)

सप्तम - अंक

1. साक्षात्कृतधर्माणो महर्षयः । (- राम)

2. की नाम पाकाभिमुखस्य जन्तुर्द्वाराणि देवस्य पिधानुमीक्ष्य
 (- गङ्गा)

3. अब्याहतान्तः प्रकाशा हि देवताः सत्त्वेषु । (- लक्ष्मणः)

4. आपातदुःसहः स्नेहसंवेगः । (- पृथिवी)

5. सानुषङ्गानि कल्याणानि । (- लक्ष्मणः)

* रत्नावली *

- रचयिता - हर्षवर्धन
उपाधि - राजा, कविन्द्र
कुल अंक - 4
विधा - नाटिका
कवि का समय - 606-648 ईस्वी
प्रधान रस - शृंगार

प्रमुख पात्र

- नायक - उदयन, कौशाम्बीनरेश (हीरललित)
नायिका - रत्नावली (सागरिका) (मुग्धा)
विद्रुषक - "वसन्तक" (राजा का नर्म-सचिव)
प्रधानमन्त्री / अमात्य - जोगन्धरायण
विजयवर्मा - उदयन का सेनापति
बाभ्रव्य - उदयन का कञ्चुकी
ऐन्द्रजालिक - अज्जयिनी निवासी जादूगर
वसुभूति - सिंहल के राजा विक्रमबाहु का प्रधानमन्त्री
रत्नावली या सागरिका - सिंहल के राजा विक्रम-
बाहु की पुत्री तथा "नायिका"

वासवदत्ता - उद्घन की पत्नी
 काञ्चनमाला - वासवदत्ता की सेविका
 सुसङ्गता - रत्नावली की सेविका
 चूतलतिका - दासी
 निपुणिका - दासी
 वसुन्धरा - द्वारपालिका (प्रतीहारी)

* वासवदत्ता मकरन्दोद्यान में "अशोकवृक्ष" के नीचे मदन (कामदेव) का पूजन करती है।

* प्रहसून (कामदेव)

अंकों की संख्या -

प्रथम अंक	मदनमहोत्सव
द्वितीय अंक	कदलीगृह
तृतीय अंक	संकेतक
चतुर्थ अंक	ऐन्द्रजालिक

मकरन्दो

प्रमुख सूक्तयः -

प्रथम - अंक

मंगलाचरण -

पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां,
 शम्भो सस्पृहलोचनप्रयपशं यान्त्या तद्वाराधने।
 ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वेदोद्गमोत्कम्पया
 विरिलिष्यन्कुसुमाञ्जलिर्गिरिजया क्षिप्तोऽन्तर पादवः॥

अलंकार - काव्यत्रिंश
छन्द - शार्दूलविक्रीडित

ओत्सुवयेन कृतवरा सहभुवा व्यावर्तमाना द्विधा .
तेस्तेर्बुन्धुवधूजनस्य वचनेनीताभिमुख्यं पुनः ।
दृष्टवाग्रे वरमानसाध्वसरसा गौरी नवे संगमे
संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायाऽस्तु वः॥

अलंकार - समासोक्ति
छन्द - शार्दूलविक्रीडित

2. मद्भाग्योपचयादयं समुद्धितः सर्वे गुणानां गणः ॥
(-सूत्रधार)
3. आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः ।
(-सूत्रधारः)
4. कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः । (-योग-धरायण)
5. मधुमासो जनस्य हृदयानि करोति मृदुलानि । (-वेदी)
6. प्राची सूचयति दिङ् निशानाथम् । (-राजा)

द्वितीयांकः

1. अथवा न कमलाकरमुज्ज्वला राजहंस्यन्यस्मिन्नभिरमैते ।
(-सुसङ्गता)
2. अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः । (-राजा)
3. कस्मात्परिहासशीलतयैमं जनं लटुं करोषि । (-सागरिका)
4. ईदृशं रूपं मनुष्यलोके न पुनर्दृश्यते । (-विदूषक)
5. रुषाः खलु त्वयाऽपूर्वा श्रीः समासादिता । (-विदूषक)
6. न खलु सखीजने मुक्त एवं कोपानुबन्धः । (-राजा)

7. आत्मा किल दुःखमालिख्यत इति । (-विद्वक्त्रः)
8. धुणाक्षरमपि कदापि संभवत्येव । (-काव्यमाला)

तृतीयः

1. मनश्चलं प्रकृत्येव ... । (-राजा)
2. दिष्ट्या वर्धसे त्वं समीहिताभ्यधिक्या कार्यसिद्ध्या ।
(-विद्वक्त्रः)
3. समयतितरां संकेतस्था तथापि हि कामिनी । (-राजा)
4. तपति प्रावृषि नितरामभ्यर्षजलागमो दिक्सः । (-राजा)
5. किं पुनः साहसिकानां पुरुषाणां न संभाव्यते ।
(-काव्यमाला)
6. तत्कस्मादत्तारण्यरुद्रितं करौषि । (-विद्वक्त्रः)
7. प्रकष्टस्य प्रेम्णः स्थूलितमविषह्यं हि भवति ।
8. ह्यमनभ्रा वृष्टिः । (-राजा) (-राजा)

चतुर्थः

1. दुरवगाहा गतिर्देवस्य । (-राजा)
2. किमिदमकारणमेव पतङ्गवृत्तिः क्रियते । (-वसुभूति)
3. निःशेषं यानु शान्तिं पिशुनजनंगिरी दुर्जया वज्रलेपाः ।
भरतवाम्य
(-राजा)

* नलचम्पू * (प्रथमचम्पूग्रन्थ)

- रचयिता - त्रिविक्रमभट्ट
विधा - चम्पूकाव्य
कुल उच्छ्वास - 7
कवि का समय - 10 वीं शताब्दी पूर्वार्ध
प्रधान रस - शृंगार
उपजीव्य - महाभारत - वनपर्व (नलोपाख्यान)

प्रमुख पात्र

- नायक - नल, निषध देश के राजा
नायिका - दमयन्ती, भीम की पुत्री
वीरसेन - नल के पिता
भीम - दमयन्ती के पिता, कुण्डिनपुर के राजा
भुतशील - नल का मन्त्री
बाहुरु - नल का सेनापति
हंस - दमयन्ती को लुभाने वाला नल दूत
पर्वतक - नल का सेवक
मौहूर्तिक - वीरसेन के ज्योतिषी
पुरोधे - भीम के पुरोहित
सालङ्कायन - वीरसेन के मन्त्री

प्रमुख सूक्तयः -

मंगलाचरण (नमस्कारात्मक) -

जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि

न्युरसि रसनिषेरुश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः ।

तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना -

मसकृदमृतविन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः॥

अलंकार -

छन्द - मालिनी

स्तुति - शङ्कर - पार्वती

जयति मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली

जननजरठकन्दः कोऽपि रुन्दर्पदेवः ।

तदनु पुनरपाङ्गीत्संग सञ्चारितानां

जयति तूष्णशौबिल्लौचनानां विलासः॥

अलंकार -

छन्द - मालिनी

स्तुति - कामदेव

अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानन्दमन्दिरम् ।

वन्दे रसान्तरप्रीढं श्रोतः सारस्वतं बहत् ॥ ३ ॥

छन्द - अनुष्टुप्

अलंकार - श्लेष

स्तुति - सरस्वती भारती

५. प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः ।

भवन्ति रुस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्थियः॥

अलंकार - दीप्ति

5. अधमालापवृत्तिष्ठा कुशासनपरिग्रहा ।
ब्राह्मीव दीर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला ॥
अलंकार - श्लिष्टोपमा
6. काचोऽप्युर्ध्वैर्मणीयते ॥
अलंकार - साङ्गोरूपक
7. सद्रूषणापि निर्दोषा सखरापि शुक्लामला ।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा ॥
अलंकार - विरोधाभास
8. करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती ।
अलंकार - श्लिष्टोपमा
9. सर्वसहाः सूरयः ॥
अलंकार - संसृष्टि
10. नेको रसः रुवेः ॥
11. वेत्ति विश्वम्भरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम् ।
12. दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनपयोधरा ॥
13. महनीया महानुभावा भवन्ति ।
14. सौख्यस्यायतनं भवन्ति रसिकाः रुदर्पशस्त्रं स्त्रियः ॥
15. युवज्जनोन्मादिनी यौवनश्रीः ।
16. ते धन्या न्यपतन्येषां रुदर्पसदृशो दृष्टाः ।
17. कान्तित्युन्नतचेतसोऽपि कुतरे नाम्नेव निम्नं मनः ॥

साहित्यदर्पण

रचयिता - आचार्य विश्वनाथ
 पिता - चन्द्रशेखर
 पितामह - श्रीमन्नारायण / नारायणदास
 पुत्र - अनन्तदास
 समय - 14 वीं शताब्दी
 विभाजन - परिच्छेदों में = 10 परिच्छेद
 कारिकाएँ - 760
 उपाधि - साधिविग्रहिक, महापात्र

परिच्छेद	परिच्छेदों के नाम	विषय - वस्तु
1.	काव्यस्वरूपनिरूपण	काव्य प्रयोजन, मम्मट के काव्य लक्षण का छाड़न, तथा स्वकाव्य लक्षण का स्थापन
2.	वाक्यस्वरूपनिरूपण	वाक्य तथा पद के लक्षण के पश्चात् शब्द शक्तियों का विवेचन
3.	रसस्वरूपादिनिरूपण	रस निष्पत्ति का विवेचन, रस निरूपण के साथ-साथ नायक - नायिका भेद
4.	काव्यभेद निरूपण	ध्वनिकाव्य (उत्तम), गुणीभूत - व्यङ्ग्यकाव्य (मध्यम) का निरूपण
5.	व्यञ्जनाव्यापारनिरूपण	ध्वनि सिद्धान्त के विरोधी मतों का छाड़न और व्यञ्जन का समर्थन
6.	दृश्यश्रव्यकाव्यनिरूपण	नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित विषयों का प्रतिपादन तथा सबसे बड़ा परिच्छेद - 300+ कारिकाएँ

7.	दोषनिरूपण	दोष निरूपण
8.	गुणविवेचन	तीन गुणों का विवेचन
9.	रीतिविवेचन	वेदभी, गौड़ी पाञ्चाली आदि रीतियों का वर्णन
10.	अलंकार निरूपण	अलंकारों का सौदाहरण वर्णन जिनमें 12 शब्दालंकार, 70 अर्थालंकार कुल - 89 अलंकारों का वर्णन

मंगलाचरण

शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी ।

अपहृत्य तमः सन्ततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु ॥

शरदकालीन चन्द्रमा के समान सुन्दर कान्तिवाली
श्रुतिशास्त्र आगमादि प्रसिद्ध वह भगवती सरस्वती मेरे
हृदय में विद्यमान अज्ञानान्धकार को नष्ट करके सम्पूर्ण अर्थों
को अर्थात् वाच्य, लक्ष्य तात्पर्य तथा व्यङ्ग्यरूप अर्थों
को सर्वथा प्रकाशित करें ।

* अलंकार - उपमा

* छन्द - आर्या

* मंगलाचरण विधा - नमस्कारात्मक (वाग्देवी सरस्वती)

काव्यप्रयोजन

* विश्वनाथ के अनुसार -

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादत्यधियामपि ।

काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ॥

काव्य ऐसी वस्तु है जिससे अल्पबुद्धि वाले मानव को भी बिना किसी कष्ट साधना के धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हुआ करती है। अतः काव्य क्या है ? इसका निरूपण किया जा रहा है।

* मम्मट के अनुसार -

काव्यं यशसोऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवितरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासमिततयोपदेशयुजे ॥

* कुतक (बक्रोष्मिजीवितम्) के अनुसार -

1. चतुर्वर्गफलप्राप्ति -

धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारकमोदितः ।

काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाहादकारकः ॥

2. व्यवहार के औचित्य का ज्ञान -

व्यवहारपरिस्पन्दसौन्दर्यं व्यवहारिभिः ।

सत्काव्याधिगमादेव नूतनौचित्यमाप्यते ॥

3. अन्तश्चमत्कार -

चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम् ।

काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते ॥

* भामह के अनुसार -

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धम् ॥

* अग्निपुराण के अनुसार -

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कुवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

त्रिवर्गसाधनं नाद्वयम् इति च ।

* विष्णुपुराण के अनुसार -

काव्यालापाश्च ये केचिद्गीतकान्यखिलानि च ।
शब्दमूर्तिधरस्येते विष्णोरंशा महात्मनः ॥

* काव्यलक्षणविचारविमर्श *

* आचार्य विश्वनाथ पाँच प्रसिद्ध काव्यलक्षणों का खण्डन करते हैं -

1. आचार्य मम्मट का खण्डन -

" तददोषो शब्दार्थो सगुणावनलङ्करी पुनः क्वापि ।"

(i) अदोषो - अतिव्याप्तिदोष

उदा. -

'न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदस्यस्तत्राप्यसौ
तापसः ।'

प्रयुक्त उदाहरण में "विधेयाविमर्शदोष (अवि-
मृष्टविधेयांश) है ।

(ii) शब्दार्थो - सगुणो - 'सरसो' का प्रयोग

(iii) अनलङ्करी पुनः क्वापि - "उत्कर्षाधायकत्वात् ।"

काव्यस्य शब्दार्थो शरीरम्, रसादिश्चात्मा गुणाः शौर्या-
दिवत्, दोषाः कणत्वादिवत्, रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्, अलङ्काराः
कृत्कबुद्धादिवत् इति ।

इस प्रकार यह उदाहरण देकर 'आनन्दकृती' पुनः क्वापि का भी खण्डन करते हैं।

2. कुतक का खण्डन - "वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् ।"

विश्वनाथ - वक्रोक्तेरलङ्काररूपत्वात्

उदा. - यः कौमारहरः स एव हि वस्त्रा...

3. भोज का खण्डन -

अदोषं गुणवत्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् ।

एसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विदीति।

4. आनन्दवर्धन का खण्डन - "काव्यस्यात्मा ध्वनिः ।"

उदा. - श्वभूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसे एव प्रलीक्य । ... - 'स्ववचनविरोधादेवापस्तम्।

5. वामन का खण्डन - "रीतिरात्मा काव्यस्य ।"

आचार्य विश्वनाथ का मत -

काव्य लक्षण - वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।

रस - "रस्यते इति रसः ।"

अर्थात् जो आस्वादित हो वह रस है। रस से रस, रसाभाव, रसाभास का ग्रहण होता है।

1. रस का उदाहरण -

"शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय छिन्धिच्छनेः...

2. रसाभाव का उदाहरण -

"यस्यालीयत शल्कसीग्नि जलधिः प्रष्टे जगमण्डलं-

3. रसाभास का उदाहरण -

"मधु द्विरेफः क्षुसुमैकपात्रे पयो प्रियां स्वप्नुर्वीर्यम्।

वाक्यस्वरूप — 1. वाक्य 2. महावाक्य (रामायण, महाभारतदि)
 वाक्य = " वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासन्निभुक्तः पदोच्चयः ।"
 योग्यता, आकाङ्क्षा तथा आसन्नि से
 युक्त पदसमुदाय को वाक्य कहते हैं।

(1.) योग्यता — पदार्थानां परस्परसंबन्धे बाधाभावः ।
 उदा. — वह्निना सिञ्चति ।

(2.) आकाङ्क्षा — 'प्रतीतिपर्यवसानाविरहः' ।
 उदा. — गौरश्वः पुरुषो हस्ती ।

(3.) सन्निधि — आसन्निर्भुक्ष्यविच्छेदः ।
 उदा. — 'गिरिर्भुक्तमान् देवदत्तेन' ।

पदलक्षणम् —

"वर्णाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः ।"
 अर्थात् पद वे वर्ण हैं जो प्रयोग योग्य
 हुआ करते हैं और किसी एक अनन्वित अर्थ के
 बोधक हुआ करते हैं ।
 यथा — घट, पटादि ।

शब्दशक्ति —

अर्थ तीन प्रकार का होता है — वाच्य, लक्ष्य तथा व्यङ्ग्य
 स्वरूप —
 वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः ।
 व्यङ्ग्यो व्यञ्जनया ता स्युस्तिष्ठः शब्दस्य शक्तयः ॥

अर्थात् अभिधा के द्वारा बोधित होने वाला अर्थ वाच्य, लक्षणा के द्वारा बोधित होने वाला अर्थ लक्ष्य, व्यञ्जना से बोधित होने वाला अर्थ व्यङ्ग्य कहलाता है।

1. अभिधा -

तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्निमाभिधा ।

सङ्केतो गृह्यते जातो गुणद्रव्यक्रियासु च ॥

संकेतितार्थ - गुण, द्रव्य, क्रिया, जाति से होती है।

यथा - 'गामानय' -

2. लक्षणा - सास्नादिमत्पिण्डानयनमर्थः ।

मुख्यार्थबाधे तद्भुक्ती ययान्योऽर्थः प्रतीयते ।

रूढे प्रयोजनाद्वाठसौ लक्षणा शक्तिरार्पिता ॥

अर्थात् मुख्यार्थ का बाध होने पर, मुख्यार्थ से सम्बन्धित, मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ, रूढि के कारण अथवा प्रयोजन के कारण, जिस शक्ति द्वारा होता है वह शक्ति 'अर्पित' लक्षणा कहलाती है।

* अन्य नाम - अहत्स्वार्था

* रूढि में (8), प्रयोजन में 82 = 40

* यह फिर से 'पदगत' और 'वाक्यगत' से दो प्रकार की होती है।

* 1. पदगत -

उदा. - गङ्गायां घोषः

2. वाक्यगत -

उदा. - अपकृतं बहु तत्र किमुक्ते
सुजनता प्रथिता भवता

* इस प्रकार लक्षणा के सम्पूर्ण भेद (80) होते हैं। परम्।

व्यञ्जना -

विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते परः ।

सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च ॥

अर्थात् अभिधादिकों के विरत हो जाने पर जिस वृत्ति के द्वारा दूसरा अर्थ का बोधन होता है वह शब्द में तथा अर्थादिक में व्यञ्जना है ।

शाब्दी व्यञ्जना

१. अभिधामूला व्यञ्जना -

अभिधार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते ।

संज्ञार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना साभिधाश्रया ॥

उदा. - संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता ।

अर्थः प्रकारणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य संनिधिः ॥

विशेष उदा. - सखायचक्रो हरिः ।

२. लक्षणामूला व्यञ्जना -

लक्षणीपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम् ।

यया प्रत्याख्यते सा स्याद्व्यञ्जना लक्षणाश्रया ॥

उदा. - "गङ्गायां द्यौषः" ।

जलमय प्रवाह (मुख्य) → तटादि रूप (लक्ष्य) →
शीतलता और पवित्रता (लक्षणामूलक व्यञ्जक)

आर्थी व्यञ्जना

१. वाच्य - वक्तृवाक्यप्रस्तावदेवाकाल वैशिष्ट्य -

उदा. - 'कालो मधुः क्षुपित एष च पुष्पधन्वा

धीरा वहति रतिच्छेदहराः समीराः ।

२. लक्ष्य - बोद्धवैशिष्ट्य -

उदा. - निः शेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागीउधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तेषां मुः ।

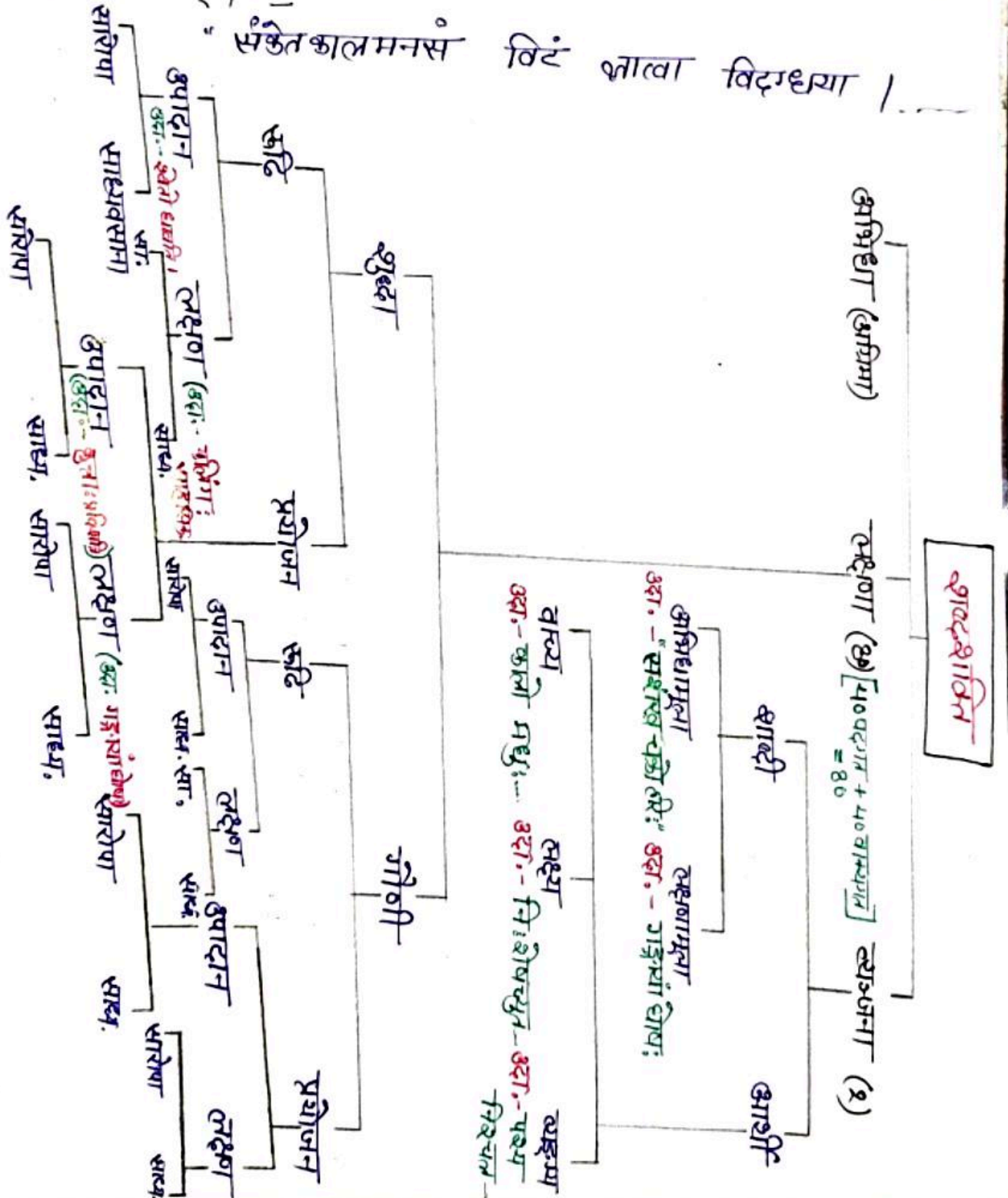
काकुर्वेशिष्य —

गुरुपरतन्त्रतया वत द्वतरं देशमुखी गन्तुम्।
 ३. व्यङ्ग्य (अन्य सन्निधि)

पश्य निश्चल निष्पन्दा बिसिनीपत्रे रजते वनाका

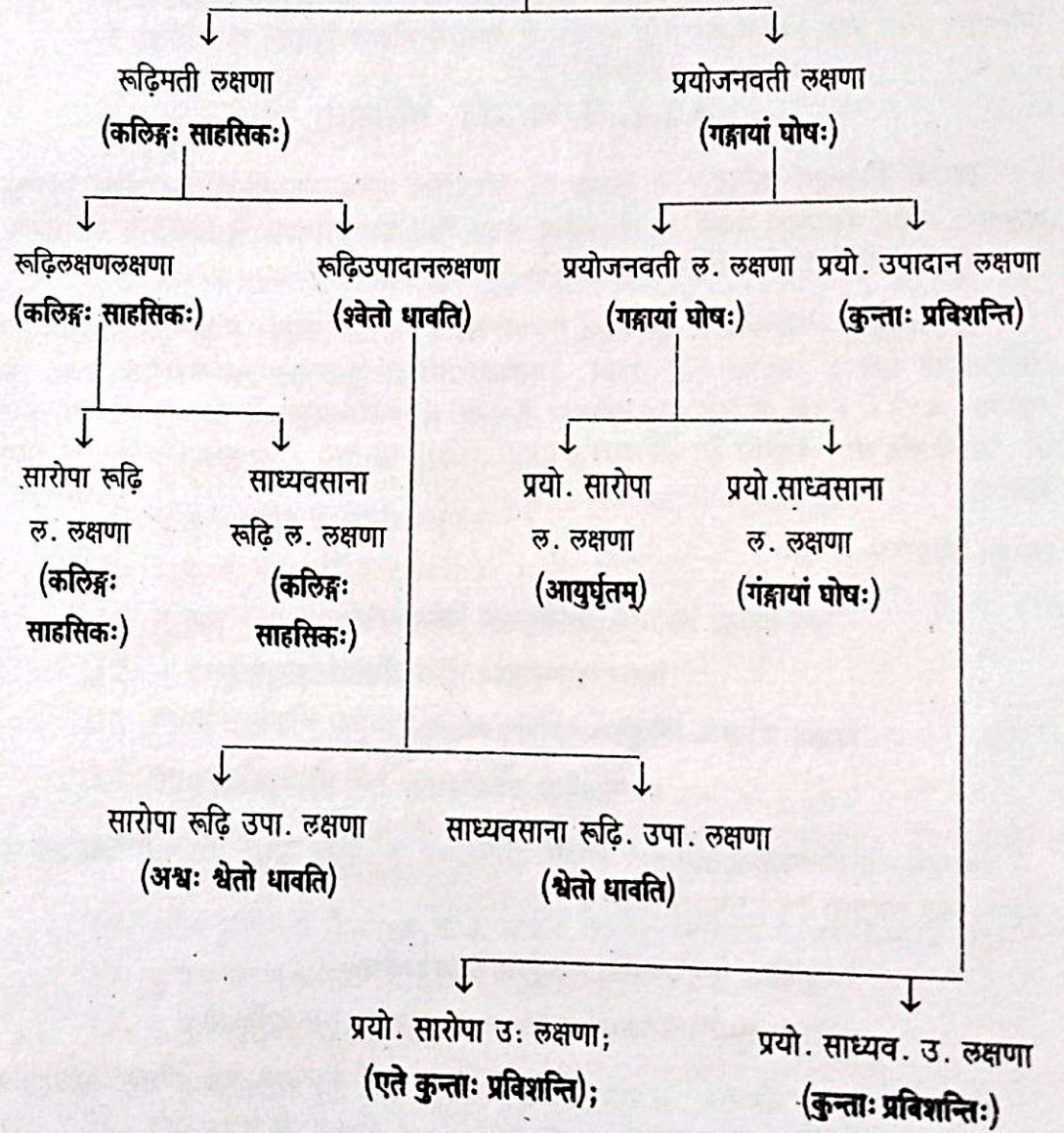
चैष्टावैशिष्य —

संकेतकालमनसं विटं ज्ञात्वा विदध्या।



लक्षणा के भेद

लक्षणा



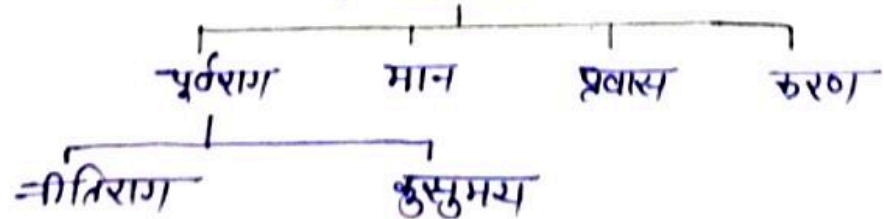
रसनिरूपण -

क्र.	रस	स्थायिभाव	वर्ण	देवता
1.	शृंगार	रति	श्याम	विष्णु
2.	हास्य	हास	शुक्ल	ब्रह्मा
3.	करुण	शोक	कपीत	यमराज
4.	रोद्र	क्रोध	लाल	रुद्र
5.	वीर	उत्साह	सुवर्ण (गोरे)	महेन्द्र/इन्द्र
6.	भयानक	भय	कृष्ण	काल
7.	बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
8.	अद्भुत	विस्मय	पीत	गन्धर्व
9.	शांत	शम (निर्वेद)	शुक्ल (कुट्टपुष्प, वन, चद्रवत)	लक्ष्मीनारायण
10.	वात्सल्य	स्नेह		

शृंगार -

1. संभोग

2. विप्रलाभ



हास्य

1. स्मित
2. हसित
3. अतिहसित
4. विहसित
5. अवहसित
6. अपहसित

* वीर

दानवीर

कर्ण

धर्मवीर

युधिष्ठिर

दयावीर

महावीर

राम

चतुर्थ परिच्छेद

काव्यभेद —

काव्यं - ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्यं चेति द्विधा मतम् ।
वाच्यातिशयिनि व्यङ्ग्य - ध्वनिस्तत्काव्यमुत्तमम् ॥

अर्थात् काव्य (रसात्मक वाक्य) के दो भेद होते हैं-

1. ध्वनि (उत्तमकाव्य), 2. गुणीभूतव्यङ्ग्य (1^ह काव्य) इन दोनों काव्यभेदों में - ध्वनिसंज्ञक काव्य जिसे सर्वोत्तम काव्यप्रकार कहा गया है, वो वह है जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ अधिक सुन्दर (अतिशय चमत्कारजनक) हुआ करता है ।

1. ध्वनि —

भेदौ - ध्वनेरपि द्वाष्टदीरितौ लक्षणाभिधामूलौ ।
अविवक्षितवाच्योऽयौ विवक्षितान्यपरवाच्यस्य

अर्थात् ध्वनिकव्य दो भेद हैं - 1. लक्षणामूलक ध्वनिकव्य, 2. अभिधायक ध्वनिकव्य जिसमें प्रथम की "अविवक्षितवाच्य" तथा द्वितीय को विवक्षितान्यपरवाच्य कहा गया है ।

-ध्वनि (18) → (उत्तम)

२ भेद = अविवक्षित वाच्य (लक्षणाभूला ध्वनि) 16 भेद = विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधा मूलाध्वनि)

अर्थान्तरसङ्कुचित (अजहत्स्वार्थ)
उदा. - कदली कदली, करभः
करभः, ---]

अत्यन्ततिरस्कृत (जहत्स्वार्थ)
उदा. - निःश्वासांश्च श्वा-
दर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशित।

असंलक्ष्यकृतव्यङ्ग्य (रसादि ध्वनि)

संलक्ष्यकृतव्यङ्ग्य

रस भाव रसाभास भावाभास भावोदास भास्योद्य भाव्योद्य भावशान्ति

शब्दशक्त्युद्भव

वस्तुरूप
उदा. - पथिक ! नात्र
धस्तरमास्ति--)

अलंकाररूप
उदा. - दुर्गलङ्घितविग्रहः

अर्थशक्त्युद्भव (12 भेद)

शब्दार्थशक्त्युद्भव (उभयवाक्यमूल)
उदा. - हिमशुक्लचन्द्र
अचिरः --

२. गुणीभूतव्यङ्ग्य (मध्यम) -

अपरं तु गुणीभूतव्यङ्ग्यं वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये ।
अर्थात् गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य वह है जिसमें
प्रतीति होने वाला व्यङ्ग्यार्थ, वाच्यार्थ की अपेक्षा
अनुत्तम अथवा गुणीभूत (अप्रधान) लगा करता है।

भेद -

तत्र स्यादितराङ्गं काक्काक्षिप्तं च वाच्यसिद्धयङ्गम् ।
संदिग्धप्राधान्यं तुल्यप्राधान्यमस्फुटमगूढम् ।
व्यङ्ग्यमसुन्दरमेवं भेदास्तस्योदिता अष्टौ ॥

गुणीभूतव्यङ्ग्य (मध्यम)

- | | |
|--|--|
| 1. इतराङ्ग व्यङ्ग्य
उदा. - अयं सरसनीलधी,
पीनस्तनविमर्दनः ।... | 5. तुल्यप्राधान्य -
उदा. - आहाणातिक्रम-
त्यागो भवामिव भूमेः। |
| 2. काक्काक्षिप्तव्यङ्ग्य
उदा. - मश्नामि कोऽवशातं समरे
न कीपाद्दुःशासनस्य रुधिरं... | 6. अस्फुटव्यङ्ग्य -
उदा. - सन्धीं सर्वस्वहरं
विग्रहे पाणनियतः। |
| 3. वाच्यसिद्धव्यङ्ग्य
उदा. - दीपयन्त्रोदसीरन्ध्रमेष ज्वलति
सर्वतः। | 7. अगूढव्यङ्ग्य -
उदा. - अग्निं लोभ्युषणा
सतां धर्मोपदेशिना |
| 4. संदिग्धप्राधान्यव्यङ्ग्य
उदा. - हस्ते किञ्चित्परिवृत्तधैर्यः... | 8. असुन्दरव्यङ्ग्य -
उदा. - वाणीरकुजोडुनि
शत्रुनिकोलाहल शृण्वत्या। |

काव्यभेद

-द्वनि (उत्तम) भेद-18

गुणीभूतव्यङ्ग्य (मध्यम)

अविवक्षितवाच्य (लक्षणा)- 2

विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधा)- 2

अर्थान्तरसंक्रमित

उदा.- कदली, कदली
करभः करभः

अत्यन्ततिरस्कृत

उदा.- निःश्वासान्ध इवा-
दशविन्दमा

असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य
(रसादि ध्वनि)

संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य
(शब्दशक्त्युद्भव, अर्थ,
उभयः)

इतराङ्ग (अयं सस्म.) काकाक्षिप्त (मध्यमि कैश्च) वाच्यसिद्ध (दीपयन्त्रोदसी) संदिग्धप्राधान्य (हस्तु निमित्त) तुल्यप्राधान्य (ब्रह्मणानिष्ठ) अस्फुट (सन्धौ) अगूढ (अनेन) अस्फुर (वागीरकु)

षष्ठ - परिच्छेद

काव्य

दृश्य
रूपक - 10, उपरूपक - 18

श्रव्य

गद्य

पद्य

मिश्र

रूपक -

नाटकमय प्रकारं भाषायायोगसमवयवमिति।
इहाभ्यागाङ्कवीक्ष्यः प्रत्यक्षमिति समुक्तिः कथा
दश।

मुक्तक

सुगमक (प्रबन्ध)

महाकाव्य

अष्टकाव्य

* काव्यप्रकाश *

- रचयिता - आचार्य मम्मट
 समय - 11 वीं शताब्दी उत्तरार्ध
 विभाजन - कारिकाभाग और वृत्तिभाग [10 उल्लास]
 स्थान - कश्मीर
 उपाधि -
 कारिकाएँ - 140

उल्लास	उल्लासों के नाम	विषय - वस्तु
1.	काव्य - प्रयोजन - कारण - स्वरूप निर्णय	मंगलाचरण, काव्य के प्रयोजन उपदेश की त्रिविध शैली, काव्य हेतु तथा काव्य लक्षण
2	शब्दार्थस्वरूपनिर्णय	शब्द परिभाषा, त्रिविध शब्द शक्तियाँ
3.	अर्थव्यञ्जकतानिर्णय	अर्थ की व्याख्या, अर्थ के भेद तथा पूर्ववर्ती आचार्यों के मत
4.	ध्वनिनिर्णय	ध्वनि के भेद, रस एवं निष्पत्ति, उसका आचार्यों द्वारा समालोचनात्मक अध्ययन
5.	ध्वनिगुणीभूतव्यंग्यसंकीर्ण-भेद निर्णय	गुणीभूतव्यंग्य काव्य के आठ भेद, व्यञ्जना विषय अनेक आचार्यों की परिभाषा
6.	शब्दार्थचित्र - निरूपण	काव्य के तृतीय भेद चित्रकाव्य एवं उसके दो भेद, पूर्ववर्ती आचार्यों की परिभाषा

7.	दोषदर्शन	काव्यदोषों की व्याख्या, श्रुतिकट्ट आदि 16 दोषों का वर्णन
8.	गुणालंकार भेद निर्णय	काव्य के गुण तथा उनके भेद, आचार्य वामन के मत का अण्डन
9.	शब्दालंकार - निर्णय	शब्दालंकारों की परिभाषा, उदाहरण, प्रयोग, अपवाद
10.	अर्थालंकार निर्णय	अर्थालंकारों की परिभाषा, उदाहरण, प्रयोग, अपवाद

* मंगलाचरण *

नियतिकृतनियमरहितां हादै कमयीमनन्यपरतन्त्राम् ।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती क्वेर्जयति ॥

अर्थात् नियति के द्वारा निर्धारित नियमों से रहित, केवल आनन्दमात्र स्वभाव वाली कविप्रतिभा को छोड़कर अन्य किसी के अधीन न रहने वाली नवरसों से युक्त होने से मनोहारिणी काव्य सृष्टि की रचना करने वाली कवि की भारती (वाणी - सरस्वती) सर्वोत्कर्षशालिनी है।

अलंकार - व्यतिरेक अलंकार
मंगलाचरण विधा - नमस्कारात्मक
छन्द - आर्या

* काव्यप्रयोजन *

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

1. यश - कालिदासादीनामिव यशः ।
2. अर्थकृते - श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम् ।

3. व्यवहारविदे — राजादिगतौ चिताचारपरिज्ञानम्
 4. शिवितरक्षतये — आदित्यादेर्मयूरादीनामिवानर्थनिवारणम् ।
 5. सद्यः परिर्वृतये — सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादन-समुद्भूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दनम्
 6. कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे —
 * उपदेश की त्रिविध शैली —
 प्रभुसामित — शब्दप्रधानं — वेदादिशास्त्रेभ्यः । गुरु
 सुहृत्सामित — अर्थप्रधानं — पुराणादीतिहासेभ्यश्च । मित्र
 कान्तासामित — शब्दार्थयोर्युगभावेन — विलक्षणं रूपम्
 — पत्नी

* काव्यहेतु *

शक्तिनिपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यविवेक्षणात् ।
 काव्यशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥

* 1. शक्ति, 2. लौक (व्यवहार), शास्त्र तथा काव्य आदिसे पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और 3. काव्य की जाननेवाले गुरु की शिक्षा से अनुसार काव्य निर्माण का अभ्यास, ये तीनों मिलकर, अलग-अलग नहीं (अतः वहाँ "हेतवः" न रहकर 'हेतु' एकवचन का प्रयोग किया है, क्योंकि ये तीनों ही मिलकर काव्य का उद्भव या विकास में कारण हैं।) इस काव्य के उद्भव / विकास में कारण हैं।

1. शक्ति — कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः ।
 2. निपुणता — छन्दोव्याख्याभिधान — विमर्शनाद्
 3. अभ्यास — ये काव्यं कर्तुं विचारयितुं च जानन्ति ।

* काव्यलक्षण *

"तददीर्घो शब्दार्थो सगुणावनलङ्करी पुनः क्वापि"
 अवचिन्तु स्फुटालंकारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः। यथा—
 "यः शौमारहरः स स्व हि वरस्ता स्व...."

* काव्यभेदः *

आचार्य मम्मट ने द्वारा काव्य के तीन प्रकार के भेद बताये हैं—

1. उत्तमकाव्यम् (द्वनिकाव्यम्)
2. मध्यकाव्यम् (गुणीभूतव्यंग्यकाव्यम्)
3. अधमकाव्यम् (चित्रकाव्यम्)

1. उत्तमकाव्य (द्वनिकाव्यम्) —

"इदमुत्तममतिशायिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् द्वनिर्बुद्धेः
 कथितः।" वाच्यार्थ की अपेक्षा जहाँ
 पर व्यङ्ग्यार्थ अधिक चमत्कारयुक्त होता है वह
 उत्तमकाव्य कहलाता है।

उदा.:- निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोधरो....

2. मध्यमकाव्यम् (गुणीभूतव्यंग्यकाव्यम्) —

"अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्"
 जहाँ पर वाच्यार्थ से अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्यार्थ
 न हो वहाँ पर मध्यम काव्य होता है।

उदा.:- ग्रामतरुणं तरुण्या नववज्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।

3. अधमकाव्यम् (चित्रकाव्यम्) -

"शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्वरं स्मृतम्"
अर्थात् व्यङ्ग्यार्थ से रहित शब्दचित्र तथा
अर्थचित्र दो प्रकार का अधम काव्य कहा जाता है।

(i) शब्दचित्रम् -

उदा. - एवच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छोतेतराम्बुच्छटा-

(ii) अर्थचित्रम् -

उदा. - विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद् भवत्युपश्रुत्य...

द्वितीय उल्लास

शब्दशक्ति -

स्याद्वाचकी लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्मिधा।
काव्य में वाचक, लाक्षणिक तथा व्यञ्जक
तीन प्रकार का शब्द होता है।

तीन प्रकार के शब्द	वाचक	लक्ष्यक	व्यञ्जक
तीन प्रकार के अर्थ	वाच्य	लक्ष्य	व्यङ्ग्य
तीन प्रकार की शब्दशक्तियाँ	अभिधा	लक्षणा	व्यञ्जना

→ चतुर्थ भेद - "तात्पर्याख्या शक्ति" (कुमारिल-
भट्ट)

अभिहितान्वयवाद - (कुमारिलभट्ट - पार्थसारथिमिश्र का मत)

वाच्यादि तीन अर्थों के अतिरिक्त तात्पर्यार्थ से भी

वाक्यार्थ की प्रतीति होती है। अतः अभिहित पदों के अन्वय बोध में जो व्यापार चलता है उसकी नियामिका तात्पर्यावृत्ति है। (आरुक्षा, योष्यता, सन्निधि से युक्त तात्पर्यावृत्ति - कुमारलिभट्ट)

अविताभिधानवाद — (प्रभाकर (गुरु) - शालिकुनाथ मिश्र का मत)

इस मत के समर्थक तात्पर्यार्थ विरोधी हैं। इनके मत में अविता पदों का अभिधान होता है न कि अभिहित पदों का अन्वय। वाच्य ही वाक्यार्थ है - (प्रभाकर) शालिकुनाथमिश्र।

अर्थ के उदाहरण -

1. वाच्यमूला व्यञ्जना -

मातृगृहोपकरणमद्य खलु नास्तीति साधितं त्वया।

2. लक्ष्यमूला व्यञ्जना -

साध्यन्ती सखि सुभगं क्षणे - क्षणे दूनासि मत्कृते।

3. व्यञ्जनामूला व्यञ्जना -

पश्य निश्चलनिष्पन्दा बिसिनीपत्रे राजते वलाका।

* शब्द का लक्षण -

साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः।

जो शब्द साक्षात् संकेतित अर्थ को अभिधा शक्ति द्वारा कहता है वह वाचक शब्द कहलाता है। संकेतग्रह चार प्रकार के होते हैं -

(1.) जाति (2.) गुण (3.) क्रिया (4.) यदृच्छा

1. भ्रमर - जाति, गुण, क्रिया, यद्दृष्टा में संकेतग्रह मानते हैं।
2. भीमांसक - केवल जाति में।
3. त्रैशयिक - जातिविविध व्यक्ति में।
4. बोद्ध - अपोह।
5. व्याकरण - उपाधि में।

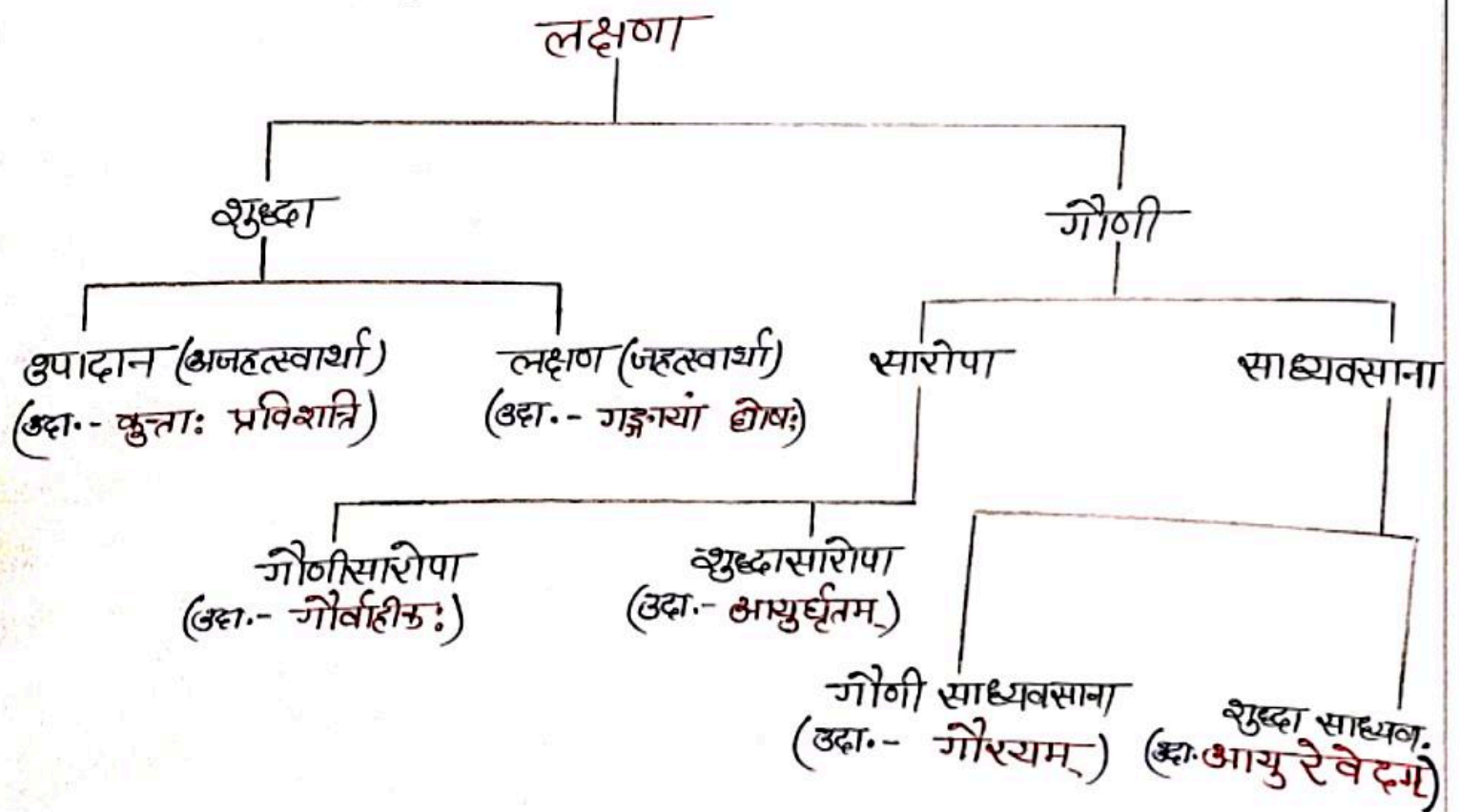
अभिधा शब्दशक्ति -

स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधीच्यते।

लक्षणा शब्दशक्ति -

मुख्यार्थवाधे तद्योगे कृदितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥

लक्षणा षड्विधा -



व्यञ्जना शब्दशक्ति -

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते ।
संयोगाहोरेवाच्यार्थधीकृद् व्यापृतिरुज्जनम् ॥

व्यञ्जना

शाब्दी

आर्थी (10)

वाच्य लक्ष्य व्यङ्ग्य
(वक्तृबोद्धव्यकानूनां वाम्य-

अभिधामूला (14)

(उदा.- संयोगो विप्रयोगश्च.)

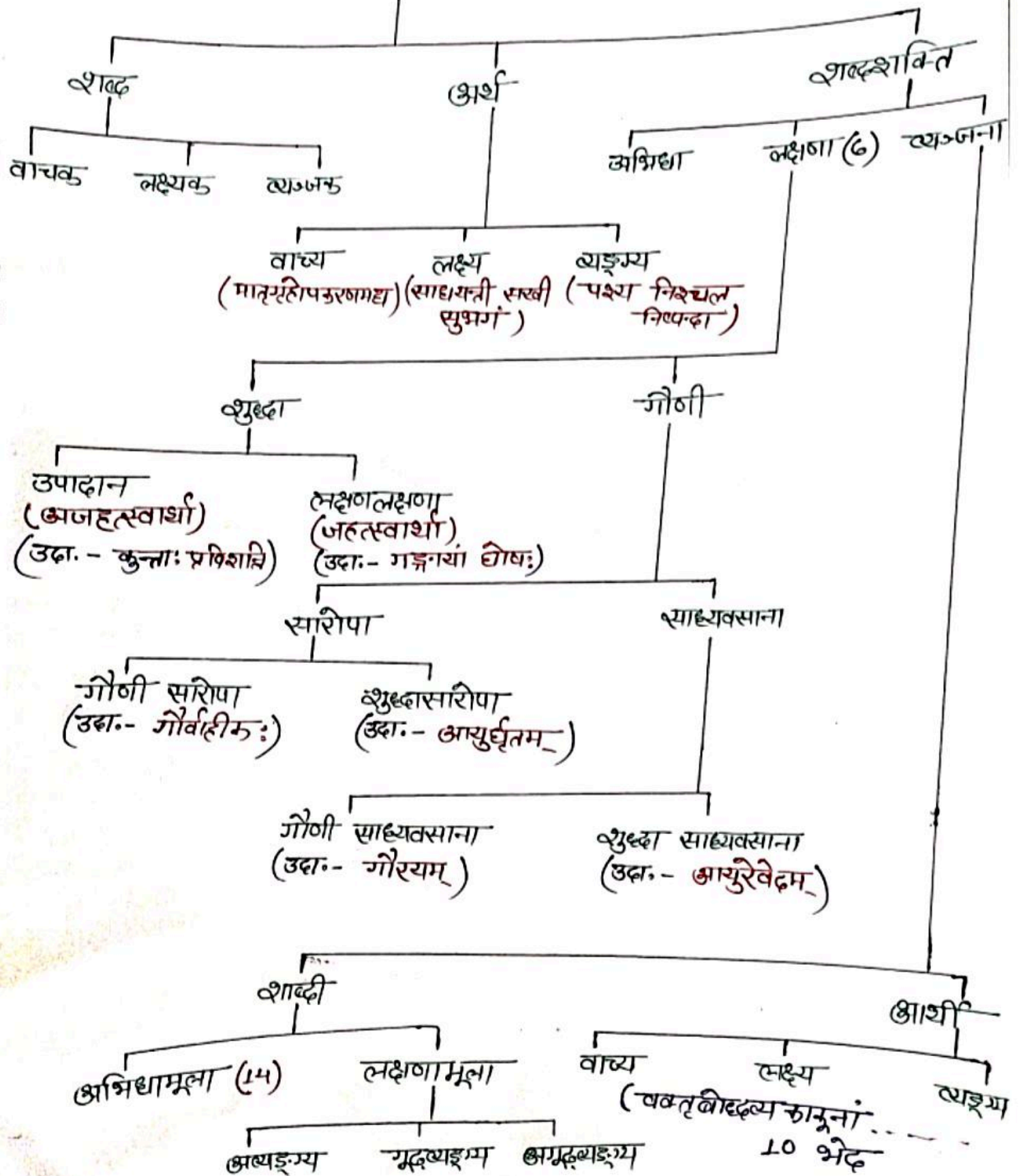
1. संयोग - साक्षाच्छब्दो हरिः।
2. विप्रयोग - असाक्षाच्छब्दो हरिः।
3. साहचर्य - राम लक्ष्मणौ दाशस्थौ।
4. विरोधिता - रामार्जुनगतिस्तयोः।
5. अर्थ - स्थाणु भज भवच्छिदे।
6. प्रकरण - सर्व आनाति देवः।
7. निङ्ग - कृपितो मकरध्वजः।
8. अन्यशब्द समीधि - देवस्य पुराणतेः
9. सामर्थ्य - मधुना मत्त कोकिलः।
10. औचित्य - पातु वी दयितामुष्णम्
11. देश - भात्यत्र परमेश्वरः।
12. काल - चित्रभानुर्विभाति।
13. व्यक्ति - मित्रे भाति (रवि)
14. स्वर - उद्देशात्।

लक्षणाभूता (2)

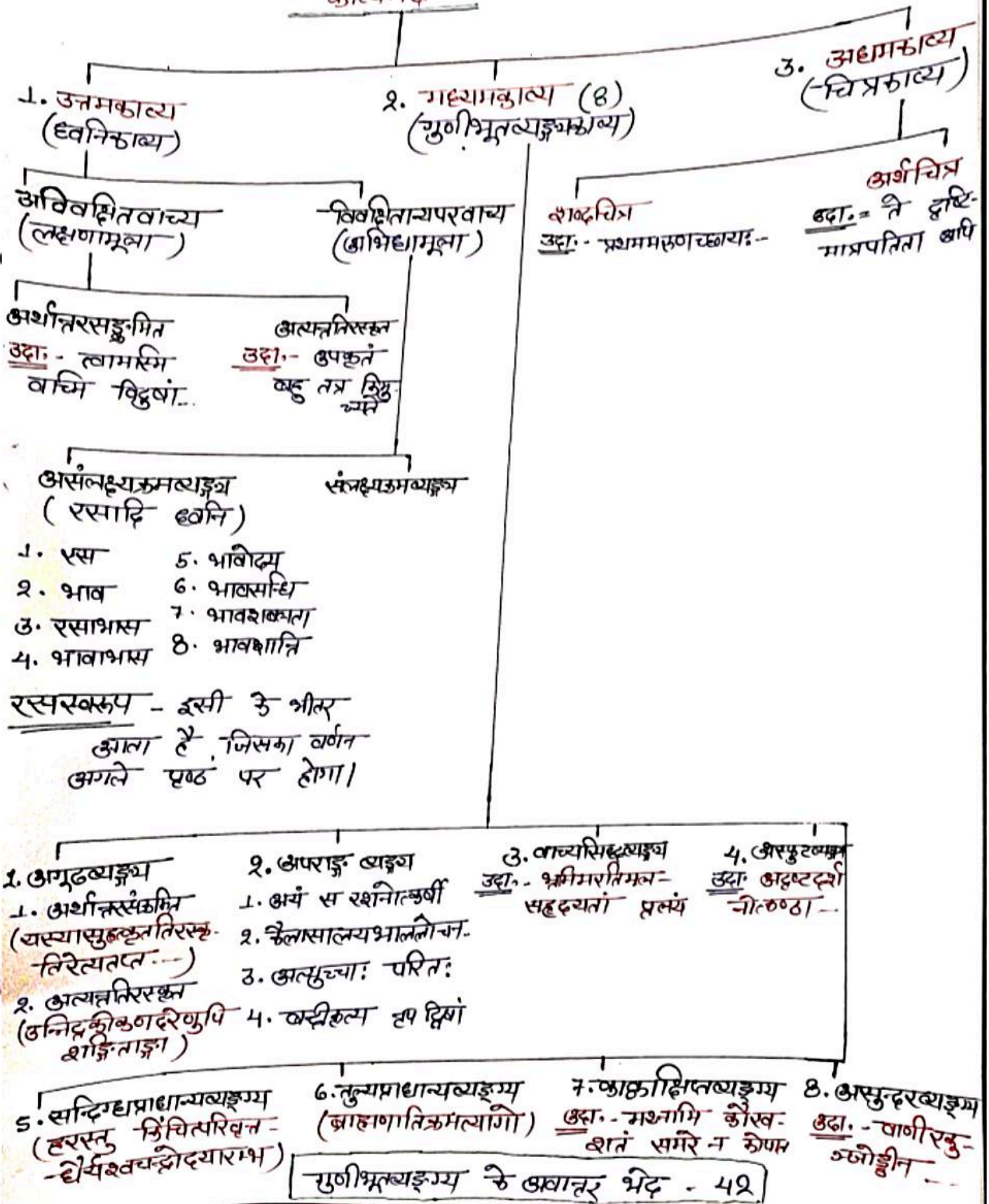
गूढ (गुह्यं विवक्षित-
स्मि) अगूढ (श्रीपरिचया-
ज्ज्ञा)

1. वक्ता - अति प्रथमं
अलङ्कृतं -
2. बोद्धव्य - औचित्यं
हीक्यं -
3. कानु - तथाभूतं दृष्ट्वा
4. वाक्यवैशिष्ट्य - तदा भग्न
गण्डस्थानमिमांसे
5. वाच्यवैशिष्ट्य - उद्देशोऽयं
सस्मरदती -
6. अन्यसमीधि - सुदलनार्द्रगमाः
स्वश्रुता -
7. प्रस्ताव - श्रूयते स्थागभिषिद्धि
8. देश - अन्तः यूय कुसुमा-
9. काल - गुरुजनपरवश -
10. चेष्टा - दुरोपात्तनिस्तेर-

शब्दशक्तियों का समन्वयात्मक रूप



काव्यभेद



रसस्वरूप

मम्मट → कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च ।
एतदिः स्थायिनी लोके तानि चिन्तात्प्रकाशयिष्ये ॥
विभावा अनुभावास्तत्र कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ।

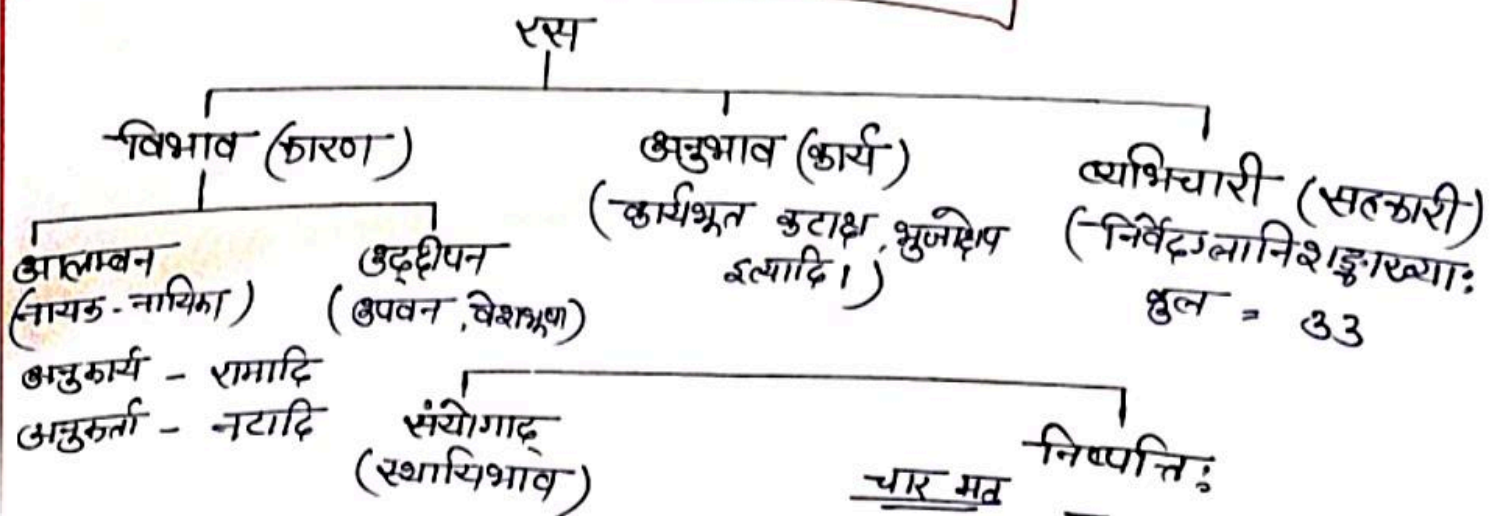
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः ॥

अर्थात् लोक में रति आदिरूप स्थायीभाव के जो कारण, कार्य एवं सहकारी कारण होते हैं यदि वे नाटक या काव्य में प्रयुक्त होते हैं तो क्रमशः विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव कहलाते हैं । और इन विभाव (आलम्बन या उद्दीपन) आदि से व्यक्त वह रति आदि रूप स्थायी भाव रस कहलाता है ।

आचार्यभरत का रससूत्र -

“विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः ।”

— “न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते ।”
आचार्य भरत के उपर्युक्त कथन से ही
उपर्युक्त रससूत्र की स्थापना हुई ।



चार मत - निष्पत्ति

क्रं.	मत - स्थापक	संयोग / साब-ध	वाद / मत	दर्शन
1.	भट्टलोल्लट	विभाव = उत्पाद्य - उत्पादक अनुभाव = गम्य - गमकभाव व्यभिचारि = पोष्य - पोषकभाव	उत्पत्तिवाद	उत्तरमीमांसा (वेदान्त)
2.	शंखु	अनुमाप्य - अनुमापकभाव	अनुमितिवाद	न्याय दर्शन
3.	भट्टनाथ	भीज्य - भीजकभाव	भुक्तिवाद	सांख्य दर्शन
4.	अभिनवगुप्त	व्यङ्ग्य - व्यङ्गकभाव	अभिव्यक्तिवाद	ध्वनिवादी आ. आनन्दवर्धन के अनुयायी

रसों की संख्या -

1. भरत - 8
2. मम्मट - 9 (शास्त्र)
3. विश्वनाथ - 10 (वात्सल्य)

रस के आठ प्रकार -

शृङ्गारहास्यकरुणरीतिवीर भयानकाः ।
बीभत्सोद्भुतसंज्ञो चैत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः ॥

1. शृङ्गार -

- (i) संभोग (परस्पर अवलोकन, आभिगमन, अधरपान, पुम्बन)
- (ii) विप्रलम्भ (ईर्ष्या, विरह, प्रवास)

1. सम्भोग -

उदा. - शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छने -

उदा. - त्वं मुग्धाक्षि विनेव कृपुलिकया धत्से मनोहरिणी -

2. विप्रलम्भ-क्षंगार -

(1) अभिलाष (2) विरह (3) ईर्ष्या (4) प्रवास (5) व्याप

काव्यदोषाः -

"मुख्यार्थ-हतिर्दोषो यस्य च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः ।
उभयोपयोगिनिः स्युः शब्दाच्चास्तेन तेष्वपि सः" ॥

दोष - 6 प्रकार के हैं -

1. पददोषाः - च्युतसंस्कृत्यादयः - 16
2. वाक्यदोषाः - श्रुतिकट्टादयः - 13
3. पदांशगतदोषाः - पदांशगतिनिहितार्थादयः - 7
4. वाक्यगतदोषा - प्रतिक्लवर्णादयः - 21
5. अर्थदोषाः - अपुष्टादयः - 23
6. रसदोषाः - रसस्य स्वशब्दवाच्यता द्यादयः - 13

काव्यगुण -

"ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः ।

उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचनस्थितयो गुणाः ॥

अर्थात् आत्मा के शौर्यादि-धर्मों के समान
आत्मभूत प्रधान रस के जो अपरिहार्य एवं उत्कर्षाधायक
हैं वे 'गुण' कहलाते हैं ।

गुण - 1. माधुर्य 2. भोज 3. प्रसाद

1. माधुर्य -

उदा. - आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गरे दूतिकारणम् ।
करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयाक्लिप्तम् ॥

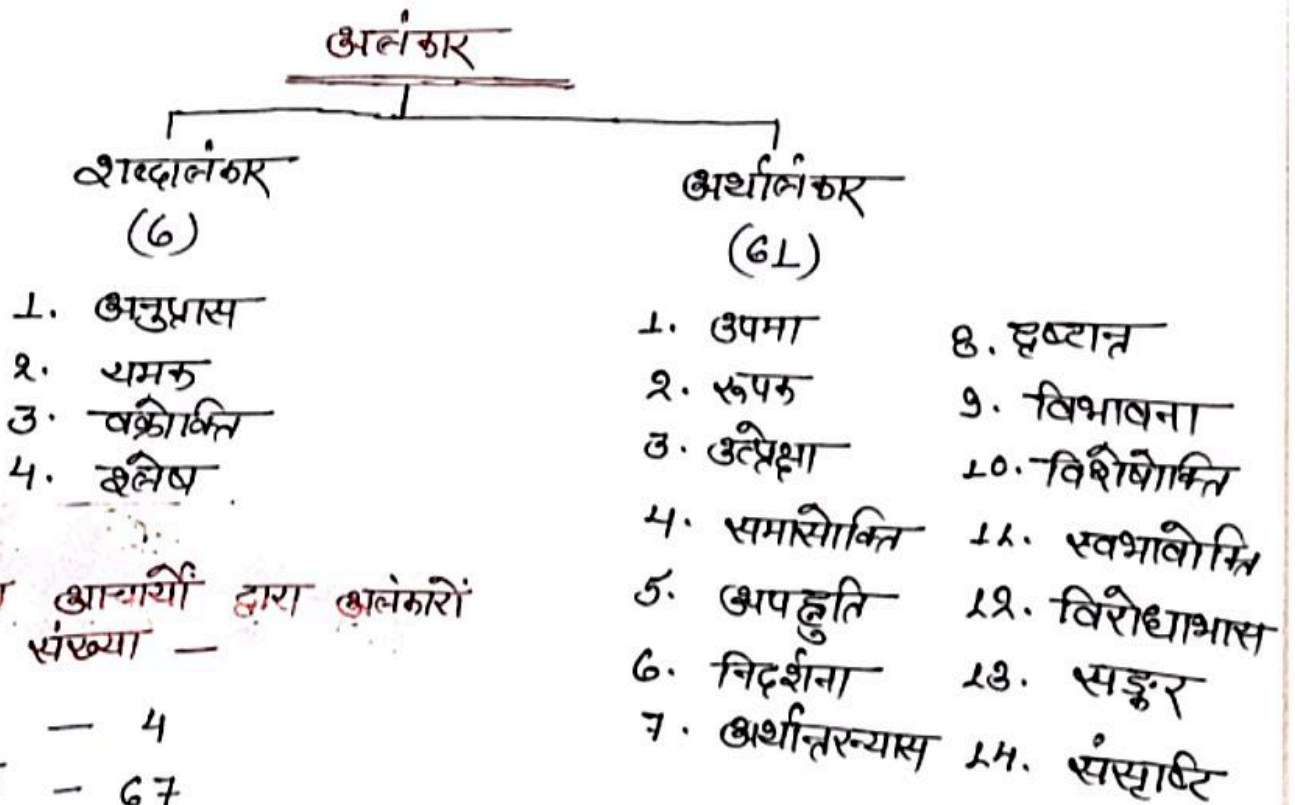
2. औज -

उदा. - दीप्त्यात्मविस्तरहेतुरौजो वीररसस्थिति ।

3. प्रसाद -

उदा. - शुक्ले-धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः ।

गुणों के अङ्गक तत्त्व - वर्ण, समास, रचना



* विविध आचार्यों द्वारा अलंकारों की संख्या -

1. भरत - 4
2. मम्मट - 67
3. विश्वनाथ - 78
4. कुतक - 20
5. भामह - 38
6. दण्डी - 37
7. आनिपुराण - 23

हस्त-यात्रीक

कर्ता → आचार्य आनन्दवर्धन

काल → 850 ई०

स्थान → कश्मीर

अपाधि → राजानक

विभाजन → 4 उद्योत

टीका → अभिनवगुप्त कृत लीचन टीका

कारिकाएँ → 116 (16 + 33 + 47 + 17)

~~प्रश्न~~

1. मङ्गलाचरण

स्वच्छार्कसरिताः स्वच्छस्वच्छायायासितन्दवः ।

त्रायन्ता वी मधुरिणीः पुपन्नात्तिर्द्धिर्दा नरवाः ॥

अपनी इच्छा से ही सिंह का रूप धारण करने वाले मधु नामक असुर के शत्रु, भगवान विष्णु के अपनी कान्ति से चन्द्रमा की तिरस्कृत करने वाले और शरण में आने वाले के कण्ठों को काट देने वाले नाखुन तुम सब की रक्षा करें ।

• वीर रस

• व्यतिरेक मङ्गलार , उत्प्रेक्षा मङ्गलार , अपहृति

• आशीर्वादात्मक मङ्गलार

2. दृवनि विरौघी मतः -

1. काव्यस्यात्मा दृवनिः सुधीः समाम्नातपूर्वः

तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुर-तान्यै ।

केचिद् वाचां स्थितमविषयं तत्त्वमुच्यते

तैः वृमः सहस्रमनः प्रीत्यै तत्स्वरूपम् ॥

इस कारिका के तीन मुख्य प्रतिपाद्य विषय हैं:-

1. दृवनि सिद्धान्त की प्राचीनता

2. दृवनिविरौघी मत तथा दृवनि का स्वरूप

3. ग्रन्थ का प्रयोजन आदि अनुबन्ध चतुष्टय

1. 'दृवनि सिद्धान्त की प्राचीनता' काव्यस्यात्मा दृवनिः सुधीः
समाम्नातपूर्वः'

काव्य की आत्मा दृवनि है, इस तथ्य की विद्वानों ने पहली ही पकट कर लिया था। 'सुधीः' में बहुवचन का प्रयोग परम्परा का द्योतन करता है। यह सम्भव है कि यह सिद्धान्त मौखिक रूप से प्रचलित रहा हो और आनन्दवर्धन ने विद्वानों के विचारों को ग्रन्थ रूप में निबद्ध किया करके सिद्धान्त रूप में दृवनि की स्थापना की।

उ. 1. 'सहस्रमनः प्रीत्यै' - प्रयोजन / अधिकारी

2. 'तत्स्वरूपं वृमः' - विषय

उ. शास्त्र - विषय - प्रतिपाद्य - प्रतिपादक

शास्त्र - प्रयोजन - साध्य - साधन

इतिवर्ती ३५ :-

1. अज्ञानवादी (तस्याज्ञानं जगदुत्पत्तेः) [निम्न कोटि]

ये इति के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके तीन मत पक्ष अन्तः सम्मुख हैं।

(a) प्रथम अज्ञानवादी [तदव्यतिरिक्तः कोट्यै इति निर्गोति]

' काव्य के अक्षर की रचना शब्द और अर्थ से होती है मतः उनके सौन्दर्य के आश्रय तत्त्व ही आत्मा से रहते हैं।

शब्द → शब्दालङ्कार (अनुप्रासदि)

अर्थ → अर्थालङ्कार (उपमादि)

रस → रसादि (३)

रीति → वैदग्ध्य आदि

दक्षि → उपनागरिका आदि

इनसे भिन्न अन्य कोई इति नामक काव्य के चारुत्व का हेतु नहीं है।

(b) द्वितीय अज्ञानवादी [प्रवर्तितोऽपि सत्त्वविद्वन्मनोग्राहि ताम् अस्माकम्]

इन्होंने परम्परा का स्थाय लिया है। उनका

कहना है कि इति की कल्पना इतिवादियों ने

है। परन्तु प्राचीन काल में सहृदय जन काव्य के रस का आस्वादन शब्दों और अर्थों के चारुत्व से करते रहे हैं। ऐसी कोई परम्परा नहीं है। यदि कोई काव्य में इति के चारुत्व का अन्वेषण भी करे तो लोग उसे नहीं मानेंगे।

(1) तृतीय अभाववादी [अपूर्वसमारोप्यमात्रकरी]

ध्वनि नाम का एक अलङ्कार होगा जो काव्य में चारुत्व का हेतु होगा। ध्वनि नामक कोई नया अपूर्व पदार्थ नहीं है। [अलङ्कारों में समावेश]

सारांश → अभिप्राय या वाक्यार्थ में व्यञ्जना या ध्वनि का अन्तर्भाव।

2. अक्षिप्तवादी (भाक्तमाहुरस्तमन्यै) (ग्रह्य लौटि)

यै ध्वनि का लक्षणा के अन्तर्गत मानते हैं। इनके अनुसार व्यंग्य की प्रतीति लक्षणा द्वारा ही होती है।
अक्षिप्त गुणवृत्ति

3. अलक्षणीयतावादी (केचिद् वाचां स्थितमविषयै तत्तदुच्यते) (अग्र लौटि)

'ध्वनि के तत्त्व की वाणी से व्याख्या नहीं की जा सकती। वह सहृदयों के हृदयों के द्वारा केवल संवेद्य ही है। अतः ध्वनि की परिग्रहा करना उचित नहीं है।'

अनन्तर उपर्युक्त तीन ध्वनिविरोधी मत आनन्दवर्धन के प्रसिद्ध हैं। इनके बाद ही भी निम्न आचार्यों के ध्वनि का खण्डन किया।

महनागक, कुल्लुक, महीमनह, ईशेन्द्र

3. ध्वनि-स्वरूप तथा ध्वनि विरोधी मतों का खण्डन :-

तस्य हि हृत्तं स्वरूपं स्वस्वत्काव्योपनिषद्भूतम्, अतिरमणीयम्, अणीयसीभिरपि चिन्तनकाव्यलक्षणाविधयिनीं लुब्धुभिरनुमीलितम् । अथ च रामायणमहाभारतपञ्चतानि लक्ष्ये लक्ष्मिं प्रसिद्धवदरं लक्ष्यतां..... ।

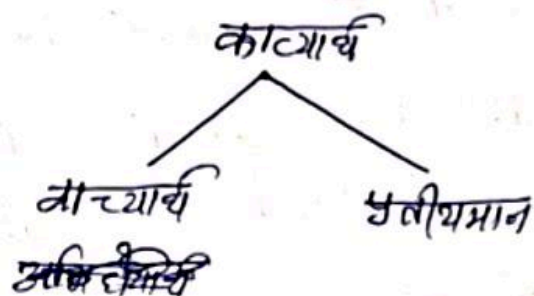
इस वाक्य में ध्वनि का जो रूप प्रस्तुत किया गया है, उसी से ध्वनि-विरोधी और पाँच मतों का निराकरण होता है :-

1. स्वस्वत्कवि → द्वितीय अभाववादी (प्रकीर्ततेऽपि स्वस्वविदुः...)
2. उपनिषद्भूतम् → तृतीय अभाववादी (अपूर्वलिपारब्धमात्रकरणे)
3. रमणीयम् → भक्तिवादी (लक्ष्यार्थ लक्ष्यार्थ) ^{अलक्ष्यार्थ में अन्तर्भाव}
4. अणीयसीभिरपि... → प्रथम अभाववादी (अणुचक्षुः में अन्तर्भाव)
5. लक्ष्मिं प्रसिद्धवदरं → अवलम्बनीयतावादी

4. अर्थ के दो भेद :- (काव्यार्थ)

[तद्व्यतिरिक्तः कोऽयं ध्वनि]

1. यौऽर्थः सहस्रश्लाघ्यः काव्यालौकि व्यवस्थितः ।
वाच्यप्रतीयमानारब्धौ तस्य भेदावुक्तौ ह्यती ॥२॥



नत्र वाच्यः प्रसिद्धो यः प्रकाररूपमाविर्भिः ।

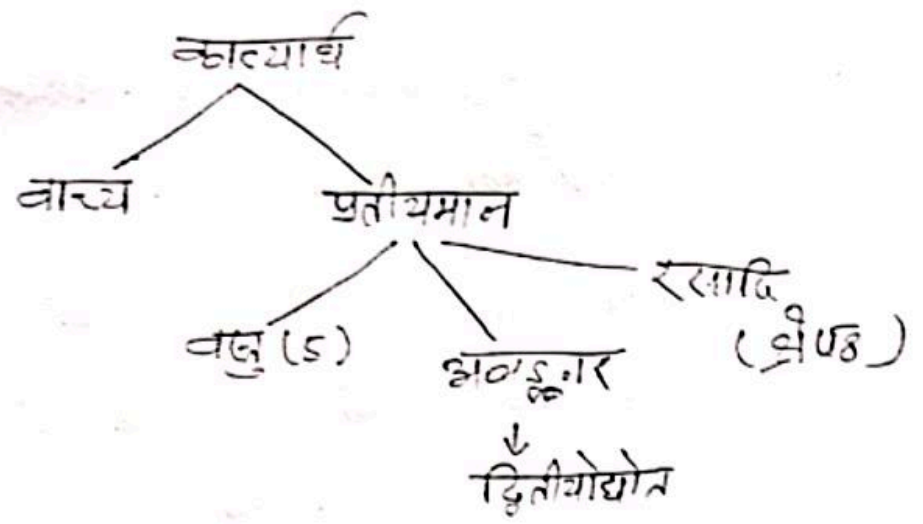
वृद्धा व्याक्तः सौख्यं काव्यलङ्कारविद्याविभिः ।

ततो नैव पुनश्च ॥३॥

उन्में जो वाच्य अर्थ प्रसिद्ध है उपमा आदि
वस्तु से प्रकारों से उसे अन्य काव्यलङ्कारकारों ने
(भाष्यार्थ)
वृद्धा व्याख्यान किया ।

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्तुवस्ति वाणीषु महाकवीनाम् ।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति भावयन्मिवाङ्गनाम् ॥४॥

यह प्रतीयमान अर्थ महाकवियों की वाणी में
वाच्यार्थ से भिन्न कुछ अन्य ही वस्तु है ।
जो प्रतीयमान अर्थ सहृदय में अत्यन्त प्रसिद्ध है
तथा वह प्रसिद्ध अलङ्कारों (उपमादि) और प्रतीत
होने वाले अवयवों (मुख, नेत्रादि) से स्वयं
पृथक् प्रतीत होता है । जैसे स्त्रियों में लावण्य
पृथक् रूप से दृष्टिगोचर होता हुआ, सारे शरीर
से व्यतिरिक्त होने वाला, सहृदयों की आँखों के
लिए अमृत के समान कुछ और ही बन जाता है
। वैसे ही यह प्रतीयमान अर्थ है ।



वल्लु इवनि

वाच्यार्थ	प्रतीयमान	उदाहरण
① विधि	निर्णय	[अम! चामिळि ...]
② निर्णय	विधि	[स्वप्नरुत निमज्जति...]
③ विधि	विधि / निर्णय × अनुभव	[अज ममैककथा...]
④ प्रतिर्णय	अनुभव	[पाथय तावत्परीद...]
⑤	विषयरूप	[कथ्य वा न भवति...]

काव्यस्यात्मा एव एवाद्यस्तथा चादिकवैः पुरा।

कौञ्चद्वयवियोगाच्चः शौकः स्वर्गकवमागतः ॥५॥

काव्य की आत्मा वही अर्थ है, जैसे कि आदिकवि पुराकाल में कौञ्च पक्षी के जोड़े के वियोग है अत्यन्त शोक ही भाति जब कि वह स्वर्गकवन भक्त था।

6. सरस्वती स्वामि तदर्थविभु निष्पन्नमाना महती कवीनाम् ।
आलोकायामान्यमित्यस्ति परिसंपूर्णं प्रतिभाविशीषम् ॥ 6 ॥

उस प्रतीयमान (रसादि) अर्थ तत्त्व की प्रवाहित करने वाली
महाकवियों की वाणी उनके अलौकिक प्रतिभा की व्यक्त करती
है । उदाहरण - कालिदासादि ।

7. शब्दार्थशास्त्रज्ञानमात्रेणैव न वेद्यते ।

वेद्यते तु स तु काव्यार्थतत्त्वज्ञेनैव केवलात् ॥ 7 ॥

वह (रसादि) अर्थ केवल शब्द - अर्थ के शास्त्रों द्वारा नियंत्रित
द्वारा के ज्ञान मात्र से नहीं जाना जाता है क्योंकि वह
तो केवल काव्यार्थ के तत्त्वज्ञ लोगों के द्वारा ही जाना
जाता है ।

8. सौर्धत्तद्वयवित्समर्थयोगी शब्दश्च कश्चन ।

यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयं तौ शब्दावौ महाकवेः ॥ 8 ॥

वह, ^{त्येव} अर्थ है उसकी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य रखने
वाला कोई शब्द है, वे शब्द और अर्थ महाकवि
के द्वारा यत्नपूर्वक प्रत्यभिज्ञेय है । क्योंकि व्यंग्य और
व्यञ्जक के सुन्दर ढंग से प्रयोग करने पर महाकवियों
की महाकवित्व का लाभ है न कि वाच्य - वाचक
रचना मात्र से है ।

9. आवर्तमर्थो यथा दीर्घविरागो यत्नवान् जनः ।

तदुपायतया तद्वदर्थं वार्यं तदादितः ॥९॥

जिस प्रकार आवर्तक चाहते वला व्यक्ति उसका उपाय होने के
कारण दीर्घविराग के लिए यत्नवान् होता है, उसी प्रकार
व्यंग्य चाहने वाला व्यक्ति वार्य शब्द के लिए यत्न करता है।

10. यथा पदार्थद्वारेण वाक्यार्थः सम्प्रतीयते ।

वाक्यार्थपूर्विका तद्वत्प्रतिपत्तव्यं वस्तुनः ॥ 10 ॥

जिस प्रकार पदार्थ द्वारा वाक्यार्थ की प्रतीति होती है, उसी
प्रकार वाक्यार्थ की प्रतीति का द्वारा व्यंग्यार्थ की प्रतीति
होती है।

11. स्वसामाश्रयदर्शनेन वाक्यार्थं प्रतिगृह्यन् ।

यथा व्यापारनिष्पन्नो पदार्थो न विभाव्यते ॥ 11 ॥

12. तद्वत्सर्चेसां सोऽर्थो वाक्यार्थविमुखालम्बनात् ।

कृते तत्त्वार्थदर्शिन्यां स्मृत्यैवावभासते ॥ 12 ॥

जैसे अपनी सामर्थ्य (आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि) से ही
पदार्थ, वाक्यार्थ को प्रकाशित करने हुए भी व्यापार के
पूर्ण हो जाने पर पदार्थ विभक्त रूप में प्रतीत नहीं होते
उसी प्रकार वाक्यार्थ से भिन्न विमुख आत्मा वाले
सहस्रजनों की तत्त्वार्थदर्शिनी दृष्टि में शीघ्र अवभासित
हो जाती है।

12. यन्त्रार्थः अर्थात् वा तार्थगुणतत्त्वमित्यन्तार्थः ।

तन्त्रकर्म काव्यविशेषः एव त्वनिर्दिष्टं यूरतिः कश्चिद्विद्वान् ।

जहाँ (जिस काव्य में) त्वर्ण अपने स्वरूप और शब्द अपने अर्थ की समीक्षा करके इस प्रतीक्षण अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं इस विशेष काव्य को विद्वान् लोग 'ह्वनि काव्य' कहते हैं।

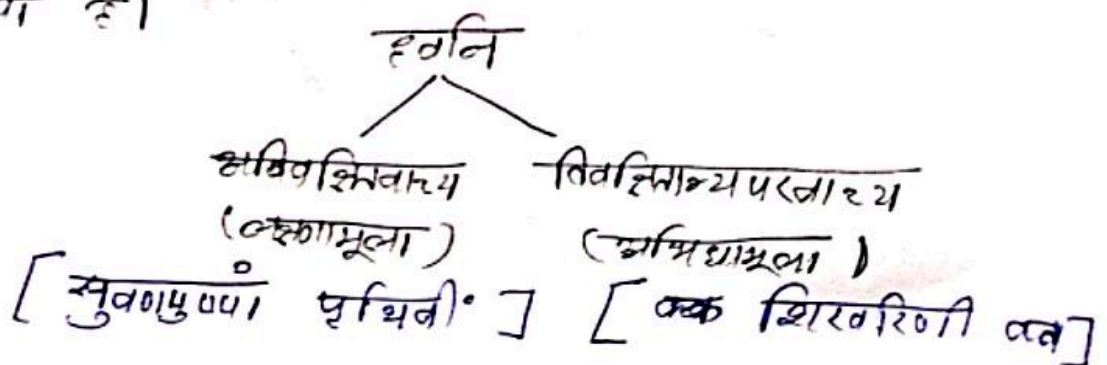
• यह विद्वान् ने तत्त्व है वैयकरणों से है - यद्यपि हि
विद्वान् वैयकरणः, व्याकरणमूलत्वात् त्वनिविज्ञानात् ।

अपने ऊपर दिये विद्वान् श्री ① वान्य ② वान्यक

③ अन्विष्ट-व्यंज्य अर्थ ④ व्याकरण-व्यञ्जना व्यापार

⑤ काव्य इस चोखों को व्यञ्जकत्व की समानता के कारण ह्वनि इस प्रकार से कहा है।

• ह्वनिकर ने इस कारिका के अन्ति में अत्रावर्तिता के
मार्ग के साथ-साथ समाप्तिवि, आशेष, अनुपनिमित्त
विशेषवि, पर्यायीव, अपस्तुति, दीपक, संकर तथा
अपस्तुतिविद्या रत्यादि अङ्गुली में त्वनि की विद्यामन्त्र का
व्यञ्जन किया है।



14. मा चैतद् स्याद् अविवक्षितं स्वनीरिगाह ।

अतित्यागैरथात्यागैर्न चालौ लक्ष्यते तथा ॥ 14 ॥

इसने को अविवक्षित स्वनि का लक्षण नहीं ही राखी
अतित्यागि / अत्यागि दोष के कारण ।

15. एक्यन्तरीणाशक्त्यै यत-व्यापत्त्वं प्रकाशयन् ।

व्यापदौ व्यञ्जकतां विभ्रद् हवन्मुक्तेतिष्यथी भवेत् ॥ 15 ॥

जिस चारुत्व को लक्षणा आदि अन्य शक्तियों द्वारा
प्रकट करना अशक्य है। उसे प्रकाशित करने वाले
एवं व्यञ्जकता (व्यञ्जनाव्यापार) को द्यारण करने वाला
व्यापद स्वनि का विषय होता है।

16. रुदा यै विषयैऽन्यत्र शब्दाः स्वविषयादपि ।

लावण्याद्याः प्रयुक्तानि न भवन्ति पदं स्वने ॥

लक्षणा
रुदि प्रयोजन

प्रयोजनकी लक्षणा में व्यंग्य प्रयोजन होता है और वह
व्यंग्य होता है, उसका बोध लक्षणा से न होकर
व्यञ्जना से होता है लेकिन फिर भी व्यंग्य
की प्रधानता न होने के कारण उसे स्वनि नहीं बल्कि
अविवक्षित कहते हैं।

17. मुख्यं चरितं परित्यज्य गुणवृत्त्यर्थं दर्शनम् ।
यदुद्दिश्य फलं तत्र शब्दो नैव स्वकदम्बगतिः ॥ 17 ॥

जिस फल की उद्देश्य करके मुख्य चरित की
छोड़कर गुणवृत्ति से अर्थ का ज्ञान कराया जाता
है, वही उसके फल की घन शब्द स्वकदम्बगति
(बाधितार्थ) नहीं है।

18. तस्मात् वाचकवाच्ययोर्नैव गुणवृत्तित्यवस्थिता ।
व्यञ्जकत्वमूलस्य ह्यनेः स्वकदम्बगतिः कथम् ॥ 18 ॥

इसलिए ध्वनि भिन्न है और गुणवृत्ति भिन्न है।
फिर भी अक्षर वाचकत्व का आश्रय लेकर ही
अवस्थित है। इसलिए वह ध्वनि का जिसका मूलमात्र
व्यञ्जना व्यापार है, उसका लक्षण कैसे हो सकती है।

वक्तोक्तिजीवितम्

कर्ता → आचार्य कुन्तक

स्थान → कश्मीर

काल → 11वीं शताब्दी

उपाधि → राजानक

दर्शनिक सम्प्रदाय → प्रत्यभिज्ञा दर्शन

विभाजन → 4 उन्मेष

1. मङ्गलाचरः

• चरितगत :-

जगत्त्रितयवैचित्र्यचित्रकर्मविद्यायिनम् ।

शिवं शक्तिपरिस्पन्दमात्रोपकरणं नमः ॥

त्रिगुण के वैचित्र्य रूप अद्भुत कर्म के करने वाले
शक्ति के परिस्पन्दमात्र के उपकरण वाले परम शिव तत्त्व
की हम आराधना करते हैं।

• कारिकागत :-

चन्द कवीन्द्रवक्त्रेन्दुलास्यमन्दिरनर्तकीम् ।

देवीं सुक्तिपरिस्पन्दसुन्दराभिनयाज्ज्वलात् ॥१॥

मैं कुन्तक, कवियों के मुख, रूपी नृत्य निर्वहण में नत
करने वाली, सुभाषितों के विमलरूपी रसात्किादि से
सुशोभित वागारूपा रसरसवती की वन्दना करता हूँ।

2. ग्रन्थप्रयोजन

लौकिक-चमत्कारवैचित्र्यसिद्धये ।

काव्यस्यायमलङ्कारः कौटल्यपूर्व विधीयते ॥ 2 ॥

अलौकिक चमत्कारवैचित्र्यसिद्धये के लिए कोई यह काव्य का अलङ्कार ग्रन्थ निर्मित किया जाता है।

3. काव्यप्रयोजन

1. रत्नविज्ञानोपायः सुकुमारक्रीडितः ।

काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकरकः ॥ 3 ॥

काव्यबन्ध उच्चकुल में संस्कृत राजाकुमारों के हृदयों को आह्लादित करने वाला और कामल मनुष्यों से बड़ा हुआ रत्नविज्ञानोपाय की सिद्धि का मार्ग है।

2. व्यवहारपरिस्पन्दसौन्दर्य व्यवहारिणिः ।

सत्कल्याधिगमादेव नूतनौचित्यमाच्यते ॥ 4 ॥

जो व्यवहार में सदा संलग्न रहने वाले लौकिक लोग नवीन औचित्य सहित लोकचार रूपी सौन्दर्य को प्राप्त करते हैं।

3. चतुर्वर्गपुत्रस्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाहः ।

काव्यामृतरसोन्मत्तचमत्कारो वितन्यते ॥ 5 ॥

काव्य एक प्रकार से अमृत सदृश रस है जिससे काव्यतत्त्वज्ञों के हृदय चमत्कृत हो उठते हैं।

4. काव्यतत्त्वनिरूपण

अलङ्कारिरलङ्कार्यमपीदृश्यं विवेच्यते ।

तदुपायतया तत्त्वं साक्षात्कारस्य काव्यता ॥ ३ ॥

(उपमादि) अलङ्कार और उनके अलङ्कार्य (शब्द/अर्थ) को अलग-अलग करके उनकी विवेचना करना इस (काव्य की उत्पत्ति) का उपाय होने से ही की जाती है। वास्तव में अलङ्कारसहित शब्द और अर्थ अर्थात् तीनों की सम्मिश्रित काव्य है।

अतः तीनों का अलग-अलग विवेचन आवश्यक नहीं है। परन्तु अलङ्कार ग्रन्थों में अलग-अलग विवेचन ही प्रायः दृष्टि-गोचर होता है।

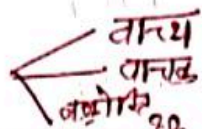
5. काव्यसामान्यलक्षण

शब्दार्थो सहितो वक्रकविव्यापारशालिनी ।

बन्धो व्यवस्थितो काव्यं तद्विदाह्यादकारिणी ॥ ४ ॥

काव्य मन्त्र के आह्लादकारक वक्र कवि व्यापार से युक्त रचना बन्ध में व्यवस्थित शब्द और अर्थ मिलकर काव्य कहलाते हैं।

काव्य-बन्ध



वाच्यवाचकसामान्यलावण्यपरिपूरितः ।

व्यापारशाली लावण्य-विशाली कथं उच्यते ॥

शब्द एवं अर्थ के समान्य तथा लावण्य की सृष्टि करने वाली कवि व्यापार से युक्त सुशीलित-विशाल (पर्वों की संघटना) 'बन्ध' के रूप में जानी जाती है।

अक्षरों की समानता वाले

वक्त्रोक्ति रहित काव्य के उदाहरण :-

1. भण तरुणि रमणमन्दिर..... ।

2. पुकाशस्वाभाव्यं..... ।

शब्द / अर्थ चमत्कार वाले काव्य :-

1. मानिनीजनतिलौचन..... ।

2. कृमावकद्विनि..... ।

‘वस्तुमानं च शोभातिशयशून्यं न काव्यमपीदमस्तीति’।

6.

काव्यविशेषण

वाच्योऽर्थो वाचकः शब्दः प्रसिद्धमिति यद्यपि ।

तथापि काव्यमार्गेऽस्मिन् परमार्थोऽयमेतयोः ॥ ४ ॥

शब्दो विवक्षितार्थे वाचकोऽर्थेषु सत्स्वपि ।

अर्थः सहज्याह्लादकारस्त्वरूपन्दसुन्दरः ॥ ५ ॥

वाच्य = अर्थ, वाचक = शब्द, प्रसिद्धमिति ।

किन्तु काव्य मार्ग में अन्य पर्याय शब्दों के रहते

हुए भी विवक्षित अर्थ का वाचक केका शब्द ही

वस्तुतः शब्द कहलाता है। इसी प्रकार सद्दर्शों को

आनन्दित करने वाला अपने स्वभाव से सुन्दर अर्थ

ही वस्तुतः अर्थ कहलाता है।

7. वक्रोक्ति का अलङ्कार

उभावतावलङ्कार्यो तयोः पुनरलङ्कृतिः ।

वक्रोक्तिरेव चैदमर्थमभङ्गीभणितिरुच्यते ॥10॥

शब्द और अर्थ - दोनों ही अलङ्कार्य हैं तथा दोनों की अलङ्कृति चातुर्यपूर्ण कथन, 'वक्रोक्ति' के रूप में जातक्य है।

8. स्वभावोक्ति - स्वप्न

अलङ्कारकतां तेषां स्वभावोक्तिरलङ्कृतिः ।

अलङ्कार्यतया तेषां किमन्यद्वतिष्ठते ॥1१॥

स्वभावव्यतिरेकेण वक्तुम न युज्यते ।

वल्लु तद्वदितं यस्मिन्नसुषारण्यं प्रसज्यते ॥12॥

शरीर - चेतनलङ्कारः किमलङ्कुरुतेऽपरम् ।

आत्मनैव नात्मनः एकस्यै अवचिदव्यतिरीक्यते ॥13॥

जिन (दण्डी सदृश) आचार्यों के मत में स्वभावोक्ति भी अलङ्कार है उनके मत में और अलङ्कार्य क्या रह जाता है? ॥ स्वभावोक्ति जो जब अलङ्कार माननी तब ठग्ये

भिन्न कुछ अन्य अलङ्कार्य होगा परन्तु स्वभाव के बिना ये अलङ्कार कथन नहीं हो सकता। स्वभावोक्ति की मानने वाले स्वयं अपने कण्ठ पर चढ़ने का उपलब्ध कर रहे हैं।

'स्वप्नं सर्वत्र संसृष्टिरस्वप्नं सङ्कुरस्ततः' ॥14॥15॥

१. साहित्य

वाक्यान् साहित्यावेव प्रतीतं स्फुरतः सदा ।

साहित्याविति तावेव किमपूर्वं विधीयते ॥ १६ ॥ ?

साहित्यमनयोः साक्षात्कृतं प्रति काव्यसौ ।

अन्यूनानतिरिक्तत्वमनोहारियवद्विद्यति ॥ १७ ॥

अतिशय सौन्दर्य के द्वारा प्रशंसा - प्रशंसा के
प्रति वाक्य तथा अर्थ का रूप उच्चयावक विपुल
तथा परस्पर रूपही से रमणीय यह अपूर्व
अवस्थिति साहित्य है ।

॥ 'कवे कर्मः काव्यम्' ॥ २ ॥

साहित्योः भावः साहित्यम् ॥ १७ ॥

इति - भूमिका

१०. वक्ता भेद

कवित्यापारवक्त्रप्रकाराः सम्भवन्ति षट् ।

प्रत्येकं पदवी भेदास्तेषां विच्छिन्नशोभिणः ॥ १८ ॥

१. वर्णविन्यासवक्ता
२. पठपूर्वार्द्ध → १ लटि २ संज्ञा ३ पर्याय ४ उपचार
३. प्रयथाश्रिता → १ संज्ञा २ काव्य ३ पुरुष
४. वाक्यवक्ता
५. प्रकरणवक्ता
६. प्रबन्धवक्ता

१० विशेषण ११ सुष्ठु १२ दृष्टि
१३ लिङ् १४ क्रियादि

चर्णविन्यास वक्रता :- अनुपास

प्रथममरुणाच्छायात्तावत्ततः कनकपुष्पुल्लदनु

५. वाक्यवक्रता वक्ष्यवक्रता

उपस्थिता पूर्वमपाह्य लक्ष्मीं वनं मया सार्धमसि प्रपन्नः।

-रघुवंशम्

५. प्रवरणवक्रता

१. रामायणी मारीचमायामयमाणिष्य

॥ प्रयुज्य समचरितं विलीनं भयं

=किराताकुलीयम्

६. प्रबन्धवक्रता

"कुत्रचिन्महावति रामकथोपनिबन्धे नारळादी

. रामवद्वर्तित्वं न रावणवदिति ।"

७. पदपूर्वार्थवक्रता

३. प्रत्ययाश्रितवक्रता

A. संख्या वैचित्र्य → (क) मैथिली तस्य दाराः

(ख) फुल्लेन्दीवखननानि

B. कारक वैचित्र्य

स्तनद्वन्द्वं मन्दं स्नपयति

C. पुरुष वैचित्र्य

• आम्हणाव्यविपर्ययादि

• अयं जनः प्रपुल्लभः

६. पदपूर्वाद्यवक्रता

- A. रुद्धि → 'रामोऽस्मि सर्वं लब्धे ।'
B. संज्ञा → 'रामोऽसौ' भुवनेषु विक्रमगुणैः पाप्मः ।
C. पर्याय → वामं कम्पज्जवद्विलम्बनमुरा ।
"अङ्गराज ! रेवे लेनापते ! राजवल्लभ
D. उपहार → ~~स्त्रिष्वकारणं~~ लिङ्कारकणिष्पि लम्बस्त्रिम्बे
"हस्तापत्तयं यशः ।"
E. विशेषण →
F. संवृति →
G. वृत्ति →
H. भाववैचित्र्य →
I. वैचित्र्य →
J. विभावैचित्र्य → स दधु दुस्तिं शम्भो - - -

॥. काव्यमार्ग

१. सुकुमार मार्ग (वैदर्भी रीति)

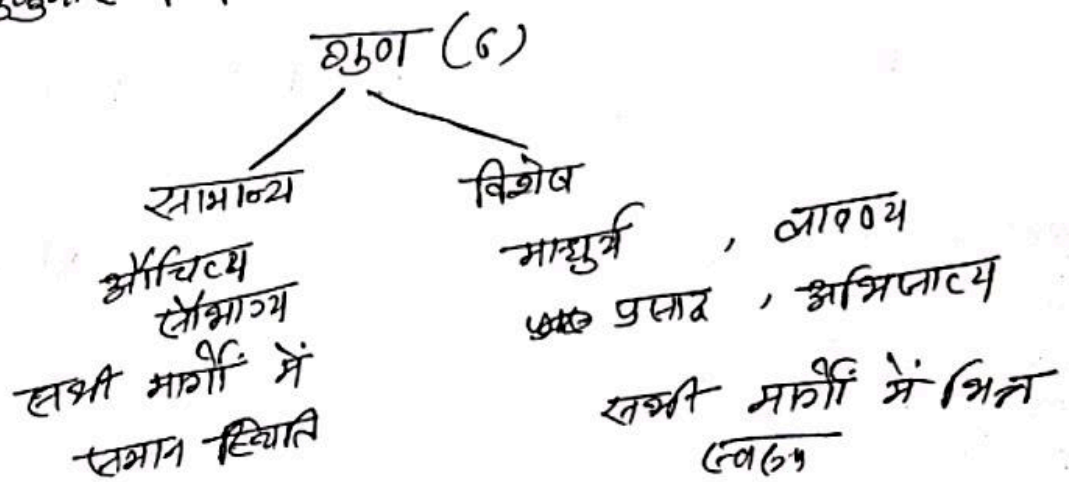
- सहज प्रतिभा, स्वभाविक सौन्दर्य, रसपूर्ण, ...
- माधुर्य, पसाद, लावण्य, अभिजात्य
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष, विष्णु, जर्जरेनदि

२. विचित्र मार्ग

- शब्द कलहारी की जगमगाहट, उच्चैः पंचिक्य
प्रतिग्रान् अर्थ का चमत्कार, पाण्डित्यपूर्ण शैली श्लेष
- माधुर्य, पसाद, लावण्य, अभिजात्य
- भारति, माघ, कालिदास, अश्वघोष

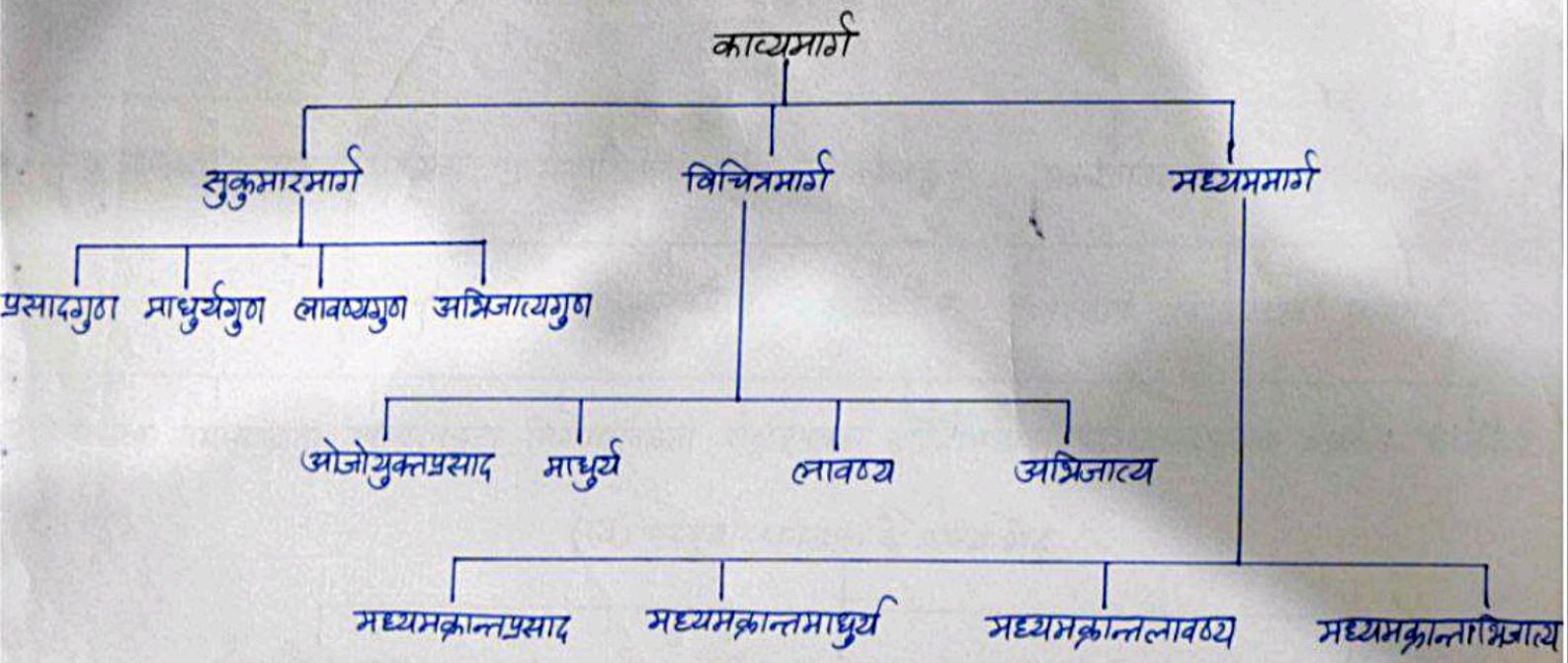
३. महयम मार्ग

ॐ सुकुमार + विचित्र

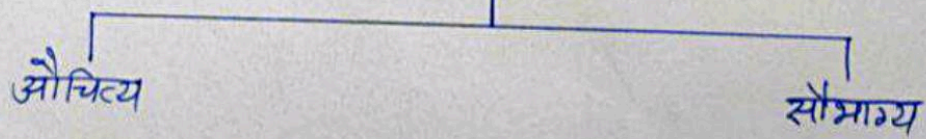


• श्री हर्ष

(ग) काव्य के मार्ग और उसके गुण

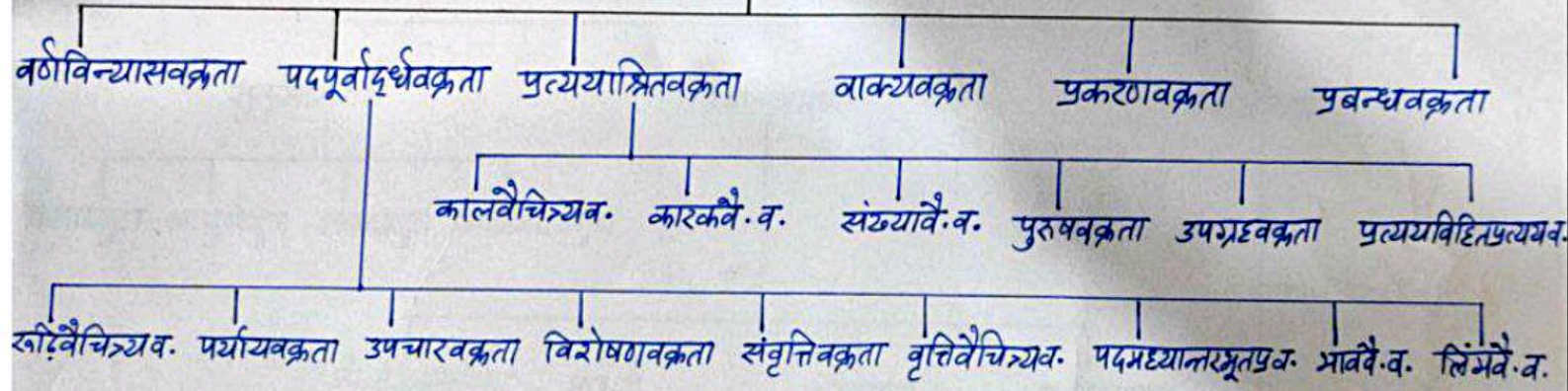


(घ) अन्य प्रकार से मार्ग भेद

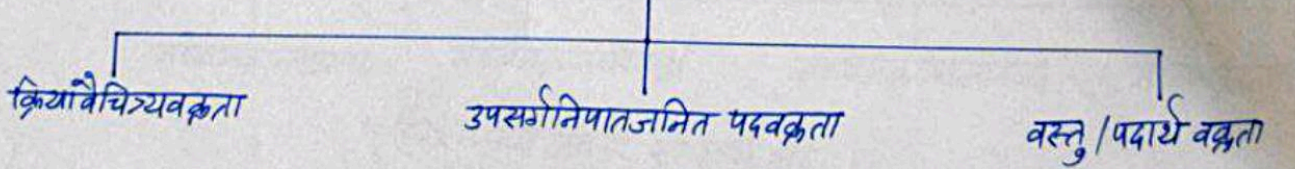


प्रमुख वक्रोक्ति रेखाचित्र

(क) वक्रोक्ति



(ख) पदपूर्वादर्थवक्रता के अन्य भेद



दशरूपक का सामान्य परिचय



- दशरूपक कर्ता – धनञ्जय है।
- धनञ्जय परमारवंश के नरेश वाक्यपतिद्वितीय (मुंज)के राज्य कवि थे।
- दशरूपक “प्रकाश” मे विभक्त है ,इसमें चार प्रकाश है।
- धनञ्जय का समय विद्वानों के मतानुसार (९७४-९९५) दशवीं शताब्दी है।
- दशरूपक ग्रन्थ का आधार ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है।
- दशरूपककार धनञ्जय के पिता का नाम – विष्णु था।
- दशरूपककार धनञ्जय के भाई का नाम धनिक था जिन्होंने दशरूपक पर “आलोक वृत्ति” नाम की टीका लिखी थी।

दशरूपक के प्रथम प्रकाश मे –

रूपक के भेद

भेदक

कथावस्तु

६४ संध्यङ्ग

तृतीयप्रकाश में-

रूपक के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है।

रूपक के भेद

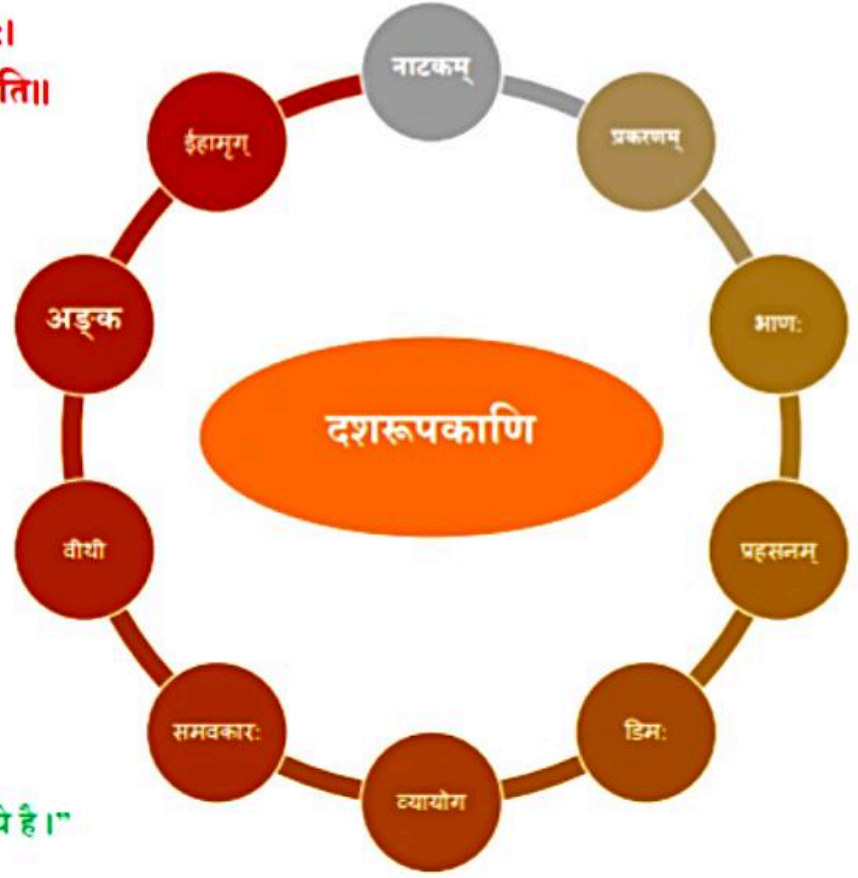


आचार्य धनञ्जय के मतानुसार
“अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्” यह नाटक दृश्य होने से
“रूप” कहलाता है तथा आरोप होने के कारण
“रूपक” कहलाता है ।

❖ रूपम्- “रूपं दृश्यमुच्यते।”

❖ रूपकम् – “रूपकं तत्समारोपात् ।”

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति॥



रूपकों में “वस्तु , नेता , रस ये तीन भेद माने गये है।”
(वस्तुनेतारसस्तेषां भेदकः॥)

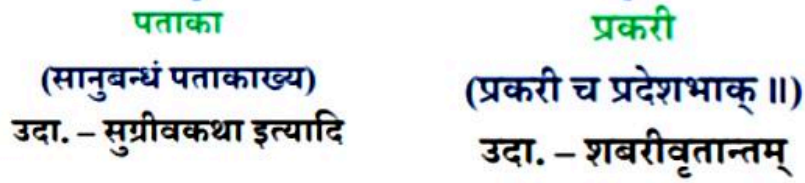


अधिकारी -:

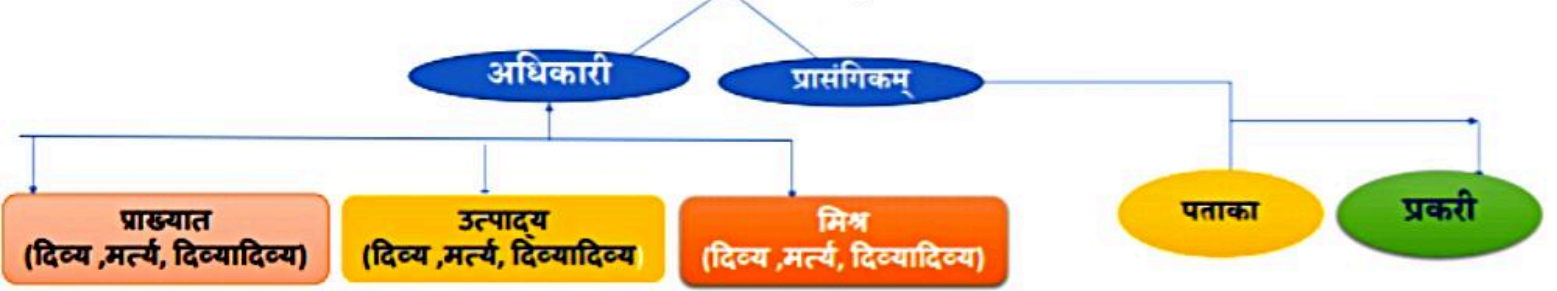
अधिकारः फलस्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः ।
तन्निर्वृत्तमभिव्यापि वृत्तं स्यादाधिकारिकम् ॥



प्रासंगिकम् -:
“प्रासङ्गिकं प्रार्थस्य स्वार्थो यस्य प्रसङ्गतः ॥”



इतिवृत (कथावस्तु)



➤ रूपक के समस्त कथावस्तु की स्थितियों के अनुसार धनञ्जय ने पाँच अर्थप्रकृति, पाँच अवस्था, तथा पाँच सन्धि, तथा उन सन्धियों को ६४ संध्यंगों में विभक्त किया है।



क्र.	अर्थप्रकृतियाँ	कार्यावस्थाएँ	सन्धियाँ	सन्धियों के अङ्ग
१.	बीज	आरम्भः	मुख	१२
२.	बिन्दु	यत्नः	प्रतिमुख	१३
३.	पताका	प्राप्त्याशा	गर्भः	१२
४.	प्रकरी	नियताग्निः	विमर्श	१३
५.	कार्य	फलागमः	उपसंहति	१४



अर्थप्रकृति -:

बीजबिन्दुपताकाख्याप्रकरीकार्यलक्षण :।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एता प्ररिकीर्तिता ॥

१. बीजम् - :

“स्वलपोद्दिष्टस्तु तद्हेतुर्बीजं विस्तार्यनेकधा ॥”

२. बिन्दु -:

“अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुश्छेदकारणम्॥”



३. पताका -:

“व्याप्ति प्रासंगिकं वृत्तं पताकेव्यभिधियते॥”

४. प्रकरी -:

“प्रासंगिकं प्रदेशस्थं चरितं प्रकरीमता ॥”

५. कार्य -:

“अपेक्षितं तु यत् साध्यामारम्भो यन्निबन्धनः।
समापनं तु यत् सिद्ध्ये तत् कार्यं संमतम्॥”



अवस्थाएँ -:

“अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः ।
आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमः॥”

१. आरम्भ -:

“औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभा भूयसे ।”

२. प्रयत्न -:

“प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः ।”

३. प्राप्त्याशा -:

“उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिः सम्भवः ।”

४. नियताप्ति -:

“अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता ।”

५. फलागमः -:

“समग्रफलसंपत्तिः फलभोगो यथोदितः ।
कार्यं त्रिवर्गस्यच्छुद्धमेकानेकानुबन्धि च ॥”

सन्धियाँ -:
“अन्तरैकार्यसम्बन्ध सन्धिरेकान्वये सति ।”



“अर्थप्रकृतयः पञ्च पञ्चावस्थासमान्विताः ।
यथासंख्येन जायन्ते मुखाद्याः पञ्च सन्धयः ॥”

क्र.	अर्थप्रकृतियाँ	अवस्थाएँ	सन्धियाँ
१.	बीज +	प्रारम्भ	मुखसन्धि (१२)
२.	बिन्दु +	प्रयत्न	प्रतिमुख (१३)
३.	पताका+	प्राप्त्याशा	गर्भ (१२)
४.	प्रकरी+	नियताप्ति	अवमर्श (१३)
५.	कार्य+	फलागमः	उपसंहृति (१४)

अर्थोपक्षेपक पाँच होते हैं - :



विष्कम्भ तथा प्रवेशक नाटक में प्रायः प्राप्त होते हैं ।



“त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रुपयौवनात्साही ।
दक्षोऽनुरक्त लोकस्तेजोर्वदग्ध्य शीलवान्नेता ॥”

धीरोदात्त -:

“अविकल्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः।
स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रत कथितः॥”

उदा. राम , दुष्यन्त इत्यादि ।

धीरोद्धत : -

“मायापरः प्रचण्डश्चपलोऽहङ्कारदर्पभूयिष्ठः।
आत्मश्लाघानिरतो धीरैर्धीरोद्धतः कथितः ॥”

उदा. परशुराम , भीमसेन इत्यादि ।

धीरललितः -

“निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात् ॥”

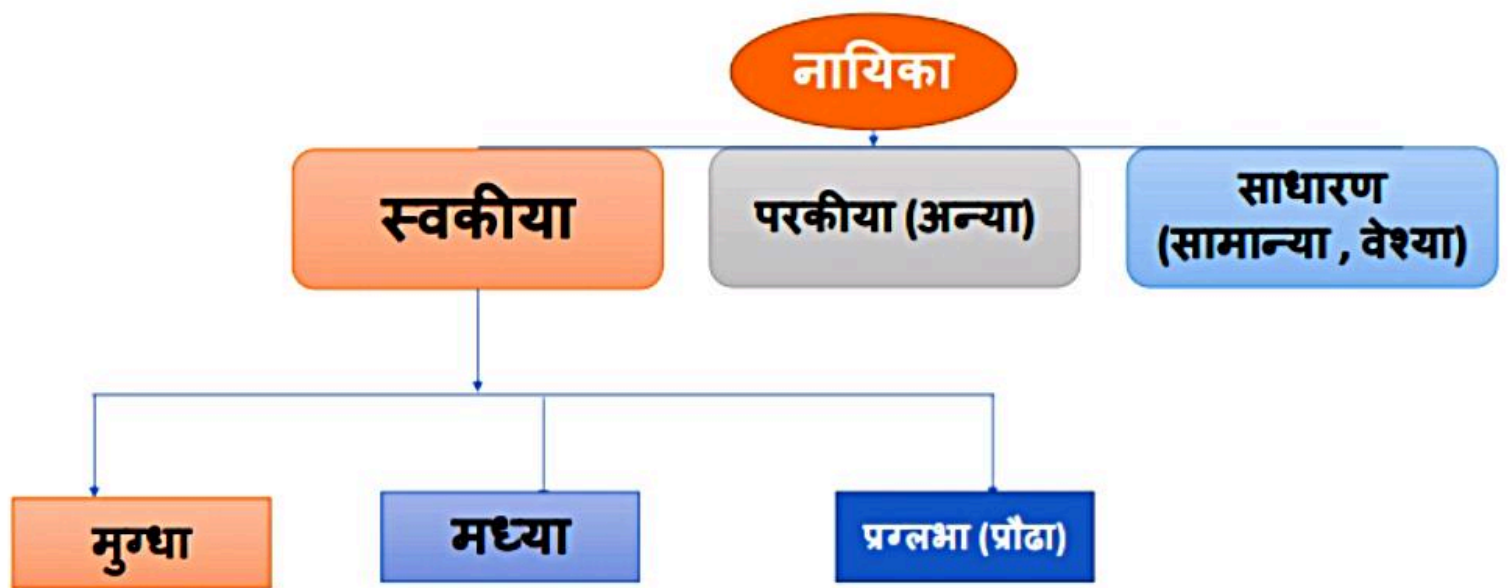
उदा. वत्सराज उदयनः ।

धीरप्रशान्त - :

“सामान्य गुणैर्भूयान् द्विजादिको धीरप्रशान्तः स्यात् ॥”
उदा. जीमूतवाहनः , बूद्धः ।



- नायक का शत्रु प्रतिनायक होता है।
- प्रतिनायक धीतोद्यत्त प्रवृत्ति का होता है।
- नायक का साथी पीठमर्द होता है।
- नायक के सहायक सेनापति , मन्त्री , पुरोहित , विदुषक , विट , आदि होते है ।
- नाटिका मे नायिका की प्राधानता होती है।



कहीं-कहीं नायिका के आठ प्रकार भी बताये गये हैं।

- स्वाधीनपतिका, वासकसज्जा, विरोहोत्कण्ठिता, खण्डिता, कलहान्तरिता, विप्रलब्धा, प्रोषितपतिका, अभिसारिका।

नाटक के लक्षण -:

- नाटक ख्यातवृत्त होना चाहिए।
- नाटक में पाँचों सन्धियाँ होनी चाहिए।
- नाटक में नायक प्रख्यातवंश का राजर्षिधीरोदात्त होना चाहिए।
- अङ्कों की संख्या न्यूनतम (५) तथा अधिकतम (१०) होनी चाहिए।
- नाटक में श्रृङ्गार तथा वीर में से कोई अङ्गीरस की योजना होनी चाहिए।
- निर्वहण सन्धि में अङ्गभूत-रस की योजना होनी चाहिए।
- नाट्यशाला के विध्वंश हेतु सर्वप्रथम पूर्वरङ्ग की योजना होनी चाहिए।
- पूर्वरङ्ग (२२) के होते हैं जिसमें नान्दी सबसे प्रमुख है।

नान्दी - :

“आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते ।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दिति संज्ञिता॥”

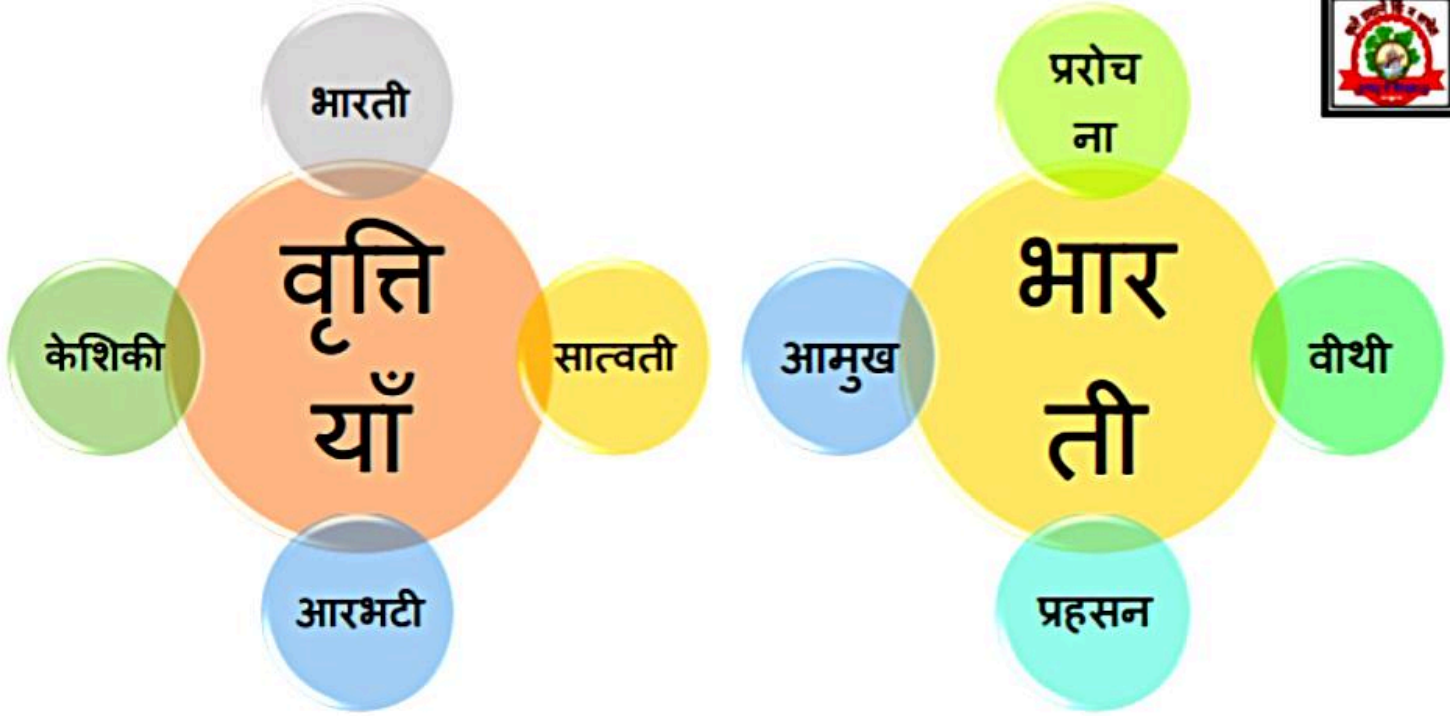
नाटक गोपुच्छ सदृश होता है ।-

“चत्वारः पञ्च वा मुख्याः कार्यव्याप्ततपुरुषाः ।
गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनं तस्य कीर्तितम्॥”

- पञ्च अर्थप्रकृतिः (५)
- पञ्चकार्यावस्था (५)
- ६४ सन्ध्यङ्ग (६४)
- चार वृत्तियाँ (४)
- पञ्चसन्धयः (५)
- २१ सन्ध्यन्तरः (२१)
- ३६ आभूषणम् (३६)
- ९० तान (९०)

क्र.	रूपकम्	अङ्क	नायक	कथावस्तु	रस	सन्धिया	वृत्ति	विशेष	उदाहरण
१	नाटक	५-१०	इतिहास प्रसिद्ध	धीरोदात्त कुलिन, राजा, क्षत्रिय	शृंगार - वीर	पञ्चसन्धि	चारो वृत्तियाँ	गोपुच्छ सदृश	अभिज्ञानशाकुन्तलम् उत्तररामचरितम्
२	प्रकरण	१०	लौकिक एवं कविकल्पित	धीरप्रसान्त ब्राह्मण, मन्त्री, वैश्य	शृंगार	पञ्चसन्धि	चारो वृत्तियाँ	नायिका कुलिन या वेश्या होती है।	मृच्छकटिकम् मालतीमाधवम् पुष्पभुषितम्
३	भाण	१	कविकल्पित	विट/धूर्त धीरोदात्त	वीर-शृंगार	मुख/निर्वहण	भारतीवृत्ति की अधिकता	धूर्तों का चरित्र वर्णन	लीलामधुकरम्
४	प्रहसन	१	कविकल्पित	नीन्दनीय पुरुष	हास्य	मुख/निर्वहण	भारती सात्वती कैशिकी	धूर्तों का चरित्र वर्णन	कन्दर्पकेलि धूर्तचरितम्
५	डिम	४	इतिहास प्रसिद्ध	देव गान्धर्व राक्षस आदि (१६) नायक	रीद्र	मुख/प्रतिमुख/निर्वहण	भारती सात्वती आरभटी	माया, इन्द्रजाल आदि से युक्त	त्रिपुरदाह

क्र.	रूपकम्	अङ्क	नायक	कथावस्तु	रस	सन्धिया	वृत्ति	विशेष	उदाहरण
६	व्यायोग	१	इतिहास प्रसिद्ध	धीरोदात्त	हास्य/शृंगार/शान्त के अतिरिक्त अन्य रस	मुख/प्रतिमुख/निर्वहण	भारती सात्वती आरभटी	प्रख्यात तथा दिव्यपुरुष	मध्यमव्यायोग सौगन्धिकाहरणम्
७	समवकार	३	इतिहास / पुराण प्रसिद्ध	१२ देवता / मानव	वीर	मुख/प्रतिमुख/निर्वहण/गर्भ	भारती सात्वती आरभटी	विमर्शसन्धि का अभाव	समुद्रमन्थनम्
८	वीथी	१	कविकल्पित	साधारण	शृंगार	मुख/निर्वहण	कैशिकीवृत्ति की अधिकता	आकाशभासी	मालविका
९	अङ्क	१	इतिहास प्रसिद्ध	साधारण	करुण	मुख/निर्वहण		स्त्री विलाप की अधिकता	शर्मिष्ठायायाति
१०	ईहामृग	४/१	ऐतिहासिक कविकल्पित	१० देवता / मानव धीरोदात्त	शृंगार	मुख/प्रतिमुख/निर्वहण		दिव्य नायिका कलह	कुसुमशेखरविजयम्







महाकाव्यम्

“सर्गबन्धो महाकाव्यम्”

इसमें धीरोधात्त प्रकार के नायक देवता या कुलीन क्षत्रिय होते हैं। शृंगार, वीर और शांत रस इसमें से कोई भी रस एक अङ्गी हो सकता है। कथावस्तु ऐतिहासिक और लोक प्रसिद्ध होता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से कोई एक फल प्रधान प्रयोजन होता है। कम से कम 8 सर्ग होना चाहिए। प्रति सर्ग की सूचना अंतिम सर्ग में मिल जाती है। महाकाव्य में संध्या, सूर्योदय, सूर्यास्त, रात्रि, अंधकार, वन, समुद्र, प्रातः, सायं, विवाह, पुत्र, शिकार, यात्रा, संग्राम, इत्यादि का प्रमुख वर्णन होता है।

उदाहरण - : किरातार्जुनीयम्, नैषीयचरितम्, रघुवंशम्, शिशुपालवधम्, बुद्धचरितम्, कुमारसंभवम् इत्यादि।



रस

शृंगाररूपास्यककेणशैप्रवीरुभयानकाः ।
बीभत्सोऽद्भुत इत्यसौ रसाः शान्तस्यतथा मतः ॥

परीक्षावर्णा

- (बीभत्साद्भुतशान्ताश्च नैवेदेते रसाः क्रमात्)

स्थायीभाव

- इतिहसिश्च शोकश्च क्रौञ्चोत्साहो भयं तथा ।
जुगुप्सा विस्मयश्चेत्यमर्षो प्रेम्णा शर्मोऽपि च ॥

देवता

- देवाः विष्णुश्च कामश्च यमकपौ शतक्रतुः । (इन्द्र)
कालश्चाप महाकालः गन्धर्वः स्त्रीपतिः क्रमात् ॥
↳ (नारायण)

रसों के वर्ण और वृत्ति

वर्ण

- श्यामः शुक्लः कर्पूरश्च रक्तो ह्रस्व तर्पण च ।
कृष्णो निलश्च पीतश्च कुन्दपुष्पं रसे क्रमात् ॥

वृत्तियाँ

- शृङ्गारे कैशिकी वीरे स्वात्पत्यारम्भाटी पुनः ।
रसे शैत्रे च बीभत्से वृत्तिः सर्वत्र भावनी ॥

रसभेद निरूपणक्रम

	रस	स्थायीभाव	देव	वर्ण	वृत्ति
1.	शृंगार	रति	विष्णु	श्याम	कैशिकी, भारती
2.	हास्य	हास	प्रथम (काम)	शुक्ल	भारती
3.	करुण	शोक	यम	कपोत	भारती
4.	रोद्र	क्रोध	रुद्र	रक्त	आरभटी, भारती
5.	वीर	उत्साह	महिन्द्र	हैमा (सुवर्णवर्ण)	सात्वती, भारती
6.	भयानक	भय	यम (काल)	कृष्ण	भारती
7.	विभत्स	दुर्गुप्सा	महाकाल	नील	आरभटी, भारती
8.	अद्भूत	विस्मय	गन्धर्व	पीत	भारती
9.	शान्त	शम	श्रीनारायण	कुन्दपुष्पवत्	भारती

छन्द-सूची

छन्द	वर्णxपाद=कुल वर्ण	गण	लक्षण	यति
अनुष्टुप्	8x4=32	—	श्लोके पाठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र तद्यु पञ्चमम् । द्विचतुष्पादयोर्द्वयं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥	—
इन्द्रवज्रा	11x4=44	त त ज ग ग	स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः	—
उपेन्द्रवज्रा	11x4=44	ज त ज ग ग	उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ	—
उपजाति	11x4=44	उपर्युक्त दोनों	अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः	—
शालिनी	11x4=44	म त त ग ग	शालिन्युक्ता म्ताौ तगौ गोऽव्यितोक्तैः	अव्यि-४ लोक-७
वंशस्थ	12x4=48	ज त ज र	जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ	—
द्रुतवितम्बित	12x4=48	न भ भ र	द्रुतवितम्बितमाह नभौ भरौ	—
वसन्ततिलका	14x4=56	त भ ज ज ग ग	उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः	—
मालिनी	15x4=60	न न म य य	ननमयययुतेयं मालिनी भोगितोक्तैः	भोगि-८, लोक-७
शिखरिणी	17x4=68	य म न स भ त ग	रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभता गः शिखरिणी	रस-६, रुद्र-११
मन्दाक्रान्ता	17x4=68	म भ न त त ग ग	मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्गौ भनौ तौ गयुग्मम्	अम्बुधि - ४, रस-६, नग-७
हरिणी	17x4=68	न स म र स त ग	रसयुगहयैर्नसौ म्रौ स्तौ गो यदा हरिणी तदा	रस-६, युग- ४, हय-७
शार्दूलविक्रीडित	19x4=76	म स ज स त त ग	सूर्याश्वैर्यदिमः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्	सूर्य - १२, अश्व - ७
स्रग्धरा	21x4=84	म र भ न य य य	म्रभनैर्यानां त्रयेण त्रिमुनयतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्	मुनि - ७, मुनि - ७, मुनि - ७
आर्या	१२+१८+१२+१७ मात्रा	यह मात्रिक छन्द है गण नहीं होता	यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि । अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽर्या	—